# आर्थिक गतिविधि अध्ययन

(एकीकृत)

## अर्ध-वार्षिक प्रतिवेदन

(आ.व.२०८१/८२)





नेपाल राष्ट्र बैंक

आर्थिक अनुसन्धान विभाग

२०८२ असार

# प्राक्कथन

नेपाल राष्ट्र बैंकले आर्थिक, मौद्रिक र वित्तीय क्षेत्रसँग सम्बन्धित विषयहरुमा तथ्याङ्क सङ्कलन, प्रशोधन र विश्लेषण गर्दै आवश्यकता अनुसार अध्ययन प्रतिवेदनहरु प्रकाशन गर्दै आएको छ। यसै क्रममा अर्थतन्त्रको वास्तविक क्षेत्रसँग सम्बन्धित तथ्यगत विवरण प्रकाशनमा ल्याउने उद्देश्यले आर्थिक गतिविधि अध्ययन प्रतिवेदन नियमित रुपमा प्रकाशन हुने गरेको छ।

आर्थिक गतिविधि तथा विशेष अध्ययन मार्गदर्शन, २०७६ (प्रथम संशोधन २०७९) मा भएको व्यवस्थाअनुसार प्रत्येक आर्थिक वर्षको साउन महिनादेखि पुससम्मको अर्धवार्षिक प्रतिवेदन र आर्थिक वर्ष समाप्तिपश्चात् वार्षिक आर्थिक गतिविधि अध्ययन प्रतिवेदन प्रदेशगत रुपमा तर्जुमा गर्नुपर्ने व्यवस्था रहेको छ। यसरी तयार हुने प्रतिवेदनमा कृषि, उद्योग र सेवा क्षेत्रसँग सम्बन्धित आर्थिक गतिविधिको स्थिति र परिदृश्य समेत समावेश हुने गरेको छ। चालु आर्थिक वर्ष २०८१/८२ को साउनदेखि पुससम्मको सबै प्रदेशहरुको अर्ध-वार्षिक आर्थिक गतिविधि अध्ययन प्रतिवेदन प्रकाशन भईसकेको छ। उक्त प्रतिवेदनहरुका आधारमा प्रस्तुत एकीकृत अर्ध-वार्षिक आर्थिक गतिविधि अध्ययन प्रतिवेदन तर्जुमा गरिएको छ।

यस अध्ययन प्रतिवेदन अनुसार अघिल्लो वर्षको तुलनामा आर्थिक वर्ष २०८१/८२ को पहिलो ६ महिनामा आर्थिक गतिविधिमा क्रमिक सुधार आएको छ। अघिल्ला दुई वर्षहरुमा लगातार संकुचनमा रहेका निर्माण, थोक तथा खुद्रा व्यापार र औद्योगिक उत्पादन समेत यस अवधिमा विस्तार भई अर्थतन्त्रका सबैजसो क्षेत्र र उपक्षेत्रहरु विस्तार हुने अनुमान छ। यस अवधिमा कृषि तर्फ खाद्य बालीको उत्पादन सामान्य घटेतापनि अन्य वालीहरुको उत्पादन बढेको छ। औद्योगिक गतिविधि बढ्न थालेको छ। बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरुको कर्जा विस्तार वृद्धिदर अघिल्लो वर्षको सोही अवधिको तुलनामा बढेको छ। त्यसैगरी, सेवा क्षेत्रमा विदेशी पर्यटकको आगमन र वैदेशिक रोजगारीमा जानेको संख्या बढेको छ।

प्रस्तुत अध्ययन प्रतिवेदन नेपाल सरकार, प्रदेश सरकार लगायत अन्य सरोकारवालालाई उपयोगी हुने विश्वास लिएको छु। प्रतिवेदन तयार पार्न आवश्यक सूचना, विवरण तथा तथ्याङ्क उपलब्ध गराउनु हुने सरकारी तथा निजी क्षेत्रका कार्यालय एवम् संस्थाहरु तथा तथ्याङ्क सङ्कलनमा समन्वय गर्न सहयोग पुऱ्याउनु हुने यस बैंकका प्रदेशस्थित कार्यालयप्रति आभार प्रकट गर्दछु। प्रतिवेदन तर्जुमा गर्ने कार्यको संयोजन गर्नुहुने यस विभागका निर्देशक श्री बुद्ध राज शर्मालाई विशेष धन्यवाद दिन चाहन्छु। यसैगरी, प्रतिवेदन तयार पार्न संलग्न हुनुहुने आर्थिक विकास महाशाखाका उप-निर्देशकहरु श्री सजना शिल्पकार र श्री जय नारायण प्रधान, सहायक निर्देशकहरु श्री सबिन थापा, श्री रोशन सेढाई, श्री कुशल ढकाल, श्री शिखा पोखेल, श्री रामकृष्ण आचार्य र अधिकृत (कम्प्युटर) श्री राम कुमार थापालाई धन्यवाद दिन चाहन्छु।

**डा. राम शरण खरेल**
कार्यकारी निर्देशक

# विषय-सूची


| शीर्षक | | | पेज नं. |
|---|---|---|---|
| आवरण पृष्ठ | | | |
| प्राक्कथन | | | (क) |
| विषय सूची | | | (ख) |
| तालिका सूची | | | (घ) |
| चार्ट सूची | | | (च) |
| सारांश | | | (छ) |
| परिच्छेद १: | **अध्ययन परिचय** | | १ |
| | १.१ | पृष्ठभूमि | १ |
| | १.२ | प्रतिवेदन तर्जुमा विधि, संरचना र तथ्याङ्क सङ्कलन | १ |
| | १.३ | अध्ययनको सीमा | २ |
| | १.४ | अध्ययन प्रतिवेदनको ढाँचा | २ |
| परिच्छेद २: | **अन्तर्राष्ट्रिय तथा राष्ट्रिय आर्थिक स्थिति** | | ३ |
| परिच्छेद ३: | **कृषि क्षेत्र** | | ६-१६ |
| | ३.१ | कृषि उपजले ढाकेको भू-क्षेत्र | ६ |
| | ३.२ | कृषि उत्पादन | ७ |
| | ३.३ | पशुपन्छी, माछा तथा वनजन्य उत्पादन | ९ |
| | ३.४ | सिँचाई | ११ |
| | ३.५ | क्षेत्रगत कृषि कर्जा | ११ |
| | ३.६ | कृषि क्षेत्रका चुनौती र सम्भावना | १२ |
| परिच्छेद ४: | **उद्योग क्षेत्र** | | १७-२५ |
| | ४.१ | प्रदेश अनुसार उद्योगको विवरण | १७ |
| | ४.२ | उद्योगको क्षमता उपयोग र उत्पादन | १७ |
| | ४.३ | क्षेत्रगत औद्योगिक कर्जा | १८ |
| | ४.४ | औद्योगिक क्षेत्रका चुनौती र सम्भावना | २० |
| परिच्छेद ५: | **सेवा क्षेत्र** | | २६-३५ |
| | ५.१ | पर्यटन | २६ |
| | ५.२ | सार्वजनिक निर्माण तथा रियलस्टेट | २७ |
| | ५.३ | वित्तीय सेवा | २८ |
| | ५.४ | सेवा क्षेत्र कर्जा | २९ |
| | ५.५ | यातायात | ३० |
| | ५.६ | विपन्न वर्ग कर्जा | ३० |
| | ५.७ | सहकारी क्षेत्र | ३१ |
| | ५.८ | सेवा क्षेत्रका चुनौती र सम्भावना | ३२ |
| परिच्छेद ६: | **पूर्वाधार क्षेत्र** | | ३६-४२ |
| | ६.१ | पूर्वाधार स्थिति | ३६ |
| | ६.२ | पूर्वाधार क्षेत्रका चुनौती र सम्भावना | ३९ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| **परिच्छेद ७:** | **बाह्य क्षेत्र र रोजगारी** | | ४३–४८ |
| | ७.१ | वैदेशिक व्यापार | ४३ |
| | ७.२ | रोजगारी | ४५ |
| | ७.३ | बाह्य क्षेत्र र रोजगारीका सम्बन्धमा रहेका चुनौती र सम्भावना | ४७ |
| **परिच्छेद ८:** | **संघीय एवम् प्रादेशिक कार्यक्रम तथा योजना** | | ४९–५७ |
| | ८.१ | कार्यक्रम तथा परियोजनाको कार्यान्वयन | ४९ |
| | ८.२ | प्रदेशगत रुपमा कार्यान्वयन भएका कार्यक्रमहरु | ५० |
| **परिच्छेद ९:** | **आर्थिक परिदृश्य** | | ५८–५९ |

# तालिकाहरुको सूची


| तालिका नं. | शीर्षक | पेज नं. |
|---|---|---|
| तालिका २.१ | विश्वको आर्थिक वृद्धिदर | ३ |
| तालिका २.२ | नेपालीहरुको वैदेशिक रोजगारको प्रमुख गन्तव्य मुलुकहरुको आर्थिक वृद्धिदर | ३ |
| तालिका २.३ | दक्षिण एशियाली देशहरुको आर्थिक वृद्धिदर | ४ |
| तालिका २.४ | विश्वको मुद्रास्फीति (उपभोक्ता मूल्यमा आधारित, प्रतिशत) | ४ |
| तालिका २.५ | दक्षिण एशियाली मुलुक तथा चीनको मुद्रास्फीति (उपभोक्ता मूल्यमा आधारित, प्रतिशत) | ५ |
| तालिका २.६ | प्रादेशिक आर्थिक परिसूचकहरु (आ.व. २०८१/८२) | ५ |
| तालिका ३.१ | कृषि उपजले ढाकेको भू-क्षेत्र | ७ |
| तालिका ३.२ | धान बालीको उत्पादन | ८ |
| तालिका ३.३ | कृषि बालीको उत्पादन | ९ |
| तालिका ३.४ | प्रमुख पशुपन्छी तथा माछा उत्पादन | १० |
| तालिका ३.५ | सिञ्चित क्षेत्रफलमा प्रदेशगत हिस्सा | ११ |
| तालिका ३.६ | कृषि क्षेत्रका प्रदेशगत चुनौतीहरु | १२ |
| तालिका ३.७ | कृषि क्षेत्रका प्रदेशगत सम्भावनाहरु | १४ |
| तालिका ४.१ | आर्थिक वर्ष २०८१/८२ को प्रथम छ महिनामा उद्योग विभागमा दर्ता भएका उद्योगको विवरण | १७ |
| तालिका ४.२ | प्रदेशगत औद्योगिक कर्जा | १९ |
| तालिका ४.३ | उद्योग क्षेत्रका प्रदेशगत चुनौतीहरु | २० |
| तालिका ४.४ | उद्योग क्षेत्रका प्रदेशगत सम्भावनाहरु | २३ |
| तालिका ५.१ | होटलहरुको औसत क्षमता उपयोग | २६ |
| तालिका ५.२ | सार्वजनिक निर्माण तथा रियलस्टेट | २७ |
| तालिका ५.३ | निक्षेप तथा कर्जा स्थिति | २९ |
| तालिका ५.४ | सेवा क्षेत्रमा प्रवाहित कर्जाको स्थिति | २९ |
| तालिका ५.५ | प्रदेशगत सेवा क्षेत्र कर्जा | ३० |
| तालिका ५.६ | प्रदेशगत विपन्न वर्ग कर्जाको स्थिति | ३० |
| तालिका ५.७ | न्मुना छनोटमा परेका वचत तथा ऋण सहकारी संस्थाको विवरण | ३१ |
| तालिका ५.८ | सेवा क्षेत्रका प्रदेशगत चुनौतीहरु | ३२ |
| तालिका ५.९ | सेवा क्षेत्रका प्रदेशगत सम्भावनाहरु | ३३ |
| तालिका ६.१ | आर्थिक वर्ष २०७०/७१ देखि २०८०/८१ सम्मको सडक निर्माण विवरण | ३६ |
| तालिका ६.२ | सडकतर्फ आ.व. २०८१/८२ को पुस मसान्तसम्मको विवरण | ३७ |
| तालिका ६.३ | पूर्वाधार क्षेत्रका प्रदेशगत चुनौतीहरु | ३९ |
| तालिका ६.४ | पूर्वाधार क्षेत्रका प्रदेशगत सम्भावनाहरु | ४१ |

| | | |
|---|---|---|
| तालिका ७.१ | आर्थिक वर्ष २०८१/८२ को प्रथम छ महिनाको नेपालको आयात निर्यात स्थिति | ४३ |
| तालिका ७.२ | आर्थिक वर्ष २०८१/२०८२ को प्रथम छ महिनाको भन्सार बिन्दुको आधारमा वैदेशिक व्यापारको प्रदेशगत स्थिति | ४४ |
| तालिका ७.३ | प्रदेशगत आधारमा निर्यात सम्भावना भएका वस्तुहरु | ४४ |
| तालिका ७.४ | २०८१ पुस मसान्तसम्मको प्रधानमन्त्री रोजगार कार्यक्रमसम्बन्धी विवरण | ४५ |
| तालिका ७.५ | आर्थिक वर्ष २०८१/२०८२ पुस मसान्तसम्ममा जारी श्रम स्वीकृतिको प्रदेशगत विवरण | ४६ |
| तालिका ७.६ | वैदेशिक रोजगारीको लागि प्रमुख गन्तव्यको विवरण | ४६ |
| तालिका ८.१ | आर्थिक वर्ष २०८१/८२ को संघीय बजेटको अर्ध-वार्षिक प्रगति विवरण | ४९ |
| तालिका ८.२ | आर्थिक वर्ष २०८१/८२ को राजस्व सङ्कलनको अर्ध-वार्षिक प्रगति विवरण | ४९ |
| तालिका ८.३ | आर्थिक वर्ष २०८१/८२ को प्रदेशगत बजेटको अर्ध-वार्षिक प्रगति विवरण | ५० |

# चार्टहरुको सूची


| चार्ट नं. | शीर्षक | पेज नं. |
|---|---|---|
| चार्ट ३.१ | प्रमुख खाद्यन्न बालीले ढाकेको क्षेत्रफल (हेक्टरमा) | ६ |
| चार्ट ३.२ | प्रमुख कृषि बालीको उत्पादन (मे. टनमा) | ७ |
| चार्ट ३.३ | प्रदेशगत दूध, मासु, अण्डा र माछा उत्पादन हिस्सा | १० |
| चार्ट ३.४ | सिँचाई क्षेत्रफलमा भएको विस्तार (हेक्टरमा) | ११ |
| चार्ट ३.५ | कृषि कर्जाको प्रदेशगत हिस्सा | १२ |
| चार्ट ४.१ | प्रदेशगत क्षमता उपयोग (प्रतिशतमा) | १८ |
| चार्ट ४.२ | औद्योगिक कर्जा लगानी स्थिति (रु.दश लाखमा) | १९ |
| चार्ट ४.३ | औद्योगिक कर्जामा प्रदेशगत हिस्सा | २० |
| चार्ट ५.१ | पर्यटक आगमन संख्या | २६ |
| चार्ट ५.२ | बैंक तथा वित्तीय संस्थाका शाखा संख्या | २८ |
| चार्ट ५.३ | निक्षेप तथा कर्जा स्थिति (रु.दश लाखमा) | २८ |

# सारांश

## अन्तर्राष्ट्रिय स्थिति

१. अन्तर्राष्ट्रिय मुद्रा कोष (IMF) द्वारा अप्रिल २०२५ मा अद्यावधिक गरिएको World Economic Outlook (WEO) अनुसार सन् २०२४ मा ३.३ प्रतिशतले विस्तार भएको विश्व अर्थतन्त्र सन् २०२५ मा २.८ प्रतिशतले मात्र वृद्धि हुने प्रक्षेपण छ ।

२. विश्वका विकसित मुलुकहरूको मुद्रास्फीति दर सन् २०२४ मा २.६ प्रतिशत रहेकोमा सन् २०२५ मा २.५ प्रतिशत रहने प्रक्षेपण छ । त्यसैगरी, उदीयमान तथा विकासशील मुलुकहरूको मुद्रास्फीति दर सन् २०२४ मा ७.७ प्रतिशत रहेकोमा सन् २०२५ मा ५.५ प्रतिशत रहने कोषको प्रक्षेपण छ ।

## आर्थिक वृद्धि

३. राष्ट्रिय तथ्याङ्क कार्यालयको प्रारम्भिक तथ्याङ्क अनुसार आर्थिक वर्ष २०८१/८२ मा नेपालको आर्थिक वृद्धिदर उपभोक्ताको मूल्यमा ४.६ प्रतिशत रहने प्रारम्भिक अनुमान छ । गत आर्थिक वर्ष २०८०/८१ मा नेपालको आर्थिक वृद्धिदर ३.७ प्रतिशत रहने संशोधित अनुमान रहेको छ ।

४. आर्थिक वर्ष २०८१/८२ को कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा प्राथमिक, द्वितीय तथा सेवा क्षेत्रको योगदान क्रमशः २५.६ प्रतिशत, १२.४ प्रतिशत र ६२.० प्रतिशत रहने प्रारम्भिक अनुमान छ ।

## कृषि

५. समीक्षा अवधिमा खाद्य तथा अन्य बालीको उत्पादन ०.९७ प्रतिशतले घटेको छ । तरकारी तथा बागबानीको उत्पादन ५.७५ प्रतिशतले वृद्धि भएको छ । फलफूलको उत्पादनमा ४.८१ प्रतिशतले वृद्धि भएको छ भने मसलाको उत्पादनमा १०.२० प्रतिशतले ह्रास आएको छ ।

६. पशुजन्य उत्पादन अन्तर्गत दूध उत्पादन २.८६ प्रतिशत र मासु उत्पादन २.३० प्रतिशतले वृद्धि भएको छ । त्यसैगरी, समीक्षा अवधिमा अण्डा उत्पादन १.०४ प्रतिशतले बढेको छ । वनजन्य उत्पादन अन्तर्गत दाउरा उत्पादन १०.७२ प्रतिशतले र औषधीजन्य वस्तुको उत्पादन १०.२९ प्रतिशतले बढेको छ ।

## उद्योग

७. समीक्षा अवधिमा उद्योगको क्षमता उपयोग औसतमा ४१.११ प्रतिशत रहेको छ ।

८. २०८१ पुस मसान्तसम्म बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरुले प्रवाह गरेको कुल कर्जामा औद्योगिक क्षेत्रमा प्रवाह भएको कर्जाको अंश ३०.३१ प्रतिशत रहेको छ ।

## सेवा

९. आर्थिक वर्ष २०८१/८२ को साउनदेखि पुससम्म ६ महिना अवधिमा ५ लाख ७९ हजार ९ सय ४३ जना पर्यटकले नेपाल भ्रमण गरेका छन् ।

१०. घरजग्गा रजिष्ट्रेसन संख्या ६.२६ प्रतिशतले घटेर २ लाख २३ हजार १ सय ४६ कायम भएको छ । घरजग्गा रजिष्ट्रेशनबाट प्राप्त हुने राजस्व २.९३ प्रतिशतले बढेर रु.१० अर्ब ३९ करोड ७ लाख पुगेको छ । घर/भवन स्थायी नक्सा पास संख्या ४.९१ प्रतिशतले घटेर १४ हजार ९ सय ९२ पुगेको छ ।

११. २०८० पुस मसान्तको तुलनामा २०८१ पुस मसान्तमा बैंक तथा वित्तीय संस्थाको निक्षेप ९.०३ प्रतिशतले वृद्धि भएको छ भने कर्जा प्रवाह १५.९८ प्रतिशतले वृद्धि भएको छ ।

१२. बैंक तथा वित्तीय संस्थाको कुल निक्षेप र कर्जामा बागमती प्रदेशको अंश क्रमशः ६६.९६ प्रतिशत र ५९.३० प्रतिशत रहेको छ। निक्षेप र कर्जामा कर्णाली प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा कम क्रमशः १.११ प्रतिशत र १.०९ प्रतिशत रहेको छ।

१३. २०८० पुस मसान्तको तुलनामा २०८१ पुस मसान्तसम्ममा दर्ता भएका कुल सवारी साधनको संख्या ७.७८ प्रतिशतले वृद्धि भएको छ।

१४. समीक्षा अवधिमा छनोटमा परेका सहकारी संस्थाहरूको कुल पुँजी ९.९८ प्रतिशतले बढेको छ। उक्त सहकारीहरुको कुल बचत ९.४३ प्रतिशतले बढेको छ भने कुल कर्जा १०.२७ प्रतिशतले घटेको छ।

## पूर्वाधार

१५. आर्थिक वर्ष २०८१/८२ को साउनदेखि पुस मसान्तसम्ममा नयाँ २ लेनको कालोपत्रे स्तरको सडक २४६ कि.मि., २ लेन भन्दा माथिको कालोपत्रे स्तरको सडक ४६ कि.मि. र माटे सडक ८४ कि.मि. निर्माण सम्पन्न भएको छ। त्यसैगरी, आवधिक मर्मततर्फ १३९ कि.मि. सडकको मर्मत सम्भार भइसकेको र ४१ वटा पुलको निर्माण सम्पन्न भएको छ। समीक्षा अवधि सम्ममा ७७ वटै जिल्लामा यातायात सञ्जालको पहुँच पुगेको छ भने कुल ८० वटा राजमार्गहरुको कुल लम्बाई १४ हजार ९ सय १३ कि.मि. रहेको छ।

# परिच्छेद १
# अध्ययन परिचय

## १.१ पृष्ठभूमि

नेपाल राष्ट्र बैंकले आर्थिक, वित्तीय र मौद्रिक नीति निर्माणको लागि आवश्यक सहयोग पुऱ्याउने उद्देश्यले मूल्य स्थिति, शोधनान्तर स्थिति, समष्टिगत अर्थतन्त्र, वित्तीय बजारको अवस्था, कर्जा विस्तार तथा विदेशी विनिमयजस्ता विषयमा तथ्याङ्क सङ्कलन, प्रशोधन गरी विभिन्न प्रकारका तथ्यपरक अध्ययन प्रतिवेदन सार्वजनिक गर्दै आएको छ । यसै क्रममा बैंकले मुलुकको वास्तविक क्षेत्रको स्थितिको विश्लेषण, सम्भावना र चुनौतीको पहिचान र सम्बन्धित क्षेत्रको परिदृश्य समेत समावेश हुने आर्थिक गतिविधि अध्ययन प्रतिवेदन प्रकाशन गर्दै आएको छ ।

वास्तविक क्षेत्रको तथ्याङ्कको महत्वलाई दृष्टिगत गरी नेपाल राष्ट्र बैंकले वि.सं.२०२५ देखि नै उपत्यका बाहिर रहेका शाखा तथा उपशाखा कार्यालयमा सम्वाददाता फाँटको व्यवस्था गरी आर्थिक गतिविधिसँग सम्बन्धित सूचना एवं तथ्याङ्क सङ्कलन हुने गरेको थियो । उक्त फाँटले स्थानीय आर्थिक गतिविधिको जानकारी तोकिएको ढाँचामा समय-समयमा अनुसन्धान विभागमा पठाउने व्यवस्था थियो । वि.सं. २०३२ मा कार्य निर्देशिका जारी गरी सम्वाददाता फाँटलाई क्षेत्रीय अनुसन्धान केन्द्रमा परिणत गरियो । तत्पश्चात् क्षेत्रीय अनुसन्धान केन्द्रबाट आर्थिक गतिविधिसम्बन्धी अध्ययन हुने गरेकोमा वि.सं.२०४९ देखि उपत्यका बाहिरका कार्यालयमा बैंकिङ विकास तथा अनुसन्धान ईकाइको व्यवस्था गरी क्षेत्रीयस्तरमा सोही ईकाइमार्फत तथा काठमाडौं उपत्यका एवम् आसपासका क्षेत्रमा आर्थिक अनुसन्धान विभाग, आर्थिक विकास महाशाखामार्फत् आर्थिक गतिविधिको अध्ययन कार्य नियमितरुपमा हुँदै आएको थियो ।

आर्थिक वर्ष २०६७/६८ देखि "नेपाल राष्ट्र बैंकका उपत्यका बाहिरका कार्यालयद्वारा सम्पादन गरिने अध्ययन-अनुसन्धान कार्यसम्बन्धी मार्गदर्शन, २०६७" अनुरुप देशका ४१ जिल्ला समेटी आर्थिक गतिविधि अध्ययन प्रतिवेदन तयार गर्ने गरिएकोमा आर्थिक वर्ष २०७०/७१ देखि देशका ४७ जिल्ला समेटी आर्थिक गतिविधि अध्ययन प्रतिवेदन तयार गर्न थालिएको थियो । आर्थिक वर्ष २०७३/७४ देखि १० जिल्ला थप गरी ५७ जिल्लाको आर्थिक गतिविधि अध्ययन प्रतिवेदन तयार पार्ने गरिएको थियो ।

नेपालको संविधान, २०७२ जारी भएसँगै मुलुक संघीय संरचनामा रुपान्तर भएपश्चात् प्रदेश र स्थानीय तहलाई समेत नीति निर्माणमा सहयोग पुऱ्याउने उद्देश्यले आर्थिक वर्ष २०७६/७७ देखि देशका ७ वटै प्रदेशका ७७ जिल्लालाई समावेश गरी एकीकृत र प्रादेशिक आर्थिक गतिविधि अध्ययन प्रतिवेदनहरु बर्षिक र अर्ध-बार्षिक रुपमा तयार गर्ने गरिएको छ । यसै सन्दर्भमा आर्थिक वर्ष २०८१/८२ को साउनदेखि पुस मसान्तसम्म (अर्ध-वार्षिक) को तथ्याङ्कमा आधारित भई यो आर्थिक गतिविधि अध्ययन (एकीकृत) तयार गरिएको छ ।

यस अध्ययनको उद्देश्य संघीय संरचना अनुसार तीन तहको सरकार रहने संवैधानिक व्यवस्था बमोजिम प्रादेशिक संरचना अनुसार आर्थिक गतिविधि अध्ययन/विश्लेषण गर्ने रहेको छ । साथै, विभिन्न आर्थिक क्षेत्रहरुको स्थिति र यसमा भइरहेको परिवर्तनहरुलाई विश्लेषण गर्ने समेत यस अध्ययनको उद्देश्य रहेको छ ।

## १.२ प्रतिवेदन तर्जुमा विधि, संरचना र तथ्याङ्क सङ्कलन

आर्थिक वर्ष २०८१/८२ को पहिलो ६ महिनामा मुलुकको समग्र आर्थिक स्थिति सहित कृषि, उद्योग, सेवा र पूर्वाधार क्षेत्रमा हासिल भएको प्रगति तथा आगामी अवधिको आर्थिक परिदृश्य यो प्रतिवेदनमा समावेश

गरिएको छ। प्रतिवेदनमा कृषि, उद्योग, सेवा र पूर्वाधार क्षेत्रमा देखिएका सम्भावना र समस्या एवम् चुतौतिहरुका बारेमा संक्षिप्त विश्लेषण गरिएको छ। यसका अतिरिक्त समीक्षा अवधिको स्थिति र आगामी ६ महिना अवधिको अनुमानको आधारमा प्रदेशको कृषि, उद्योग, सेवा र पूर्वाधार क्षेत्रको परिदृष्य समेत प्रतिवेदनमा समावेश गरिएको छ।

आर्थिक गतिविधि अध्ययन प्रतिवेदन तयार गर्नका लागि आवश्यक पर्ने तथ्याङ्क तथा सूचना स्थलगत भ्रमण गरी सङ्कलन गरिएको छ। कृषिसम्बन्धी तथ्याङ्क संघीय कृषि तथा पशुपन्छी विकास मन्त्रालय, प्रादेशिक भूमि व्यवस्था, कृषि तथा सहकारी मन्त्रालय एवम् मातहतका निर्देशनालय, कृषि ज्ञान केन्द्र, भेटेरिनरी अस्पताल तथा पशु सेवा विज्ञ केन्द्रबाट सङ्कलन गरिएको छ। उद्योगको तथ्याङ्क नमुना छनौटमा परेका उद्योगहरुबाट स्थलगत भ्रमण तथा विद्युतीय माध्यमबाट, बैंकिङ तथ्याङ्क सुपरिवेक्षकीय सूचना प्रणालीबाट सङ्कलन गरिएको छ।

साथै, पर्यटनसँग सम्बन्धित तथ्याङ्क पर्यटन विभाग, नेपाल पर्यटन बोर्ड, होटल व्यवसायी संघबाट, घरजग्गा नक्सापाससम्बन्धी तथ्याङ्क नगरपालिकाहरुबाट, पूर्वाधारसम्बन्धी तथ्याङ्क आर्थिक पूर्वाधार कार्यालय, राष्ट्रिय योजना आयोग, अर्थमन्त्रालयबाट सङ्कलन गरिएको छ। स्थानीय सरकार, बैंक तथा वित्तीय संस्था एवम् अन्य निजी/सार्वजनिक निकायबाट द्वितीय तथ्याङ्क सङ्कलन गरिएको छ। तथ्याङ्क तथा सूचना सङ्कलनको लागि इमेल, वेवसाइट तथा टेलिफोनलगायतका विद्युतीय माध्यमको प्रयोग गरिएको छ। पूर्वाधार, संघीय आयोजना, परियोजना तथा कार्यक्रमलगायतका तथ्याङ्क आर्थिक सर्वेक्षणबाट समेत लिइएको छ। समीक्षा अवधि, गत अवधि र दुई वर्ष अघिको तथ्याङ्क सङ्कलन गरी समीक्षा अवधि र गत अवधिको प्रतिशत परिवर्तनको आधारमा तथ्याङ्क विश्लेषण गरिएको छ।

## १.३ अध्ययनको सीमा

अधिकांश जिल्लाहरुबाट तथ्याङ्क स्थलगत सर्वेक्षणका क्रममा सम्बन्धित निकायमा सम्पर्क गरी सङ्कलन गरिएको र सोही आधारमा एकीकृत गरिएकोले कृषि उत्पादन, सिँचाई, पूर्वाधार लगायतका तथ्याङ्क देशको समग्र तथ्याङ्कसँग केही फरक पर्न गएका छन्। देश संघीय संरचनामा गएपश्चात् कृषि, पूर्वाधार लगायतका तथ्याङ्कलाई व्यवस्थित गर्ने कार्य जारी रहेकाले यससम्बन्धी तथ्याङ्क पूर्णरुपमा सङ्कलन गर्न कठिनाई भएको स्थिति छ। यसर्थ, तीनै तहका सरकारी कार्यालयहरुले तथ्याङ्क सङ्कलन र व्यवस्थापनलाई प्राथमिकतामा राख्नुपर्ने आवश्यकता छ। कतिपय निजी उद्योग तथा प्रतिष्ठानहरुले पनि तथ्याङ्क उपलब्ध गराउन हिच्किचाउने, समयमा नै उपलब्ध नगराउने र अपूर्ण तथ्याङ्क उपलब्ध गराउने प्रवृत्ति रहेको कारण यथार्थ आर्थिक अवस्थाको बारेमा समयमा नै उजागर गर्न कठिनाई हुने गरेको स्थिति छ।

## १.४ अध्ययन प्रतिवेदनको ढाँचा

प्रतिवेदन नेपाल राष्ट्र बैंक आर्थिक गतिविधि तथा विशेष अध्ययन मार्गदर्शन, २०७६ (प्रथम संशोधन, २०७९ समेत) बमोजिम तयार पारिएको छ। अध्ययनलाई ९ वटा परिच्छेदमा प्रस्तुत गरिएको छ। परिच्छेद १ मा अध्ययनको परिचय, परिच्छेद २ मा अन्तर्राष्ट्रिय आर्थिक स्थिति प्रस्तुत गरिएको छ। त्यसैगरी, परिच्छेद ३ मा कृषि, परिच्छेद ४ मा उद्योग, परिच्छेद ५ मा सेवा, परिच्छेद ६ मा पूर्वाधार र परिच्छेद ७ मा वाह्य क्षेत्र र रोजगारीसँग सम्बन्धित तथ्याङ्क तथा विवरण प्रस्तुत गरिएको छ। परिच्छेद ८ मा संघीय एवम् प्रादेशिक योजना तथा कार्यक्रम र परिच्छेद ९ मा आर्थिक परिदृष्य प्रस्तुत गरिएको छ।

परिच्छेद २

# अन्तर्राष्ट्रिय तथा राष्ट्रिय आर्थिक स्थिति

## २.१ विश्व आर्थिक स्थिति

२.१.१. विश्व अर्थतन्त्रको आर्थिक वृद्धिदर सुस्त र घट्दो अवस्थामा रहेको छ। अन्तर्राष्ट्रिय मुद्रा कोष (IMF) द्वारा अप्रिल २०२५ मा अद्यावधिक गरिएको World Economic Outlook (WEO) अनुसार सन् २०२४ मा ३.३ प्रतिशतले विस्तार भएको विश्व अर्थतन्त्र सन् २०२५ मा २.८ प्रतिशतले मात्र वृद्धि हुने प्रक्षेपण छ। सन् २०२४ मा १.८ प्रतिशतले विस्तार भएको विकसित अर्थतन्त्र सन् २०२५ मा १.४ प्रतिशतले विस्तार हुने र सन् २०२४ मा ४.३ प्रतिशतले विस्तार भएको उदीयमान तथा विकासोन्मुख अर्थतन्त्र सन् २०२५ मा ३.७ प्रतिशतले विस्तार हुने कोषको प्रक्षेपण रहेको छ।

२.१.२. सन् २०२४ मा जि-७ अन्तर्गतका विकसित देशहरुको आर्थिक वृद्धिदर औसतमा १.० प्रतिशत रहेको थियो भने सन् २०२५ मा ०.८ प्रतिशतले वृद्धि हुने प्रक्षेपण रहेको छ। सन् २०२४ मा जि-७ अन्तर्गतका विकसित देशहरुको वेरोजगारी दर औसतमा ४.९ प्रतिशत रहेको थियो भने सन् २०२५ मा ५.१ प्रतिशतले बढ्ने प्रक्षेपण रहेको छ।

**तालिका २.१: विश्वको आर्थिक वृद्धिदर**

| अर्थतन्त्र | २०२४ | २०२५[प्र] |
|---|---|---|
| विश्व अर्थतन्त्र | ३.३ | २.८ |
| विकसित अर्थतन्त्र | १.८ | १.४ |
| उदीयमान तथा विकासशील अर्थतन्त्र | ४.३ | ३.७ |
| उदीयमान तथा विकासशील एशिया | ५.३ | ४.५ |
| उदीयमान तथा विकासशील युरोप | ३.४ | २.१ |
| ल्याटिन अमेरीका तथा क्यारेबियन | २.४ | २.० |
| मध्यपूर्व तथा मध्य एशिया | २.४ | ३.० |
| सव साहारा अफ्रिका | ४.० | ३.८ |

*स्रोत: अन्तर्राष्ट्रिय मुद्रा कोष, अप्रिल २०२५*

२.१.३. सन् २०२४ को तुलनामा सन् २०२५ मा नेपालीहरुको प्रमुख वैदेशिक रोजगार गन्तव्य मुलुकहरुको आर्थिक वृद्धिदर औसतमा वृद्धि हुने प्रक्षेपण छ।

**तालिका २.२: नेपालीहरुको वैदेशिक रोजगारको प्रमुख गन्तव्य मुलुकहरुको आर्थिक वृद्धिदर**

| मुलुक | २०२४ | २०२५[प्र] |
|---|---|---|
| साउदी अरेबिया | १.३ | ३.० |
| कतार | २.४ | २.४ |
| यूएई | ३.८ | ४.० |
| वहराईन | २.८ | २.८ |
| कुवेत | -२.८ | १.९ |
| ओमान | १.७ | २.३ |
| जापान | ०.१ | ०.६ |
| मलेसिया | ५.१ | ४.१ |
| दक्षिण कोरिया | २.० | १.० |

*स्रोत: अन्तर्राष्ट्रिय मुद्रा कोष, अप्रिल २०२५*

नेपालीहरुको प्रमुख श्रम गन्तव्य मुलुक मलेसियाको आर्थिक वृद्धिदर सबैभन्दा धेरै ४.१ प्रतिशत रहने प्रक्षेपण रहेको छ भने सबैभन्दा कम जापानको ०.६ प्रतिशत रहने प्रक्षेपण छ।

२.१.४. सन् २०२४ को तुलनामा सन् २०२५ मा दक्षिण एशियाली देशहरुको आर्थिक वृद्धिदर औसतमा वृद्धि हुने प्रक्षेपण छ । दक्षिण एशियाली देशहरुमध्ये भुटानको आर्थिक वृद्धिदर सबैभन्दा धेरै ७.० प्रतिशत रहने प्रक्षेपण छ भने सबैभन्दा कम पाकिस्तानको २.६ प्रतिशत रहने प्रक्षेपण छ ।

**तालिका २.३: दक्षिण एशियाली देशहरुको आर्थिक वृद्धिदर**

| मुलुक | २०२४ | २०२५[प] |
|---|---|---|
| बंगलादेश | ४.२ | ३.८ |
| भुटान | ४.० | ७.० |
| भारत | ६.५ | ६.२ |
| माल्दिभ्स | ५.१ | ४.५ |
| नेपाल | ३.१ | ४.० |
| पाकिस्तान | २.५ | २.६ |
| श्रीलङ्का | ५.० | ... |
| चीन | ५.० | ४.० |

*स्रोत: अन्तर्राष्ट्रिय मुद्रा कोष, अप्रिल २०२५*

## २.२ मूल्य स्थिति

२.२.१. अन्तर्राष्ट्रिय मुद्रा कोषका अनुसार सन् २०२४ मा ५.७ प्रतिशत रहेको विश्व अर्थतन्त्रको मूल्यवृद्धि दर सन् २०२५ मा ४.३ प्रतिशत रहने प्रक्षेपण छ ।

२.२.२. विश्वका विकसित मुलुकहरूको मुद्रास्फीति दर सन् २०२४ मा २.६ प्रतिशत रहेकोमा सन् २०२५ मा २.५ प्रतिशत रहने प्रक्षेपण छ । त्यसैगरी, उदीयमान तथा विकासशील मुलुकहरूको मुद्रास्फीति दर सन् २०२४ मा ७.७ प्रतिशत रहेकोमा सन् २०२५ मा ५.५ प्रतिशत रहने कोषको प्रक्षेपण छ ।

२.२.३. यसैगरी, विश्वका उदीयमान तथा विकासशील युरोपको मुद्रास्फीति दर सन् २०२५ मा सबैभन्दा धेरै १३.५ प्रतिशत र उदीयमान तथा विकासशील एशियाको मुद्रास्फीति दर सबैभन्दा कम १.७ प्रतिशत रहने अनुमान छ ।

**तालिका २.४: विश्वको मुद्रास्फीति (उपभोक्ता मूल्यमा आधारित, प्रतिशत)**

| अर्थतन्त्र | २०२४ | २०२५[प] |
|---|---|---|
| विश्व अर्थतन्त्र | ५.७ | ४.३ |
| विकसित अर्थतन्त्र | २.६ | २.५ |
| उदीयमान तथा विकासशील अर्थतन्त्र | ७.७ | ५.५ |
| उदीयमान तथा विकासशील एशिया | २.० | १.७ |
| उदीयमान तथा विकासशील युरोप | १६.८ | १३.५ |
| ल्याटिन अमेरीका तथा क्यारेबियन | १६.६ | ७.२ |
| मध्यपूर्व तथा मध्य एशिया | १४.४ | ११.१ |
| सव साहारा अफ्रिका | १८.३ | १३.३ |

*स्रोत: अन्तर्राष्ट्रिय मुद्रा कोष, अप्रिल २०२५*

२.२.४. सन् २०२४ को तुलनामा सन् २०२५ मा दक्षिण एशियाली मुलुकहरुमध्ये बंगलादेशको उपभोक्ता मुद्रास्फीति दर सबैभन्दा धेरै रहने प्रक्षेपण छ भने सबैभन्दा कम चीनको रहने प्रक्षेपण छ । सन् २०२४ को जुलाईमा ८३.८८ अमेरिकी डलर प्रति ब्यारल रहेको कच्चा तेलको मूल्य सन् २०२५ को जनवरीमा घटी अमेरिकी डलर ७१.७२ कायम भएको छ[१] । कच्चा तेल उत्पादनमा भएको वृद्धि तथा माग र आपूर्ति श्रृङ्खलामा आएको सहजताका कारण करिव छ महिनामा तेलको मूल्यमा कमी आएको छ ।

[१] www.oilprice.com

**तालिका २.५: दक्षिण एशियाली मुलुक तथा चीनको मुद्रास्फीति (उपभोक्ता मूल्यमा आधारित, प्रतिशत)**

| मुलुक | २०२४ | २०२५[प्र] |
|---|---|---|
| बंगलादेश | ९.७ | १०.० |
| भुटान | ४.३ | ३.२ |
| भारत | ४.७ | ४.२ |
| मालदिभ्स | १.४ | २.० |
| नेपाल | ५.४ | ४.९ |
| श्रीलङ्का | १.२ | ... |
| पाकिस्तान | २३.४ | ५.१ |
| चीन | ०.२ | ०.० |

*स्रोत: अन्तर्राष्ट्रिय मुद्रा कोष, अप्रिल २०२५*

## २.३ नेपालको समष्टिगत आर्थिक स्थिति

२.३.१. राष्ट्रिय तथ्याङ्क कार्यालयको प्रारम्भिक तथ्याङ्क अनुसार आर्थिक वर्ष २०८१/८२ मा नेपालको आर्थिक वृद्धिदर उपभोक्ताको मूल्यमा ४.६ प्रतिशत रहने तथा कुल गार्हस्थ्य उत्पादन (प्रचलित मूल्यमा) रु.६१ खर्ब ७ अर्ब रहने प्रारम्भिक अनुमान छ। गत आर्थिक वर्ष २०८०/८१ मा नेपालको आर्थिक वृद्धिदर उपभोक्ताको मूल्यमा ३.७ प्रतिशत रहने संशोधित अनुमान रहेको छ।

२.३.२. आर्थिक वर्ष २०८१/८२ को कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा प्राथमिक, द्वितीय तथा सेवा क्षेत्रको योगदान क्रमशः २५.६ प्रतिशत, १२.४ प्रतिशत र ६२.० प्रतिशत रहने अनुमान छ। त्यसैगरी, प्रतिव्यक्ति आम्दानी (Per Capita GDP) १४९६ अमेरिकी डलर रहने प्रारम्भिक अनुमान छ।

## २.४ अन्तर प्रदेश तुलना

२.४.१. राष्ट्रिय तथ्याङ्क कार्यालयले सार्वजनिक गरेको प्रारम्भिक तथ्याङ्कका आधारमा प्रदेशहरुको समग्र आर्थिक अवस्था तुलना गर्दा आर्थिक वर्ष २०८१/८२ मा मुलुकको कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा बागमती प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा धेरै (३६.३ प्रतिशत) रहेको छ भने कर्णाली प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा कम (४.२ प्रतिशत) रहेको छ।

२.४.२. कृषि क्षेत्रको उत्पादनमा कोशी प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा धेरै (२१.५ प्रतिशत) रहेको छ भने कर्णाली प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा कम (५.२ प्रतिशत) रहेको छ। उद्योग क्षेत्रको उत्पादनमा बागमती प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा बढी (३१.७ प्रतिशत) रहेको छ भने कर्णाली प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा कम (३.१ प्रतिशत) रहेको छ। यसैगरी, सेवा क्षेत्रको उत्पादनमा बागमती प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा बढी (४५.४ प्रतिशत) रहेको छ भने कर्णाली प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा कम (३.९ प्रतिशत) रहेको छ।

**तालिका २.६: प्रादेशिक आर्थिक परिसूचकहरु (आर्थिक वर्ष २०८१/८२)**

| आर्थिक परिसूचक/ प्रदेश | कोशी | मधेस | बागमती | गण्डकी | लुम्बिनी | कर्णाली | सुदूरपश्चिम | नेपाल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कुल गार्हस्थ्य उत्पादन (प्रचलित मूल्य, रु.अर्बमा) | ९७०.७४ | ८०३.९७ | २२३०.२३ | ५४८.१६ | ८६८.९० | २५५.५९ | ४२९.६३ | **६१०७.२२** |
| राष्ट्रिय उत्पादनमा अंश (प्रतिशत) | १५.९० | १३.१६ | ३६.५२ | ८.९८ | १४.२३ | ४.१९ | ७.०३ | **१००.००** |
| आर्थिक वृद्धिदर (उपभोक्ताको मूल्यमा) (प्रतिशत) | ३.३४ | ४.५० | ५.१८ | ५.५१ | ४.७० | ४.७४ | ३.३२ | **४.६१** |
| कृषि क्षेत्रमा प्रदेशको अंश (प्रतिशत) | २१.५१ | १९.२२ | १७.१२ | ९.६७ | १७.५४ | ५.२४ | ९.७१ | **१००.००** |
| उद्योग क्षेत्रमा प्रदेशको अंश (प्रतिशत) | १९.९४ | १०.९३ | ३१.६८ | ११.९८ | १५.४७ | ३.१३ | ६.८७ | **१००.००** |
| सेवा क्षेत्रमा प्रदेशको अंश (प्रतिशत) | १२.७८ | ११.१७ | ४५.३९ | ८.०७ | १२.६३ | ३.९८ | ५.९८ | **१००.००** |
| कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा क्षेत्रगत योगदान (प्रतिशत) | | | | | | | | |
| कृषि क्षेत्र | ३४.०५ | ३६.७३ | ११.८० | २७.१० | ३१.०२ | ३१.५० | ३४.७२ | **२५.१६** |
| उद्योग क्षेत्र | १६.०९ | १०.६६ | ११.१३ | १७.१३ | १३.९५ | ९.५८ | १२.५३ | **१२.८३** |
| सेवा क्षेत्र | ४९.८५ | ५२.६१ | ७७.०७ | ५५.७७ | ५५.०२ | ५८.९१ | ५२.७५ | **६२.०१** |

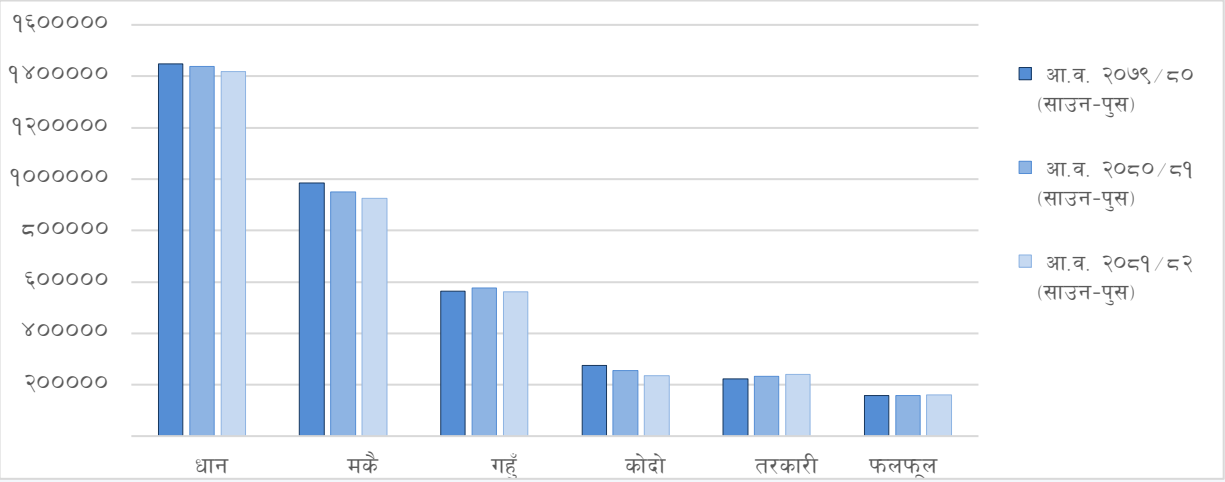
*स्रोत: राष्ट्रिय तथ्याङ्क कार्यालय, जेठ २०८२।*

# परिच्छेद ३
# कृषि क्षेत्र

## ३.१ कृषि उपजले ढाकेको भू-क्षेत्र

**खाद्य तथा अन्य बाली :** समीक्षा अवधिमा खाद्य तथा अन्य बालीले ढाकेको क्षेत्रफल ३.१० प्रतिशतले घटेको छ। गत वर्ष यस्तो क्षेत्रफल ०.६० प्रतिशतले घटेको थियो। समग्र खाद्य तथा अन्य बालीको क्षेत्रफलमा धान बालीको क्षेत्रफल सबैभन्दा धेरै ३६.११ प्रतिशत रहेको छ। प्रमुख खाद्य बालीमध्ये मकै बालीको क्षेत्रफल २३.५८ प्रतिशत र गहुँ बालीको क्षेत्रफल १४.३१ प्रतिशत रहेको छ। कोदो बालीको क्षेत्रफल ५.९७ प्रतिशत र जौ बालीको क्षेत्रफल ०.३२ प्रतिशत मात्र रहेको छ।

**चार्ट ३.१: प्रमुख खाद्यान्न बालीले ढाकेको क्षेत्रफल (हेक्टरमा)**




*स्रोत : कृषि तथा पशुपन्छी विकास मन्त्रालय, कृषि ज्ञान केन्द्रहरु।*

**तरकारी तथा बागवानी :** समीक्षा अवधिमा तरकारी बालीले ढाकेको क्षेत्रफल ३.५५ प्रतिशतले बढेको छ भने बागवानीले ढाकेको क्षेत्रफल १८.४५ प्रतिशतले घटेको छ। गत वर्षको सोही अवधिमा तरकारी बाली र बागवानीले ढाकेको क्षेत्रफल क्रमशः ४.७७ र ७.८१ प्रतिशतले बढेको थियो।

**फलफूल :** समीक्षा अवधिमा फलफूल बालीले ढाकेको क्षेत्रफल २.५८ प्रतिशतले बढेको छ। गत वर्षको सोही अवधिमा यस्ता बालीले ढाकेको क्षेत्रफल ०.७१ प्रतिशतले घटेको थियो।

**मसला :** समीक्षा अवधिमा मसला बालीले ढाकेको क्षेत्रफल १.५७ प्रतिशतले घटेको छ। गत वर्षको सोही अवधिमा यस्ता बालीले ढाकेको क्षेत्रफल ५.२५ प्रतिशतले बढेको थियो।

**प्रदेशगत स्थिति :** समीक्षा अवधिमा लुम्बिनी प्रदेशमा खाद्य तथा अन्य बालीले ढाकेको क्षेत्रफल बढेको छ भने बाँकी प्रदेशमा यस्तो क्षेत्रफल घटेको छ। तरकारी तथा बागवानी बालीले ढाकेको क्षेत्रफल कोशी, मधेश, कर्णाली तथा सुदूरपश्चिम प्रदेशमा बढेको छ भने बागमती, गण्डकी र लुम्बिनी प्रदेशमा घटेको छ। समीक्षा अवधिमा कोशी, मधेश, गण्डकी, लुम्बिनी र कर्णाली प्रदेशमा फलफूल बालीले ढाकेको क्षेत्रफल वृद्धि भएको छ भने बागमती र सुदूरपश्चिम प्रदेशमा फलफूल बालीले ढाकेको क्षेत्रफल घटेको छ। मसला बालीले ढाकेको क्षेत्रफल मधेश, बागमती र कर्णाली प्रदेश बाहेकका प्रदेशहरुमा घटेको छ। धान बालीले ढाकेको कुल क्षेत्रफलमा मधेश प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा बढी (२६.४० प्रतिशत) रहेको छ भने कर्णाली प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा कम (२.८१ प्रतिशत) रहेको छ। यस सम्बन्धी विस्तृत विवरण अनुसूचीको तालिका १(क-ख) मा प्रस्तुत गरिएको छ।

तालिका ३.१: कृषि उपजले ढाकेको भू-क्षेत्र

| प्रदेश | क्षेत्रफल (हेक्टर) | | | | प्रदेशगत हिस्सा (प्रतिशत) | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | खाद्य तथा अन्य बाली | तरकारी तथा बागवानी | फलफूल | मसला | खाद्य तथा अन्य बाली | तरकारी तथा बागवानी | फलफूल | मसला |
| कोशी प्रदेश | ८७३८८६ | ४५६०८ | २४७४४ | २८१३४ | **२२.२७** | १८.०४ | १५.३९ | **३७.७६** |
| मधेश प्रदेश | ८२९०८८ | ६७१५६ | ४४१०७ | १२१६८ | २१.१३ | **२६.५६** | **२७.४४** | १६.३३ |
| बागमती प्रदेश | ४७५९८५ | २९४३५ | ९८०७ | ४४७७ | १२.१३ | ११.६४ | **६.१०** | **६.०१** |
| गण्डकी प्रदेश | ३८१८३१ | १९५१४ | १७४१७ | ७३९३ | ९.७३ | **७.७२** | १०.८३ | ९.९२ |
| लुम्बिनी प्रदेश | ७६७४५३ | ३५९१८ | १८५७९ | ९२२० | १९.५६ | १४.२१ | ११.५६ | १२.३७ |
| कर्णाली प्रदेश | ३०३१९९ | २८१५४ | ३६२७४ | ५७८८ | ७.७३ | ११.१४ | २२.५७ | ७.७७ |
| सुदूरपश्चिम प्रदेश | २९२५६७ | २७०३३ | ९८२४ | ७३३७ | **७.४६** | १०.६९ | ६.११ | ९.८५ |
| **जम्मा** | **३९२४००९** | **२५२८१८** | **१६०७५३** | **७४५१७** | **१००** | **१००** | **१००** | **१००** |

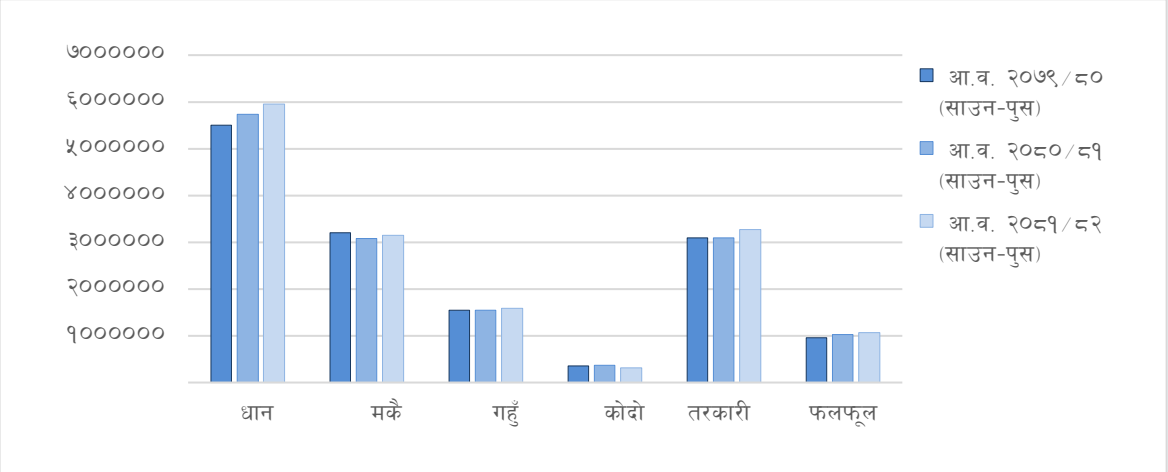
*स्रोत : कृषि तथा पशुपन्छी विकास मन्त्रालय, कृषि ज्ञान केन्द्रहरु ।*

खाद्य तथा अन्य बालीले ढाकेको क्षेत्रफलमा कोशी प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा बढी २२.२७ प्रतिशत र सुदूरपश्चिम प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा कम ७.४६ प्रतिशत रहेको छ (तालिका ३.१) । तरकारी तथा बागवानीले ढाकेको क्षेत्रफलमा मधेश प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा बढी २६.५६ प्रतिशत र गण्डकी प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा कम ७.७२ प्रतिशत रहेको छ । फलफूल बालीले ढाकेको क्षेत्रफलमा मधेश प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा बढी २७.४४ प्रतिशत र बागमती प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा कम ६.१० प्रतिशत रहेको छ । यसैगरी, मसला बालीले ढाकेको क्षेत्रफलमा कोशी प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा बढी ३७.७६ प्रतिशत र बागमती प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा कम ६.०१ प्रतिशत रहेको छ ।

## ३.२ कृषि उत्पादन

**खाद्य तथा अन्य बाली :** समीक्षा अवधिमा खाद्य तथा अन्य बालीको उत्पादन ०.९७ प्रतिशतले घटेको छ भने गत वर्ष यस्तो उत्पादन ०.९० प्रतिशतले बढेको थियो । समग्र खाद्य तथा अन्य बालीको उत्पादनमा धान बालीको उत्पादन हिस्सा सबैभन्दा बढी ३८.१६ प्रतिशत रहेको छ । यसैगरी, मकै र गहुँ बालीको उत्पादन समग्र खाद्य तथा अन्य बालीको उत्पादनमा क्रमश: २०.२३ र १०.१६ प्रतिशत रहेको छ ।

चार्ट ३.२: प्रमुख कृषि बालीको उत्पादन (मे.टनमा)




*स्रोत : कृषि तथा पशुपन्छी विकास मन्त्रालय, कृषि ज्ञान केन्द्रहरु*

### धान बालीको उत्पादनको प्रवृत्ति

विगत दश वर्षमा समग्र देशको धान बाली उत्पादनको तथ्याङ्क देहाय बमोजिम रहेको छ । यस अवधिमा धान बालीको उत्पादकत्वमा सामान्य वृद्धि भएको देखिन्छ ।

**तालिका ३.२: धान बालीको उत्पादन**

| आर्थिक वर्ष | क्षेत्रफल (हजार हेक्टरमा) | उत्पादन (हजार मेट्रिक टनमा) | उत्पादकत्व (मे.टन प्रति हेक्टर) |
|---|---|---|---|
| २०७२/७३ | १३६३ | ४२९९ | ३.२० |
| २०७३/७४ | १५५२ | ५२३० | ३.४० |
| २०७४/७५ | १४६९ | ५१५२ | ३.५० |
| २०७५/७६ | १४९२ | ५६१० | ३.८० |
| २०७६/७७ | १४५९ | ५५५१ | ३.८० |
| २०७७/७८ | १४७३ | ५६२२ | ३.८० |
| २०७८/७९ | १४७७ | ५१३० | ३.५० |
| २०७९/८० | १४४७ | ५५०७ | ३.८० |
| २०८०/८१ | १४३८ | ५७२९ | ४.०० |
| २०८१/८२ | १४१७ | ५९४८ | ४.२० |

*स्रोत : कृषि तथा पशुपन्छी विकास मन्त्रालय*

**तरकारी तथा बागवानी** : समीक्षा अवधिमा तरकारी तथा बागवानी उत्पादन ५.७५ प्रतिशतले बढेको छ । गत वर्षको सोही अवधिमा तरकारी उत्पादन ०.२६ प्रतिशतले बढेको थियो ।

**फलफूल** : समीक्षा अवधिमा फलफूल बालीको समग्र उत्पादन ४.७६ प्रतिशतले बढेको छ । गत वर्षको सोही अवधिमा यस्तो उत्पादन ६.२४ प्रतिशतले बढेको थियो ।

**मसला :** समीक्षा अवधिमा मसला बालीको समग्र उत्पादन १०.२० प्रतिशतले घटेको छ । गत वर्षको सोही अवधिमा यस्तो उत्पादन ११.६४ प्रतिशतले घटेको थियो ।

**प्रदेशगत स्थिति :** समीक्षा अवधिमा कोशी, मधेश, लुम्बिनी र सुदूरपश्चिम प्रदेशमा खाद्य तथा अन्य बालीको उत्पादन बढेको छ भने गण्डकी, बागमती तथा कर्णाली प्रदेशमा घटेको छ । तरकारी तथा बागवानी उत्पादन कोशी, बागमती, गण्डकी, कर्णाली र सुदूरपश्चिम प्रदेशमा बढेको छ भने बाँकी सबै प्रदेशमा घटेको छ । फलफूल बालीको उत्पादन कोशी, मधेश, गण्डकी, कर्णाली र सुदूरपश्चिम प्रदेशमा बढेको छ भने बागमती र लुम्बिनी प्रदेशमा घटेको छ । धान बालीको कुल उत्पादनमा मधेश प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा बढी २४.९० प्रतिशत रहेको छ भने कर्णाली प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा कम २.१९ प्रतिशत रहेको छ । यस सम्बन्धी विस्तृत विवरण अनुसूचीको तालिका २ (क-ख) मा दिइएको छ ।

तालिका ३.३: कृषि बालीको उत्पादन

| प्रदेश | उत्पादन (मेट्रिक टन) | | | | प्रदेशगत हिस्सा (प्रतिशत) | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | खाद्य तथा अन्य बाली | तरकारी तथा बागवानी | फलफूल | मसला | खाद्य तथा अन्य बाली | तरकारी तथा बागवानी | फलफूल | मसला |
| कोशी प्रदेश | ३८३०२२२ | ६२६००१ | २६३९३५ | १४९२५६ | **२४.५७** | १८.८१ | २४.६७ | **२९.९४** |
| मधेश प्रदेश | ३४८९८५० | ९२८९८३ | २७३३४५ | ६३७४४ | २२.३९ | **२७.९१** | **२५.५५** | १२.७९ |
| बागमती प्रदेश | १६४५६३९ | ५०७५१९ | ५३४०३ | ३२३३७ | १०.५६ | १५.२५ | **४.९९** | **६.४९** |
| गण्डकी प्रदेश | १२७४७९३ | २६९२२१ | ११९९०३ | ४५६५९ | ८.१८ | ८.०९ | ११.२१ | ९.१६ |
| लुम्बिनी प्रदेश | ३१०६४०० | ४३६१०५ | १६६४७७ | ६२६२१ | १९.९३ | १३.१० | १५.५६ | १२.५६ |
| कर्णाली प्रदेश | ८१२५९७ | २३१४२८ | १०६०३३ | ६५८७२ | **५.२१** | **६.९५** | ९.९१ | १३.२१ |
| सुदूर पश्चिम प्रदेश | १४२६५४३ | ३२८९०३ | ८६०२३.९८ | ७९०६४.८१ | ९.१५ | ९.८८ | ८.०९ | १५.८६ |
| **जम्मा** | **१५५८६०४३** | **३३२८१६०** | **१०६९१२०** | **४९८५५५** | १०० | १०० | १०० | १०० |

*स्रोत : कृषि तथा पशुपन्छी विकास मन्त्रालय, कृषि ज्ञान केन्द्रहरु ।*

खाद्य तथा अन्य बालीको उत्पादनमा कोशी प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा बढी २४.५७ प्रतिशत र कर्णाली प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा कम ५.२१ प्रतिशत रहेको छ (तालिका ३.३) । तरकारी तथा बागवानी उत्पादनमा मधेश प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा बढी २७.९१ प्रतिशत र कर्णाली प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा कम ६.९५ प्रतिशत रहेको छ । त्यस्तै, फलफूल बालीको उत्पादनमा मधेश प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा बढी २५.५५ प्रतिशत रहेको छ भने बागमती प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा कम ४.९९ प्रतिशत रहेको छ । मसला बालीको उत्पादनमा कोशी प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा बढी २९.९४ प्रतिशत रहेको छ भने बागमती प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा कम ६.४९ प्रतिशत रहेको छ ।

## ३.३ पशुपन्छी, माछा तथा वनजन्य उत्पादन

**पशुजन्य उत्पादन :** समीक्षा अवधिमा दूध उत्पादन २.८६ प्रतिशतले बढेको छ । गत वर्षको सोही अवधिमा दूध उत्पादन ४.०५ प्रतिशतले बढेको थियो । समीक्षा अवधिमा मासु उत्पादन २.३० प्रतिशतले बढेको छ भने गत वर्षको सोही अवधिमा मासु उत्पादन ०.३० प्रतिशतले घटेको थियो । समीक्षा अवधिमा अण्डा उत्पादन १.०४ प्रतिशतले बढेको छ । गत वर्षको सोही अवधिमा अण्डा उत्पादन १४.३७ प्रतिशतले बढेको थियो । यसैगरी, समीक्षा अवधिमा ऊन तथा छाला उत्पादन क्रमशः १५.६३ प्रतिशत र ०.२८ प्रतिशतले बढेको छ ।

**माछा उत्पादन :** समीक्षा अवधिमा माछा उत्पादन ०.३८ प्रतिशतले बढेको छ । गत वर्षको सोही अवधिमा माछा उत्पादन १३.२२ प्रतिशतले बढेको थियो ।

**वनजन्य उत्पादन :** समीक्षा अवधिमा वनजन्य उत्पादनतर्फ दाउरा उत्पादन १०.७२ प्रतिशत र औषधीजन्य वस्तुको उत्पादन १०.२९ प्रतिशतले बढेको छ । गत वर्षको सोही अवधिमा दाउरा उत्पादन ५.७३ प्रतिशतले घटेको थियो र औषधीजन्य वस्तुको उत्पादन ६.४५ प्रतिशतले बढेको थियो । त्यसैगरी, समीक्षा अवधिमा काठ उत्पादन ३.८४ प्रतिशतले घटेको छ भने अन्य उत्पादन १.७३ प्रतिशतले बढेको छ । गत वर्षको सोही अवधिमा काठ उत्पादन २२.१८ प्रतिशतले बढेको थियो र अन्य उत्पादन २.९५ प्रतिशतले बढेको थियो । यस सम्बन्धी विस्तृत विवरण अनुसूचीको तालिका ३ (क-ख) मा दिइएको छ ।

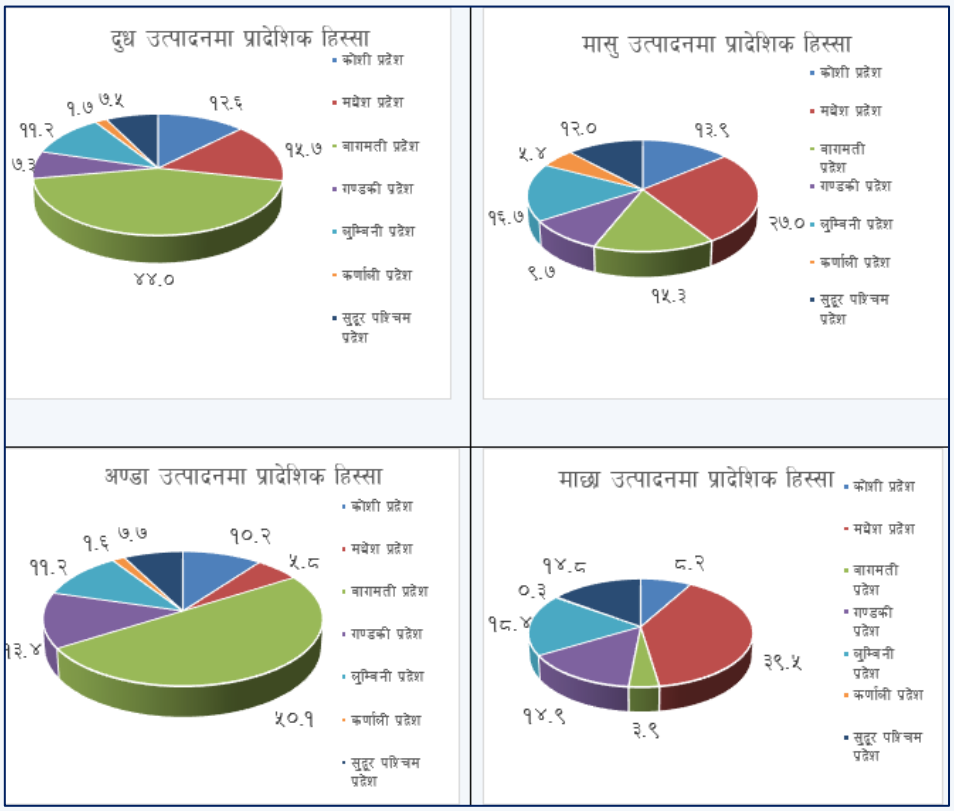
## तालिका ३.४: प्रमुख पशुपन्छी तथा माछा उत्पादन

| प्रदेश | उत्पादन | | | | हिस्सा (प्रतिशत) | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | दूध | मासु | अण्डा | माछा | दूध | मासु | अण्डा | माछा |
| | (हजार लिटर) | (मे.टन) | (हजार गोटा) | (मे.टन) | | | | |
| कोशी प्रदेश | ३१५६९७ | ४५७६३ | ८८९९० | ६२३१ | १२.६१ | १३.८७ | १०.२४ | ८.१६ |
| मधेश प्रदेश | ३९२७३४ | ८९२१८ | ५०३७८ | ३०१२५ | १५.६९ | **२७.०३** | ५.८० | **३९.४५** |
| बागमती प्रदेश | ११००८४८ | ५०४५५ | ४३५०९९ | २९९८ | **४३.९७** | १५.२९ | **५०.०७** | ३.९३ |
| गण्डकी प्रदेश | १८२२०५ | ३२०१४ | ११६३०४ | ११३९८ | ७.२८ | ९.७० | १३.३८ | १४.९३ |
| लुम्बिनी प्रदेश | २८१३०० | ५५२५० | ९७३०२ | १४०६२ | ११.२४ | १६.७४ | ११.२० | १८.४२ |
| कर्णाली प्रदेश | ४३६०२ | १७७३५ | १४२२४ | २०९ | **१.७४** | **५.३७** | **१.६४** | **०.२७** |
| सुदूर पश्चिम प्रदेश | १८७०६६ | ३९६२३ | ६६६६९ | ११३३७ | ७.४७ | १२.०० | ७.६७ | १४.८५ |
| **जम्मा** | २५०३४५१ | ३३००५७ | ८६८९६५ | ७६३६१ | १०० | १०० | १०० | १०० |

*स्रोत : कृषि तथा पशुपन्छी विकास मन्त्रालय, भेटेरीनरी अस्पताल तथा पशु सेवा विज्ञ केन्द्रहरु ।*

दूध उत्पादनको हिस्सा बागमती प्रदेशमा सबैभन्दा बढी (४३.९७ प्रतिशत) रहेको छ भने सबैभन्दा कम हिस्सा कर्णाली प्रदेशमा (१.७४ प्रतिशत) रहेको छ (तालिका ३.४) । मासु उत्पादनमा मधेश प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा बढी (२७.०३ प्रतिशत) र कर्णाली प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा कम (५.३७ प्रतिशत) रहेको छ । अण्डा उत्पादनमा बागमती प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा बढी (५०.०७ प्रतिशत) र कर्णाली प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा कम (१.६४ प्रतिशत) रहेको छ । यसैगरी, माछा उत्पादनमा मधेश प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा बढी (३९.४५ प्रतिशत) र कर्णाली प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा कम (०.२७ प्रतिशत) रहेको छ ।

## चार्ट ३.३: प्रदेशगत दूध, मासु, अण्डा र माछा उत्पादन हिस्सा

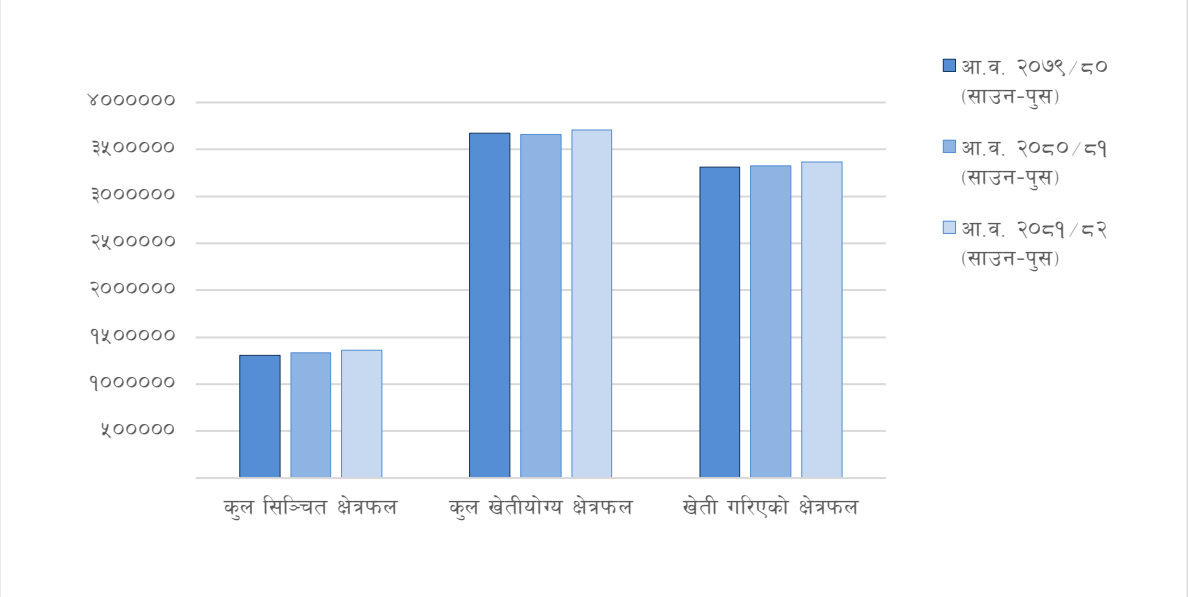



*स्रोत : कृषि तथा पशुपन्छी विकास मन्त्रालय, भेटेरीनरी अस्पताल तथा पशु सेवा विज्ञ केन्द्रहरु*

## ३.४ सिँचाई

समीक्षा अवधिमा कुल सिञ्चित क्षेत्रफल २.१३ प्रतिशतले बढेको छ । गत वर्षको सोही अवधिमा कुल सिञ्चित क्षेत्रफल २.०४ प्रतिशतले बढेको थियो । कुल खेतीयोग्य भू-भागमध्ये ३६.८३ प्रतिशत क्षेत्रफलमा सिँचाई सुविधा पुगेको छ । देशको कुल खेतीयोग्य क्षेत्रफलमा कोशी प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा बढी २१.०४ प्रतिशत रहेको छ भने कर्णाली प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा कम ६.३१ प्रतिशत रहेको छ । यससम्बन्धी विस्तृत विवरण अनुसूचीको तालिका ५ (क-ख) मा प्रस्तुत गरिएको छ ।

**चार्ट ३.४: सिँचाई क्षेत्रफलमा भएको विस्तार (हेक्टरमा)**




*स्रोत : ऊर्जा, जलस्रोत तथा सिँचाई मन्त्रालय, जलस्रोत तथा सिँचाई विकास डिभिजन कार्यालयहरु ।*

देशको कुल सिञ्चित क्षेत्रफलमा मधेश प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा बढी २४.४५ प्रतिशत रहेको छ र कर्णाली प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा कम ४.२७ प्रतिशत रहेको छ (तालिका ३.५) ।

**तालिका ३.५: सिञ्चित क्षेत्रफलमा प्रदेशगत हिस्सा**

| **प्रदेश** | **क्षेत्रफल** (हेक्टरमा) | **हिस्सा** (प्रतिशतमा) |
|---|---|---|
| कोशी प्रदेश | ३१८२९७ | २३.३३ |
| मधेश प्रदेश | ३३३५५१ | **२४.४५** |
| बागमती प्रदेश | १४५००६ | १०.६३ |
| गण्डकी प्रदेश | १५०१७१ | ११.०१ |
| लुम्बिनी प्रदेश | २४७४६८ | १८.१४ |
| कर्णाली प्रदेश | ५८,१९३ | **४.२७** |
| सुदूर पश्चिम प्रदेश | १११६९६.४ | ८.१९ |
| **जम्मा** | **१३६४३८३** | १००.०० |

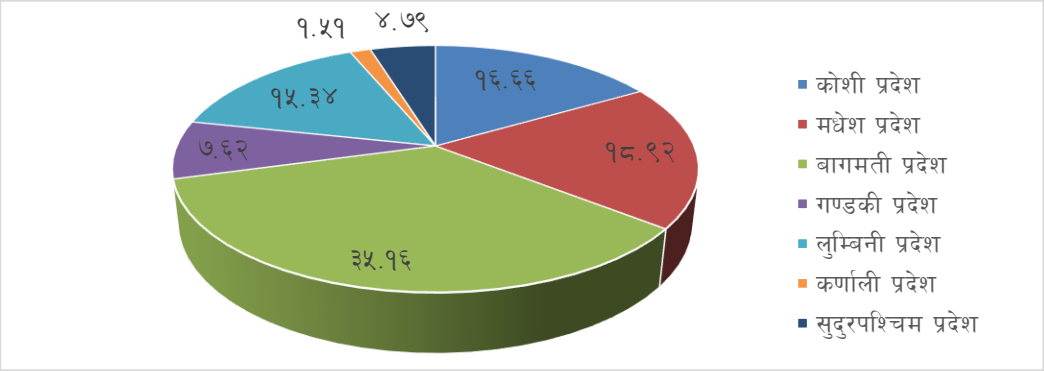
*स्रोत : ऊर्जा, जलस्रोत तथा सिँचाई मन्त्रालय, जलस्रोत तथा सिँचाई विकास डिभिजन कार्यालयहरु ।*

## ३.५ क्षेत्रगत कृषि कर्जा

२०८० पुस मसान्तको तुलनामा २०८१ पुस मसान्तमा बैंक तथा वित्तीय संस्थाबाट कृषिमा प्रवाहित कर्जा ३.३४ प्रतिशतले बढेर रु.३ खर्ब ४१ अर्ब ६० करोड पुगेको छ । गत वर्षको सोही अवधिमा यस्तो

कर्जा ४.११ प्रतिशतले घटेको थियो । समीक्षा अवधिमा कुल कृषि कर्जामध्ये सबैभन्दा बढी रु.६९ अर्ब ३६ करोड कर्जा पशुपालन शीर्षकमा प्रवाह भएको छ भने सबैभन्दा कम सुर्तीमा रु.२४ करोड १४ लाख प्रवाह भएको छ । कृषि क्षेत्रमा प्रवाहित कर्जामा कोशी प्रदेशको अंश १६.६६ प्रतिशत, मधेश प्रदेशको अंश १८.९२ प्रतिशत, बागमती प्रदेशको अंश ३५.१६ प्रतिशत, गण्डकी प्रदेशको अंश ७.६२ प्रतिशत, लुम्बिनी प्रदेशको अंश १५.३४ प्रतिशत, कर्णाली प्रदेशको अंश १.५१ प्रतिशत र सुदूर पश्चिम प्रदेशको अंश ४.७९ प्रतिशत रहेको छ (अनुसूची ६-क र ख) ।

**चार्ट ३.५: कृषि कर्जाको प्रदेशगत हिस्सा**




*स्रोत : बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरु, २०८१ पुस ।*

## ३.६ कृषि क्षेत्रका चुनौती र सम्भावना

### ३.६.१ चुनौती

जलवायु परिवर्तनका कारण तापक्रम वृद्धि, अनियमित वर्षा, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, खण्डवृष्टि, बाढी र पहिरो जस्ता प्राकृतिक प्रकोपले कृषि प्रणालीमा चुनौती थपिएको छ । खेतीयोग्य जमिनलाई आवासीय प्रयोजनका लागि टुक्र्याउने प्रवृत्ति बढ्दा जमिनको खण्डीकरण बढ्दै गएको, आन्तरिक तथा बाह्य वसाईसराईका कारण कतिपय जमिन बाँझो भएको, युवा एवम् भविष्यका पुस्तालाई कृषि क्षेत्रमा आकर्षित गर्न कठिन भईरहेको, कृषि उपजको आयात नियन्त्रण र गुणस्तर परीक्षणको व्यवस्था कमजोर रहेको छ । समग्रमा, बिभिन्न कृषि योजनाले पहिचान गरेका समस्याहरू समाधान गर्दै कृषिमा अवसर सिर्जना गर्नु आजको मुख्य चुनौती बनेको छ । कृषि क्षेत्रका यी बाहेक प्रदेशगत रुपमा रहेका चुनौतीहरु देहायबमोजिम तालिका ३.७ मा उल्लेख गरिएको छ ।

**तालिका ३.६: कृषि क्षेत्रका प्रदेशगत चुनौतीहरु**

| प्रदेश | कृषि क्षेत्रका चुनौती |
|---|---|
| कोशी प्रदेश | • कृषि उद्योगको स्थापना र करार तथा सहकारी खेतीमार्फत कृषिलाई औद्योगिकीकरण गरी उत्पादकले आफ्नो मूल्य निर्धारण गर्न सक्ने वातावरणको सिर्जना गर्नु ।<br>• पशुपन्छी तथा माछाजन्य उत्पादनको बजार पर्याप्त भएको तर बजारमा बिचौलियाहरुको उपस्थिति तथा तराईका जिल्लाहरुमा खुल्ला सिमानाका कारण कृषकहरुले आफ्नो उत्पादनको उचित मूल्य नपाउने हुनाले पशुजन्य उत्पादनको बजार सुनिश्चित गरी उत्पादनको उचित मूल्य निर्धारण गर्नु ।<br>• कुल खेतीयोग्य क्षेत्रफलको करिब ४१ प्रतिशत भू-भागमा मात्र सिँचाई सुविधा पुगेको हुँदा सिँचाई सुविधा नपुगेका सम्पूर्ण खेतीयोग्य जमिन र सम्भाव्य |

| प्रदेश | कृषि क्षेत्रका चुनौती |
|---|---|
| | टार/बेँसीहरूमा, लिफ्ट प्रविधि लगायत अन्य प्रविधिमार्फत सिँचाई सुविधा उपलब्ध गराउनु । |
| मधेश प्रदेश | • वैदेशिक रोजगारी तर्फ आकर्षण बढेकाले कृषि क्षेत्रमा काम गर्ने जनशक्तिको अभाव र कृषि श्रमिकको लागतमा भएको वृद्धिलाई नियन्त्रण गर्नु ।<br>• किसानहरुलाई आधुनिक कृषि प्रविधि, कीट व्यवस्थापन, बाली चक्र र अन्य महत्वपूर्ण कृषि अभ्यासहरुको बारेमा पहुँच बढाउनु ।<br>• कृषिमा प्रयोग हुने गुणस्तरिय बिउ, रासायनिक मल, जैविक मल, कीटनाशक औषधी जस्ता सामाग्रीहरुको समयमै सहज पहुँच हुने व्यवस्था गर्नु । |
| बागमती प्रदेश | • पहाडी क्षेत्रहरूमा आउने बाढी, पहिरो र अन्य प्राकृतिक प्रकोपहरूले बालीनाली, पशुचौपाया, कृषियोग्य जमिन र यातायातमा ठूलो क्षति पुऱ्याउनु, उत्पादनको ढुवानीमा समस्या उत्पन्न हुनाले विपद्हरूको न्यूनीकरण गरी कृषकलाई हुने नोक्सानीलाई कम गर्नु ।<br>• बढ्दो शहर केन्द्रित बसाईसराइलाई रोक्नका लागि गाउँमा कृषि र उद्यमशीलताको विकास गर्दै आय आर्जनका गतिविधिहरू सञ्चालन गर्नु ।<br>• पराल, गोबर, मल, व्यवस्थित चरणक्षेत्र, उन्नत जातका घाँस लगायत कृषकहरूका लागि अत्यावश्यक सामग्रीहरूको मूल्य निर्धारण गरी ती सामग्रीहरू सहज रूपमा उपलब्ध गराउने व्यवस्था मिलाउनु । |
| गण्डकी प्रदेश | • कृषि उत्पादन तथा उत्पादकत्व वृद्धिका लागि मल, उन्नत बिउ, प्रविधि, सिँचाई, विद्युत्, प्राविधिक सेवा दिगो र सर्वसुलभरुपमा उपलब्ध गराउनु, खेतीयोग्य जग्गाको खण्डीकरण रोक्नु, जग्गा बाँझो राख्ने प्रवृत्ति निरुत्साहित गर्नु, बाँदर तथा वन्यजन्तुबाट हुने हानी नोक्सानी न्यूनीकरण गर्नु ।<br>• कृषि उत्पादनलाई बजारमा सहज पहुँच पुग्ने गरी आधारभूत संरचनाको विकास गर्नु, कृषि उत्पादन भण्डारण सुविधा, प्रशोधन केन्द्र, यातायात सेवा, कृषि उत्पादनको बजारीकरण प्रक्रियामा संस्थागत सञ्जालको विस्तार र ग्रामीण क्षेत्रमा आधारभूत सेवाहरूको पहुँचमा दिनु ।<br>• जैविक विविधताको सन्तुलन र पारम्परिक बालीहरूको संरक्षण गर्दै जलवायु परिवर्तनको असरलाई कम गर्न जलवायु अनुकूल कृषि प्रविधिको प्रयोग गर्ने र वातावरणीय सन्तुलन कायम राख्ने कृषि प्रणालीलाई सुदृढ बनाउनु, रोग नियन्त्रणका लागि जैविक सुरक्षा तथा नियमित खोप अभियान सुदृढ गर्नु । |
| लुम्बिनी प्रदेश | • कृषि तथा पशुपालन क्षेत्रमा देखिएका महामारीजन्य रोग, मौसमी प्रतिकुलता, जुनोटिक रोगहरु तथा जलवायुजन्य जोखिम न्यूनीकरण गर्न कृषि तथा पशु सेवा बिमा लागु गर्नु र त्यसको पहुँच (सबै) कृषक तथा पशुपालकसम्म पुग्ने व्यवस्था गर्नु ।<br>• कृषि तथा पशु उत्पादनबाट तुलनात्मक लाभ लिनका लागि आवश्यक पूर्वाधार (सिँचाई, सडक, बजार, विद्युत्, कृषि, उद्योग) ले महत्वपूर्ण भूमिका खेल्ने भएकाले यी क्षेत्रहरुको समन्वयात्मक रुपमा विकास गर्नु ।<br>• तुलनात्मक लाभका आधारमा छनोट गरिएका क्षेत्र र बालीहरूको लागि एकीकृत रुपमा सघन कृषि कार्यक्रम सञ्चालन गरी कृषिको व्यावसायीकरणमार्फत औद्योगिकीकरणको आधार खडा गर्नु । |
| कर्णाली प्रदेश | • कृषि तथा पशुजन्य उत्पादनमा हानिकारक विषादी, रसायन तथा एन्टिबायोटिक्सको प्रयोग कम गरी जनस्वास्थ्यमा पर्न जाने नकारात्मक प्रभाव कम गर्दै लैजानु ।<br>• कर्णाली प्रदेशका पहिचान एवम् निर्यातयोग्य रैथाने तथा प्राङ्गारिक उत्पादन जस्तैः मार्सी चामल, चिनो, फापर, कोदो, कागुनो, कुरिलो, जुनेलो, लट्टे, सिमी |

| प्रदेश | कृषि क्षेत्रका चुनौती |
|---|---|
| | लगायतका कृषि उपजहरुको संरक्षण र प्रवर्द्धन गर्दै ब्राण्डिङ् गरी बजारीकरण गर्नु ।<br>• कृषि क्षेत्रको प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता अभिवृद्धि गर्नका लागि आवश्यकता अनुरुप नीतिगत, प्रक्रियागत र संस्थागत सुधारहरु गर्नु । |
| सुदूरपश्चिम प्रदेश | • युवा एवम् सक्रिय श्रमशक्ति, विदेशबाट फर्किएका व्यक्तिहरुलाई कृषि तथा पशुपालन व्यवसायतर्फ आकर्षित गराई प्रदेशको विशेषत: पहाडी भेगमा बढ्दै गएको बाँझो जमिनलाई प्रयोगमा ल्याउनु ।<br>• गुणस्तरीय बीउबीजन र मलखाद, सिँचाई लगायत सेवाहरु दिगो र सर्वसुलभ रुपमा उपलब्ध गराउनु र कृषि उपजको वितरणमा विचौलियाको प्रभुत्व हटाउनु ।<br>• भारतबाट कृषि उपजहरुको अवैध आयात निरुत्साहित गरी स्थानीय कृषकहरूले सस्तोमा आफ्नो कृषि उत्पादन बेच्नु पर्ने समस्याको निराकरण गर्नु । |

### ३.६.२ सम्भावना

नेपाल भौगोलिक विविधताले भरिपूर्ण भएको परिप्रेक्ष्यमा सातै प्रदेशहरुमा कृषि क्षेत्रका बिभिन्न सम्भावनाहरु रहेका छन् । कृषि क्षेत्रमा मौलिकता कायम गरी भू-खण्डीकरणलाई निरुत्साहित गर्दै कृषि उपजमा व्यावसायीकरण एवम् विविधिकरणको प्रचुर सम्भावना रहेको छ। चक्लाबन्दी खेतीको प्रोत्साहनले व्यावसायिक कृषितर्फ आकर्षण बढेको, भौगोलिक विविधता अनुसार उपयुक्त बिउविजनको विकासले उत्पादन बढेको, कृषिसँग सम्बन्धित शैक्षिक जनशक्ति बढ्दै गएको देखिन्छ । साथै, जैविक प्रमाणीकरण तथा रैथाने उत्पादनको प्रवर्द्धनले निर्यात सम्भावना विस्तार, पशुपन्क्षीहरुको नश्ल सुधार, पशु सेवा विज्ञ केन्द्रको विस्तार, फलफूल खेती, आदि जस्ता कारणहरूले गर्दा कृषि क्षेत्रको आधुनिकीकरण र व्यावसायिकीकरण गर्न सकिने जस्ता सम्भावना सबै प्रदेशमा रहेका छन् । यसबाहेक प्रदेशगत रुपमा रहेका सम्भावनाहरुलाई देहाय बमोजिम तालिका ३.८ मा प्रस्तुत गरिएको छ ।

**तालिका ३.७: कृषि क्षेत्रका प्रदेशगत सम्भावनाहरु**

| प्रदेश | कृषि क्षेत्रका सम्भावना |
|---|---|
| कोशी प्रदेश | • यस प्रदेशका ७ वटा जिल्लाहरूमा भेटेरिनरी अस्पताल तथा पशु सेवा विज्ञ केन्द्र विस्तार भई १४ वटै जिल्लामा भेटेरीनरी अस्पताल तथा पशु सेवा विज्ञ केन्द्रको स्थापना भएकाले पशुपन्छीमा लाग्ने विभिन्न रोगहरूमा न्यूनीकरण भई पशुजन्य उत्पादनमा वृद्धि हुनसक्ने सम्भावना रहेको ।<br>• विभिन्न जिल्लाहरुमा साना किसान लक्षित सुख्खा राहत स्यालो ट्यूबवेल सिँचाई विशेष कार्यक्रम नमुना आयोजनाको रूपमा सञ्चालन गरिने भएको हुँदा सिञ्चित क्षेत्रफलमा विस्तार हुने सम्भावना रहेको । |
| मधेश प्रदेश | • समतल उर्वर भूमिको प्रचुरता रहेकोले सिँचाई सुविधामार्फत कृषियोग्य भूमिको क्षेत्रफल विस्तार गरी खाद्यान्न तथा अन्य बाली र तरकारी उत्पादनलाई पकेट क्षेत्रको रुपमा विकास गर्न सकिने सम्भावना रहेको । |
| बागमती प्रदेश | • हाल कृषि बालीमा सीमित रहेको न्यूनतम समर्थन मूल्यको अवधारणालाई नगदे बालीहरूमा पनि लागू गर्न सकिएको खण्डमा काठमाडौं, भक्तपुर, ललितपुर, चितवन, हेटौंडा लगायतका ठूला बजारमा उत्पादकहरूले आफ्नो उत्पादनको उचित मूल्य प्राप्त तथा बजार सुनिश्चित गर्न सक्ने उच्च सम्भावना रहेको । |

| प्रदेश | कृषि क्षेत्रका सम्भावना |
|---|---|
| | • कृषि अनुसन्धानलाई विशेष प्राथमिकता दिई नेपाल कृषि अनुसन्धान परिषद्लाई (NARC) अनुसन्धानमा आवश्यक सहयोग गरी Post Harvest Technology सम्बन्धी बहुवर्षीय अनुसन्धान र विकासको योजना ल्याउने सम्भावना रहेको । |
| गण्डकी प्रदेश | • विभिन्न कृषि उत्पादनको सम्भावना भएका चेपेटार, हाँडीटार, राइनसटार तथा अन्य टारमा लिफ्ट सिँचाईमार्फत सिँचाईको पहुँच पुऱ्याउन सकिएमा कृषि उत्पादनमा वृद्धि हुने सम्भावना रहेको ।<br>• मनाङ र मुस्ताङ जिल्लामा व्यावसायिक स्याउ खेती तथा कास्की, स्याङ्जा, गोरखा, बाग्लुङ र पर्वतमा व्यावसायिक सुन्तला खेतीको उच्च सम्भावना रहेको छ । साथै, यस प्रदेशको उच्च हिमाली क्षेत्रमा पाइने यार्सागुम्बा लगायतका जडीबुटीको बजारीकरण गर्न समुदाय, सहकारी र स्थानीय तहको समन्वयात्मक कार्यक्रम ल्याउन सकिएमा जडीबुटीको राम्रो सम्भावना रहेको । |
| लुम्बिनी प्रदेश | • प्रधानमन्त्री कृषि आधुनिकीकरण परियोजना अन्तर्गत यस प्रदेशका सुपर जोन र जोनको रुपमा रहेका जिल्लाका कार्यक्रमहरूबाट अपेक्षित प्रतिफल प्राप्त हुने व्यवस्था गरी कृषकलाई यसतर्फ आकर्षित गर्न सकिने सम्भावना रहेको ।<br>• प्रदेश सरकार तथा स्थानीय सरकारका विभिन्न परियोजनामार्फत कृषिमा आधुनिकीकरण, यान्त्रिकीकरण, व्यावसायिकरण तथा बजारीकरणमार्फत तुलनात्मक लाभ एवम् प्रतिस्पर्धात्मक क्षमताका बाली वस्तुको उत्पादनमा वृद्धि गर्न सकिने सम्भावना रहेको । |
| कर्णाली प्रदेश | • कृषि उपजको मूल्य निर्धारण व्यावहारिक भई सहज बजारको पहुँच हुन सकेमा कृषकहरुलाई थप प्रोत्साहित गर्दै यस क्षेत्रमा कृषि उद्यमको विकास गरी रोजगारीको वृद्धि गर्न सकिने उच्च सम्भावना रहेको ।<br>• यस प्रदेशमा कृषि तथा जडिबुटीजन्य कच्चा पदार्थको भण्डार भएकाले कृषि तथा जडीबुटी सम्बन्धी उद्योग सञ्चालन गरी युवाहरुलाई उद्यमी बनाउँदै रोजगारी सिर्जना गर्न सकिने सम्भावना रहेको । |
| सुदूरपश्चिम प्रदेश | • प्रदेशको कृषि विकास रणनीति (२०७९/८०-२०९३/९४) को प्रभावकारी कार्यान्वयबाट कृषि क्षेत्रमा यान्त्रिकीकरण र आधुनिकीकरण, भूमिको बैज्ञानिक उपयोग, विशिष्टिकृत कृषि प्रणालीको विकास हुने सम्भावना रहेको ।<br>• प्रदेशको कैलाली र कञ्चनपुर जिल्लामा कृषियोग्य जमिनको चक्लाबन्दी गरी धान, गहुँ र तेलहनको उत्पादन र उत्पादकत्व बढाउन सकिने सम्भावना रहेको छ । साथै, डडेल्धुरा, बैतडी लगायतका पहाडी जिल्लाहरुमा मकै, तरकारी, अदुवा खेतीको सम्भावना रहेको छ । |

## बक्स १: मादि हिमालय कृषि फर्म

खोल्साको सुन भनेर चिनिने अलैंची खेती गरी गण्डकी प्रदेशमा कृषि व्यवसायलाई प्रवर्द्धन गर्दै राष्ट्रिय अर्थतन्त्रमा यस प्रदेशको योगदानमा वृद्धि गर्ने, अन्य कृषकलाई कृषि व्यवसायमा आकर्षित गर्ने र रोजगारी सिर्जनागर्ने अभिप्रायले स्थानीय सुरेन्द्रजङ क्षेत्रीबाट वि.सं.२०७३ सालमा मादि गाउँपालिका-२, रोहिगाउँमा कास्की जिल्लाकै ठुलो कृषि फर्मकोरुपमा **मादि हिमालय कृषि फर्म प्रा.लि**.सञ्चालनमा रहेको छ।




चालु पुँजी रु.४ लाख र स्थिर पुँजी रु.११ लाख रहेको यस प्रा.लि.को नेट वर्थ हाल रु.३ करोडको रहेको छ। सानो क्षेत्रफलबाट शुरु गरिएको यो कम्पनी हाल ४०० रोपनीमा फैलिएको छ। वार्षिक ५ हजार के.जी. अलैंची उत्पादन गर्ने गरेको फर्मको वार्षिक आम्दानी करिब रु.३० लाख रहेको छ। करिव ७० प्रतिशत उत्पादन क्षमतामा चलिरहेको यस कम्पनीले स्थानीयले उत्पादन गरेको अलैंची समेत जम्मा गरेर भारत, सिंगापुर र जर्मनी निर्यात गर्दै आइरहेको छ। हाल स्थायी रुपमा कार्यरत ३ जना कर्मचारी रहेको कम्पनीले खेती गर्ने सिजनमा १५ जनासम्म स्थानीय कामदारलाई रोजगारी दिने गरेको छ।

*स्रोतः स्थलगत सर्वेक्षण*

## बक्स २: दोलखाको गौरीशंकर गाई फार्म

गौरीशंकर गाई फार्म प्रा.लि. दोलखा जिल्लाको भीमेश्वर नगरपालिकाको वडा नं. ७ मा अवस्थित रहेको छ। उक्त फार्म करिब चार वर्षअघि कम्पनी ऐन अनुसार घरेलु तथा स्थानीय निकायमा दर्ता गरी सञ्चालनमा ल्याएको देखिन्छ। यस फर्मका सञ्चालकले स्वपुँजीबाट गाई फार्म सुरुआत गरेकोमा पछि वाणिज्य बैंकबाट सहुलियतपूर्ण कर्जा लिई २५ रोपनी जग्गामा फार्म विस्तार गरेको देखिन्छ। व्यवसाय विस्तार भएसँगै हाल उक्त फार्ममा ५० वटा गाई (Holstein / Jersey प्रकारका) रहेको र गाईहरूलाई आवश्यक घाँस खेती समेत आफैंले व्यवस्थापन गरेको देखिन्छ। यस गाई फार्मले दश जना व्यक्तिलाई रोजगारी दिएको छ।



हाल उक्त फार्मले औसत दैनिक ३५० लिटर दूध उत्पादन गरी आफ्नै दुग्ध डेरी (गौरीशंकर डेरी प्रा.लि.) बाट विक्री गर्ने गरेको पाइयो। गौरीशंकर गाई फार्म प्रा.लि. तथा गौरीशंकर डेरी प्रा.लि.ले स्थानीय क्षेत्रमा दुग्ध पदार्थ उत्पादन, संकलन तथा वितरण समेत गरेर आय आर्जन, रोजगारी सिर्जना तथा पशुपालन व्यावसायीकरणमा योगदान गरेको देखिन्छ।

*स्रोतः स्थलगत सर्वेक्षण*

परिच्छेद ४

# उद्योग क्षेत्र

## ४.१ प्रदेश अनुसार उद्योगको विवरण

उद्योग विभागको तथ्याङ्क अनुसार आर्थिक वर्ष २०८१/८२ को पहिलो ६ महिनामा देशभर साना, मझौला र ठूला गरी थप ५ सय ८१ उद्योगहरु उद्योग विभागमा दर्ता भएका छन् । आर्थिक वर्ष २०८१/८२ को पहिलो ६ महिनामा बागमती प्रदेशमा सबैभन्दा बढी (४९३) उद्योग दर्ता भएका छन् भने सुदुरपश्चिम प्रदेशमा ६ उद्योग दर्ता भएका छन् । कर्णाली प्रदेशमा कुनै पनि उद्योग दर्ता भएका छैनन् । समीक्षा अवधिमा दर्ता भएका ५ सय ८१ उद्योगहरुले २५ हजार ६ सय ३७ जनालाई रोजगारी दिएका छन् ।

**तालिका ४.१: आर्थिक वर्ष २०८१/८२ को प्रथम ६ महिनामा उद्योग विभागमा दर्ता भएका उद्योगहरुको विवरण**

| प्रदेश | उद्योगको संख्या | कुल पुँजी (रु अर्बमा) | कुल स्थिर पुँजी (रु अर्बमा) | चालु पुँजी (रु अर्बमा) | रोजगारी | कुल प्रस्तावित विदेशी लगानी (रु अर्बमा ) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कोशी प्रदेश | १९ | ४४.६९ | ४३.४१ | १.२८ | १०३० | ३२.०२ |
| मधेश प्रदेश | १९ | ८.७८ | ५.९१ | २.८७ | १५४० | ०.४४ |
| बागमती प्रदेश | ४९३ | ५०.१४ | ३८.८१ | ११.३३ | २००८७ | १.०९ |
| गण्डकी प्रदेश | १९ | ११.४३ | ११.१५ | ०.२८ | ५२२ | ०.६८ |
| लुम्बिनी प्रदेश | २५ | ९.५० | ८.११ | १.३९ | २१४१ | १.१८ |
| सुदूरपश्चिम प्रदेश | ६ | ५.०९ | ४.८५ | ०.२३ | ३१७ | ०.४० |
| **कुल** | **५८१** | **१२९.६३** | **११२.२५** | **१७.३८** | **२५६३७** | **३५.८०** |

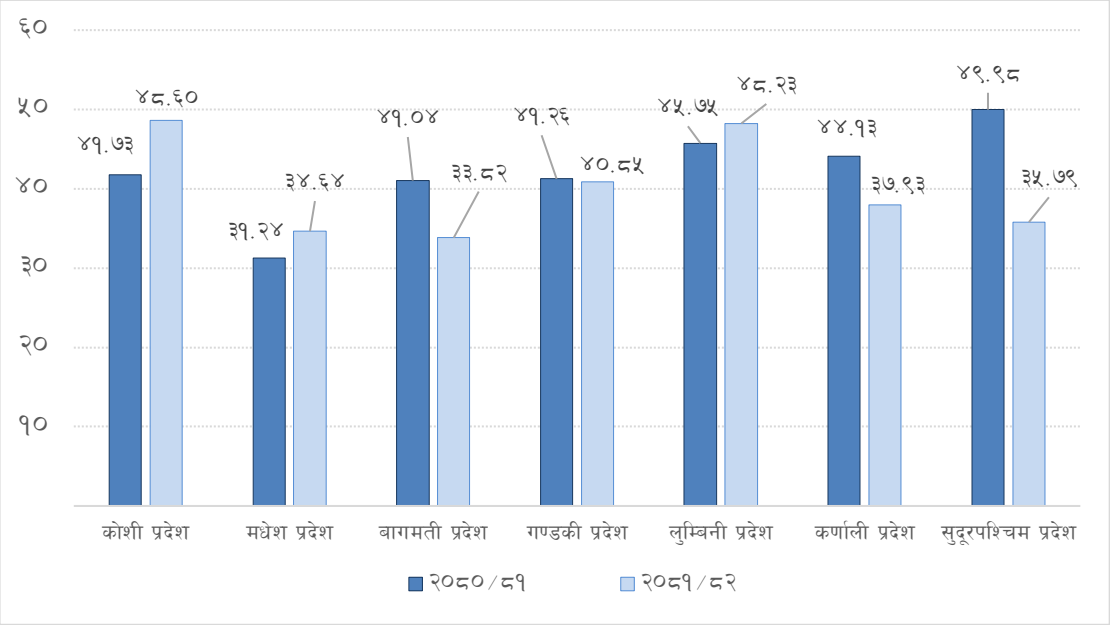
*स्रोत : उद्योग विभाग*

## ४.२ उद्योगको क्षमता उपयोग र उत्पादन

समीक्षा अवधिमा सर्वेक्षणमा समेटिएका उद्योगहरुको औसत क्षमता उपयोग ४१.११ प्रतिशत रहेको छ । गत वर्षको सोही अवधिमा उक्त उद्योगहरुको औसत क्षमता उपयोग ४२.९४ प्रतिशत रहेको थियो । सर्वेक्षणमा समेटिएका उद्योगमध्ये बिजुलीको क्षमता उपयोग ९९.९१ प्रतिशत, टायर तथा ट्यूब उत्पादन गर्ने उद्योगको क्षमता उपयोग ९५.३० प्रतिशत, आल्मुनियम उत्पादन गर्ने उद्योगको क्षमता उपयोग ८७.६१ प्रतिशत रहेको छ । यसैगरी, स्न्याक्स उत्पादन गर्ने उद्योगको क्षमता उपयोग ८७.०० प्रतिशत, प्रशोधित चिया उत्पादन गर्ने उद्योगको क्षमता उपयोग ७२.७३ प्रतिशत र चाउचाउ उत्पादन गर्ने उद्योगको क्षमता उपयोग ७०.३२ प्रतिशत रहेको छ । यससम्बन्धी विस्तृत विवरण अनुसूचीको तालिका ७ (समग्र तथा प्रदेशगत) मा प्रस्तुत गरिएको छ ।

अध्ययनले समेटेका उद्योगहरुमध्ये तोरीको तेल, भटमासको तेल, प्रशोधित दूध, पशुदाना, विस्कुट, चाउचाउ, मदिरा, वियर, हल्का पेय पदार्थ, धागो, सिन्थेटिक कपडा, प्रशोधित छाला, प्लाईउड, ईंटा, सिमेण्ट, घरेलु धातुका सामान, आल्मुनियम उत्पादन, बिजुलीका तार र केबुल, ट्रान्सफर्मर, टायर तथा ट्यूब र बिजुली आदि उत्पादन गर्ने उद्योगहरुको क्षमता उपयोग बढेको छ । त्यसैगरी, वनस्पती घ्यू, चामल, पिठो, पाउरोटी, चकलेट, स्न्याक्स, चिनी, चकलेट, प्रशोधित चिया, चुरोट, जुटका सामान, चिरेको काठ, कागज, साबुन, कंक्रीट स्टिलजन्य उत्पादन, जि.आई.पाईप, कपडाको जुत्ता, चप्पल आदि उत्पादन गर्ने उद्योगहरुको क्षमता उपयोग घटेको छ ।

चार्ट ४.१: प्रदेशगत क्षमता उपयोग (प्रतिशतमा)




*स्रोत : सर्वेक्षणमा समेटिएका उद्योगहरु*

*नोट : विभिन्न स्रोतहरुबाट तत्कालिन अवस्थाको तथ्याङ्क सङ्कलन गरिएको कारण प्रकाशित तथ्याङ्क अद्यावधिक तथ्याङ्कसँग मेल नहुनसक्ने ।*

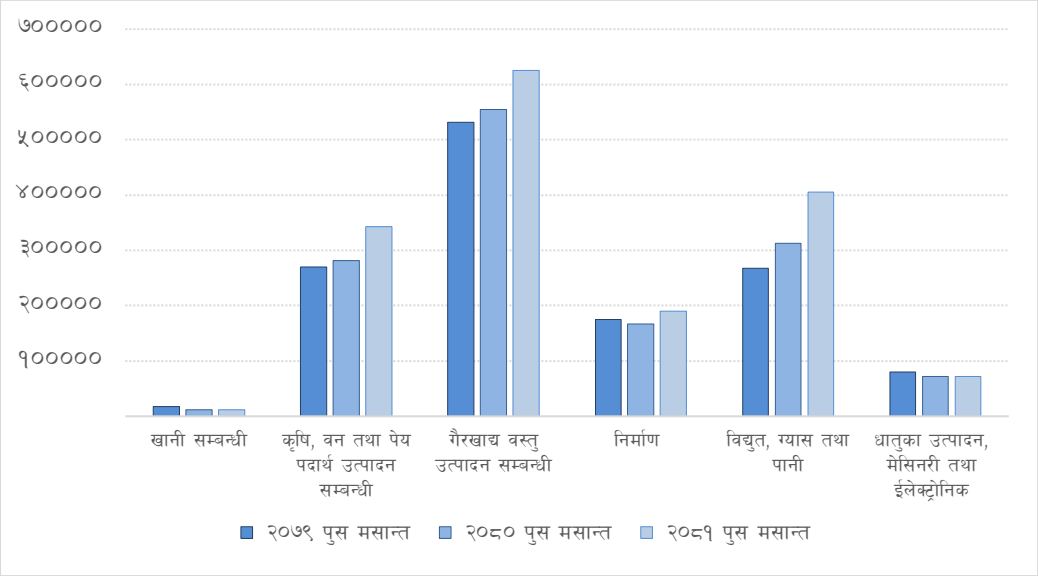
प्रदेशगत रुपमा हेर्दा उद्योगको क्षमता उपयोग कोशी प्रदेशमा सबैभन्दा बढी (४८.६० प्रतिशत) र बागमती प्रदेशमा सबैभन्दा कम (३३.८२) प्रतिशत रहेको छ ।

कोशी प्रदेशमा वनस्पति घ्यू तथा तेल, अन्य खाद्य पदार्थ, जुटका सामान, फलामको छड तथा पत्ति, सिमेन्ट, साबुन र मधेश प्रदेशमा वनस्पती घ्यू तथा तेल, हल्का पेय पदार्थ, लत्ताकपडा, सिमेन्ट, प्रशोधित छाला, औषधी, फलामको छड तथा पत्ति, स्टिलजन्य उत्पादन, अन्य रासायनिक पदार्थको उत्पादन प्रमुख रहेको छ । बागमती प्रदेशमा प्रशोधित दूध, पशुदाना, चाउचाउ, चुरोट, पेय पदार्थ, रासायनिक पदार्थ, पश्मिना, तयारी पोशाक, औषधी, सिमेन्ट, जुत्ता र गण्डकी प्रदेशमा विस्कुट, चाउचाउ, पेय पदार्थ, रासायनिक पदार्थ, सिमेन्टको उत्पादन प्रमुख रहेको छ । लुम्बिनी प्रदेशमा गहुँको पिठो, वियर, औषधी, सिमेन्ट, कंक्रिट, बिजुलीका तार र केबुल, फलामको छड तथा पत्ति, पशुदाना र कर्णाली प्रदेशमा चिरेको काठ, प्रशोधित दूधको उत्पादन प्रमुख रहेको छ । साथै, सुदूरपश्चिम प्रदेशमा गहुँको पिठो, साबुन, चिनी, रोजिन लगायतका वस्तुको उत्पादन हुने गरेको छ । यस सम्बन्धी विस्तृत विवरण अनुसूचीको तालिका ७ (समग्र तथा प्रदेशगत) मा प्रस्तुत गरिएको छ ।

## ४.३ क्षेत्रगत औद्योगिक कर्जा

२०८० पुस मसान्तको तुलनामा २०८१ पुस मसान्तमा बैंक तथा वित्तीय संस्थाले औद्योगिक क्षेत्रमा प्रवाह गरेको कर्जा १७.६६ प्रतिशतले वृद्धि भई रु.१६ खर्ब ४६ अर्ब ७० करोड पुगेको छ । गत वर्षको सोही अवधिमा यस्तो कर्जा ४.१९ प्रतिशतले बढेको थियो । कुल कर्जामध्ये औद्योगिक क्षेत्रमा प्रवाहित कर्जाको अंश ३०.३१ प्रतिशत रहेको छ । औद्योगिक कर्जामध्ये खानीसम्बन्धी उद्योगमा ०.७० प्रतिशत, कृषि, वन तथा पेय पदार्थसम्बन्धी उद्योगमा २०.८१ प्रतिशत, गैर-खाद्य वस्तु उत्पादनसम्बन्धी उद्योगमा ३७.९६ प्रतिशत, निर्माणसम्बन्धी उद्योगमा ११.५६ प्रतिशत, विद्युत् ग्यास तथा पानीसम्बन्धी उद्योगमा २४.६३ प्रतिशत र धातुका उत्पादन, मेसिनरी तथा ईलेक्ट्रोनिक सम्बन्धी उद्योगमा ४.३४ प्रतिशत कर्जा प्रवाह भएको छ ।

**चार्ट ४.२: औद्योगिक कर्जा लगानी स्थिति (रु.दश लाखमा)**




*स्रोत : बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरु*

२०८० पुस मसान्तको तुलनामा २०८१ पुस मसान्तमा बैंक तथा वित्तीय संस्थाले औद्योगिक क्षेत्रमा प्रवाह गरेको कर्जा कोशी प्रदेशमा १३.५९ प्रतिशत, मधेश प्रदेशमा १०.९७ प्रतिशत, बागमती प्रदेशमा २१.११ प्रतिशत, लुम्बिनी प्रदेशमा ९.३४ प्रतिशत, कर्णाली प्रदेशमा १४.९५ प्रतिशत र सुदूरपश्चिम प्रदेशमा ०.१४ प्रतिशतले वृद्धि भएको छ भने गण्डकी प्रदेशमा प्रवाह भएको औद्योगिक कर्जा २.२६ प्रतिशतले घटेको छ ।

सम्बन्धित प्रदेशमा रहेका बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरुबाट भएको लगानीका आधारमा औद्योगिक कर्जामध्ये बागमती प्रदेशमा सबैभन्दा बढी रु.११ खर्ब ७९ अर्ब ६ करोड (७१.६० प्रतिशत) कर्जा लगानी रहेको छ भने कर्णाली प्रदेशमा सबैभन्दा कम रु.३ अर्ब ७९ करोड कर्जा (०.२३ प्रतिशत) लगानी रहेको छ (तालिका ४.२) ।

**तालिका ४.२: प्रदेशगत औद्योगिक कर्जा**

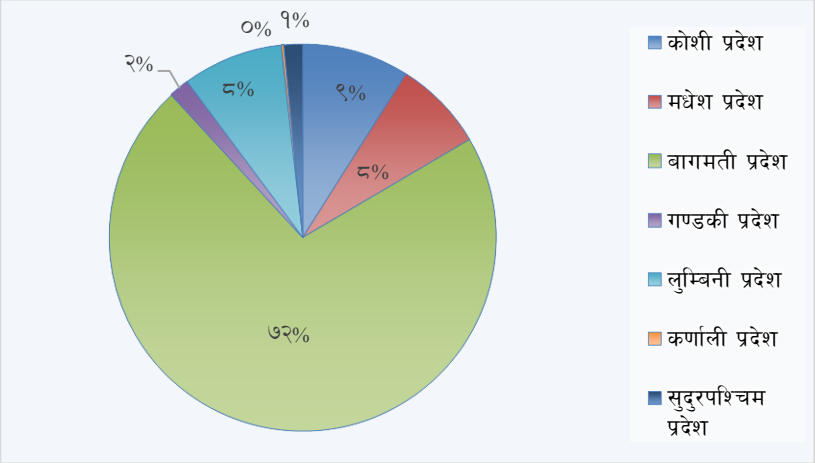
| प्रदेश | रकम (रु. दश लाखमा) | हिस्सा (प्रतिशत) |
|---|---|---|
| कोशी प्रदेश | १४७४७२.११ | ८.९६ |
| मधेश प्रदेश | १२५१३३.०१ | ७.६० |
| बागमती प्रदेश | ११७९०६१.५३ | ७१.६० |
| गण्डकी प्रदेश | २८६२७.३७ | १.७४ |
| लुम्बिनी प्रदेश | १३७३५१.७७ | ८.३४ |
| कर्णाली प्रदेश | ३७९५.६५ | ०.२३ |
| सुदूरपश्चिम प्रदेश | २५२६४.५२ | १.५३ |
| **कुल** | **१६४६७०५.९६** | **१००.००** |

*स्रोत : बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरु*

औद्योगिक कर्जामा कोशी प्रदेशमा प्रवाहित कर्जाको हिस्सा ८.९६ प्रतिशत, मधेश प्रदेशको हिस्सा ७.६० प्रतिशत, बागमती प्रदेशको हिस्सा ७१.६० प्रतिशत, गण्डकी प्रदेशको हिस्सा १.७४ प्रतिशत, लुम्बिनी प्रदेशको हिस्सा ८.३४ प्रतिशत, कर्णाली प्रदेशको हिस्सा ०.२३ प्रतिशत र सुदूरपश्चिम प्रदेशमा प्रवाहित

कर्जाको हिस्सा १.५३ प्रतिशत रहेको छ । यससम्बन्धी विस्तृत विवरण अनुसूचीको तालिका ९ (समग्र तथा क्षेत्रगत) मा प्रस्तुत गरिएको छ ।

**चार्ट ४.३: औद्योगिक कर्जामा प्रदेशगत हिस्सा**




*स्रोत : बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरु*

## ४.४ औद्योगिक क्षेत्रका चुनौती र सम्भावना

### ४.४.१. चुनौती

औद्योगिक क्षेत्र, विशेष आर्थिक क्षेत्र र औद्योगिक ग्रामको पूर्वाधार निर्माणलाई तीव्रता दिनु, स्वदेशी उत्पादनका लागि उचित बजार लगायत अन्य भौतिक पूर्वाधार उपलब्ध गराउनु, औद्योगिक उत्पादन एवम् उत्पादकत्व वृद्धि गर्नु, कृषिजन्य तथा अन्य औद्योगिक उत्पादनको लागि आवश्यक कच्चा पदार्थको आन्तरिक उत्पादन वृद्धि गरी समग्र औद्योगिक उत्पादन वृद्धि गर्नु चुनौतीपूर्ण रहेको छ । यसैगरी, अत्यावश्यक कच्चा पदार्थको आपूर्ति सहज गर्नु, उद्योगहरूलाई पूर्ण क्षमतामा सञ्चालन गर्नु, औद्योगिक पूर्वाधार एवम् मानव संसाधनको विकास गर्नु, स्वदेशी श्रमशक्तिको दक्षता अभिवृद्धि गर्नु, जनशक्ति पलायनको क्रमलाई रोकी उद्योगतर्फ आकर्षित गर्नु चुनौतीपूर्ण रहेको छ । साथै, उद्योग क्षेत्रमा स्वदेशी तथा विदेशी पुँजी र प्रविधि आकर्षित गर्नु, निर्यातयोग्य वस्तुहरुको विविधीकरण गर्नु, स्वदेशी उत्पादनको गुणस्तर वृद्धि गर्नु, बढ्दो आयातका कारण स्वदेशी उद्योग प्रतिस्थापन हुनबाट संरक्षण गर्नु तथा उद्योगहरुबाट निस्कने फोहर तथा प्रदुषणबाट मानव स्वास्थ्य तथा वातावरणमा पर्ने असरलाई कम गर्नु समेत उद्योग क्षेत्रमा देखिएका प्रमुख चुनौतीका रुपमा रहेका छन् ।

**तालिका ४.३: उद्योग क्षेत्रका प्रदेशगत चुनौतीहरु**

| प्रदेश | औद्योगिक क्षेत्रका चुनौती |
|---|---|
| कोशी प्रदेश | • पहाडी क्षेत्रमा रहेका स्थानीय उत्पादनहरु प्रशोधन गर्ने उद्योगहरुसम्म सडक पूर्वाधारको पहुँच विस्तार गर्नु ।<br>• युवा जनशक्तिको विदेश पलायन रोक्नु तथा औद्योगिक क्षेत्रमा दक्ष जनशक्तिको आपूर्ति सुनिश्चित गर्नु ।<br>• नेपालमा उत्पादन भएका निर्यातयोग्य वस्तुहरुको अन्तर्राष्ट्रिय बजार सुनिश्चत गर्नु । साथै, आन्तरिक मागमा वृद्धि गरी उद्योगहरुको क्षमता उपयोगमा सुधार गर्नु ।<br>• औद्योगिक क्षेत्रमा विद्युत् आपूर्ति सुनिश्चित गर्नु । |

| प्रदेश | औद्योगिक क्षेत्रका चुनौती |
|---|---|
| मधेश प्रदेश | • प्रमुख कृषि उत्पादनको रुपमा रहेको उखु उत्पादन तथा उखुको गुणस्तर सुधार गर्दै चिनी उत्पादनमा आत्मनिर्भर तुल्याउनु ।<br>• बजार, श्रमशक्ति लगायत भौगोलिक रुपले औद्योगिक विकासको सम्भावना बोकेको स्थानलाई औद्योगिक जोनको रुपमा विकास गर्नु ।<br>• स्थानीय औद्योगिक उत्पादनलाई प्रतिस्पर्धी बनाउन खुला सीमाना व्यवस्थित गरी अवैध व्यापार नियन्त्रण गर्नु ।<br>• उद्योगको प्रतिस्पर्धी क्षमता अभिवृद्धि गरी बाह्य उत्पादनसँग प्रतिस्पर्धा गर्न सक्ने बनाउनु ।<br>• उद्योग/व्यवसायको क्रियाकलापलाई स्वच्छ र पारदर्शी बनाई सर्वसाधारणबाट समेत ठूलो मात्रामा पुँजी परिचालन गर्न आवश्यक विश्वासको वातावरण तयार गरी संस्थागत संस्कृतिको विकास गर्नु । |
| बागमती प्रदेश | • २०८१ असोज महिनामा निरन्तर वर्षाका कारण बाढी र पहिरोले सडक पूर्वाधारमा क्षति पुग्दा कच्चा पदार्थ ढुवानी र उत्पादित बस्तुको बजारीकरणमा समस्या उत्पन्न भई उद्योगहरुको सञ्चालन खर्च बढेकोले सडकहरुको समयमै पुनर्निर्माण/स्तरोन्नति गरी ढुवानी सहज बनाउनु ।<br>• विदेश पलायन हुने युवाहरुको संख्या उल्लेख्य रहनु, आर्थिक गतिविधि अपेक्षाकृत रुपमा हुन नसक्नु, दक्ष जनशक्ति, कच्चा पदार्थ र बजारको अभाव लगायतका कारणबाट समष्टिगत माग अपेक्षित रुपमा बढन नसकेको अवस्थामा सुधार ल्याउनु ।<br>• ठूला शहरहरुमा रहेका औद्योगिक क्षेत्रहरुमा फोहोर व्यवस्थापन कठिन रहेकोले प्रस्तावित औद्योगिक क्षेत्रहरुमा साना तथा मझौला उद्योग स्थापना र सञ्चालन गर्नु ।<br>• विश्वबजारमा आपूर्तिमा असहजता र करका प्रावधानहरु लगायतका व्यवधानले कतिपय निर्यातजन्य उद्योगहरुको निकासीमा अन्यौलता देखिएकोले त्यस्ता उद्योगहरुको स्थायित्व कायम गर्नु । |
| गण्डकी प्रदेश | • उद्योगहरूलाई पूर्ण क्षमतामा सञ्चालन गर्न आवश्यक विद्युत्, कच्चा पदार्थको उपलब्धता, उचित बजार व्यवस्थापन लगायतमा सुधार गर्नु ।<br>• उद्योगको लागि आवश्यक सीपमूलक तथा दक्ष जनशक्तिको अभाव तथा पुँजी र अत्यावश्यक कच्चा पदार्थको आपूर्ति सहज गर्नु ।<br>• पर्यटन व्यवसाय तथा स्थानीयस्तरमा माग भएका खाद्य पदार्थ प्रदेशभित्रै उत्पादन गरेर स्थानीय अर्थतन्त्रलाई बढावा दिनु ।<br>• औद्योगिक क्षेत्रमा पूर्वाधारको विकास बढाउँदै जानु तथा नयाँ प्रविधिको प्रयोग गरी प्रदेशका उद्योगलाई प्रतिस्पर्धी बनाउनु ।<br>• विभिन्न प्रयोजनका लागि बढ्दो वैदेशिक पलायनले मागमा कमी देखिएको परिप्रेक्ष्यमा औद्योगिक क्षेत्रमा वैदेशिक लगानी आकर्षित गरी उत्पादन तथा रोजगारीमा वृद्धि गर्नु ।<br>• बढ्दो उत्पादन लागतले उद्योगको प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता ह्रास भई अन्तर्राष्ट्रिय उत्पादनसँग प्रतिस्पर्धा गर्न नसक्नु । सञ्चालित उद्योगलाई उत्पादन र उत्पादकत्वका दृष्टिले प्रतिस्पर्धी बनाउनु । |
| लुम्बिनी प्रदेश | • उद्योग स्थापना तथा सञ्चालन गर्न प्रदेशका सम्भावित स्थानहरुमा जग्गाको सहज प्राप्ति र गुणस्तरीय औद्योगिक पूर्वाधारको लागि सरकारी तथा निजी क्षेत्रको लगानी विस्तार गर्नु । |

| प्रदेश | औद्योगिक क्षेत्रका चुनौती |
|---|---|
| | • स्वदेशी कच्चा पदार्थमा आधारित उद्योगको स्थापना तथा सञ्चालनका लागि कच्चा पदार्थ उत्पादन बढाउँदै कच्चा पदार्थको मुल्यमा स्थिरता तथा सहज र भरपर्दो आपूर्ति व्यवस्थापन गर्नु ।<br>• औद्योगिक उत्पादनको प्रतिस्पर्धी क्षमता अभिवृद्धि तथा स्थापित उद्योगहरुको निर्वाध सञ्चालनका लागि खुला सीमाना व्यवस्थित गरी अनौपचारिक व्यापारलाई नियन्त्रण गर्नु ।<br>• खनिज स्रोतको पहिचान गरी व्यवस्थित ढंगबाट अन्वेषण, उत्खनन गर्ने र उपलब्ध खनिज पदार्थको उत्पादनका लागि नीतिगत, कानुनी तथा संरचनागत सुधार गर्नु तथा आवश्यक लगानी जुटाउने वातावरण सिर्जना गर्नु ।<br>• औद्योगिक क्षेत्रमा आवश्यक हुने दक्ष जनशक्ति उत्पादन गरी त्यस्तो जनशक्तिलाई देशभित्रका उद्योगहरुमा सम्मानपूर्ण किसिमले रोजगारी प्रदान गर्ने वातावरण सिर्जना गर्नु ।<br>• यस प्रदेशमा सञ्चालनमा रहेका औद्योगिक क्षेत्रहरु तथा भैरहवास्थित विशेष आर्थिक क्षेत्रलाई पूर्ण क्षमतामा सञ्चालन गरी आयात प्रतिस्थापन तथा निर्यातमा वृद्धि गर्नु ।<br>• वातावरणीय प्रभावको विश्लेषण गरेर मात्र उद्योग स्थापना तथा सञ्चालन गर्ने र उद्योगहरुबाट हुने प्रदुषणको उचित व्यवस्थापन गर्नु । |
| कर्णाली प्रदेश | • यस प्रदेशमा सञ्चालनमा रहेका उद्योगहरुबाट उत्पादित वस्तुहरुको लागत तथा गुणस्तर व्यवस्थापन गर्दै वस्तुहरुको प्रतिस्पर्धात्मक क्षमतामा अभिवृद्धि गर्नु ।<br>• प्रदेशका अधिकांश पहाडी तथा उच्च हिमाली जिल्लाहरुमा जडिबुटी तथा औषधीजन्य उत्पादनमा आधारित उद्योग, दैलेख जिल्लामा पेट्रोलियम खानीजन्य उद्योग र जाजरकोट जिल्लामा ग्रेनाईटको खानीजन्य उद्योग लगायत अन्य उद्योगहरु सञ्चालन गरी प्रदेशको अर्थतन्त्रमा उद्योग क्षेत्रको योगदानलाई अभिवृद्धि गर्नु ।<br>• प्रदेशका अधिकांश पहाडी तथा उच्च हिमाली जिल्लाहरुमा जडिबुटी तथा औषधीजन्य उत्पादनमा आधारित उद्योग, दैलेख जिल्लामा पेट्रोलियम खानीजन्य उद्योग र जाजरकोट जिल्लामा ग्रेनाईटको खानीजन्य उद्योग लगायत अन्य उद्योगहरु सञ्चालन गरी प्रदेशको अर्थतन्त्रमा उद्योग क्षेत्रको योगदानलाई अभिवृद्धि गर्नु । |
| सुदूरपश्चिम प्रदेश | • सञ्चालनमा रहेका अधिकांश उद्योगहरु पूर्ण क्षमतामा सञ्चालन हुन नसकेको अवस्थामा उद्योगहरुलाई पूर्णरुपमा सञ्चालन गर्ने वातावरणको सिर्जना गरी औद्योगिक उत्पादनमा वृद्धि गर्नु ।<br>• उत्पादित वस्तुहरुको लागत तथा गुणस्तर व्यवस्थापन गर्दै वस्तुहरुको प्रतिस्पर्धात्मक क्षमतामा अभिवृद्धि गरी आयात प्रतिस्थापन गर्नु ।<br>• कमजोर औद्योगिक पूर्वाधार, दक्ष जनशक्तिको अभाव, प्रविधि ग्रहण गर्ने क्षमताको कमी, न्यून उत्पादकत्व, निर्यातयोग्य वस्तुहरुमा विविधीकरणको कमी आदि उद्योग सञ्चालनका लागि चुनौतीको रुपमा रहेको ।<br>• स्थानीय रुपमा उपलब्ध स्रोत तथा साधनहरुको उपयोग गरी प्रदेशका दुर्गम क्षेत्रहरुमा लगानी वृद्धि गरी उद्योग तर्फ लगानी आकर्षित गर्नु ।<br>• भारतसँगको खुला सीमानाकाको कारण हुन सक्ने सम्भावित भन्सार छली, अवैध पैठारी जस्ता गतिविधिहरू नियन्त्रण गरी स्थानीय उत्पादन, व्यवसाय तथा उद्योग प्रवर्द्धन गर्नु । |

### ४.४.२. सम्भावना

कृषि तथा पशुपालनमा आधारित उद्योगको प्रचुर सम्भावना, सिमेन्ट उत्पादनका लागि आवश्यक गुणस्तरीय चुनढुङ्गाको उपलब्धता, अत्याधुनिक प्रविधिको प्रयोग, विशेष आर्थिक क्षेत्र र औद्योगिक ग्रामको पूर्वाधार निर्माणमा सरकारको प्राथमिकता आदिले उद्योग क्षेत्र विकासको प्रचुर सम्भावना रहेको छ । त्यसैगरी, प्रधानमन्त्री नेपाली उत्पादन तथा उपभोग अभिवृद्धि कार्यक्रम, राष्ट्रिय उत्पादन र रोजगार प्रर्वद्धन कार्यक्रम, सरकारी निकायमा स्वदेशमा उत्पादित वस्तुहरु प्रयोग गर्ने व्यवस्था, निजी क्षेत्रसँग सरकारको सहकार्य जस्ता नीतिगत व्यवस्थाले स्वदेशी उद्योगहरु फस्टाउने सम्भावना रहेको छ । साथै, सहज बैंकिङ पहुँच, न्यून व्याजदर, बैंक तथा वित्तीय संस्थामा रहेको लगानीयोग्य रकम, बढ्दो शहरीकरण तथा डिजिटल प्रविधिको प्रयोगका कारण औद्योगिक उत्पादनको विस्तार हुने समेत सम्भावना रहेको छ ।

**तालिका ४.४: उद्योग क्षेत्रका प्रदेशगत सम्भावनाहरु**

| प्रदेश | औद्योगिक क्षेत्रका सम्भावना |
|---|---|
| कोशी प्रदेश | • ठुला कृषिफर्महरु सञ्चालनमा आउने क्रम बढेसँगै कच्चा पदार्थको आपूर्ति सुनिश्चित हुन गई कृषिजन्य उत्पादन प्रशोधन गर्ने उद्योगहरुको स्थापना हुन सक्ने ।<br>• नेपालबाट भारतमा निर्यात हुने विभिन्न १० खाद्य समूह अन्तर्गत पर्ने वस्तुको गुणस्तर परीक्षणलाई भारतले पारस्परिक मान्यता दिने भएकोले सो समूह अन्तर्गत पर्ने वस्तुको उत्पादन तथा निर्यातमा वृद्धि हुन सक्ने ।<br>• सरकारले शिक्षक तथा कर्मचारीहरुको पोशाकमा ढाका कपडा अनिवार्य गर्ने योजनाले ढाका कपडा उद्योगहरुको संरक्षण र प्रवर्द्धन हुने ।<br>• यस क्षेत्रबाट बंगलादेश र भुटान निर्यातको सम्भावना पहिचान भएका वस्तुहरूको निर्यातको लागि पहल गर्न सके उद्योगको उत्पादन र निर्यातमा उल्लेखनीय मात्रामा वृद्धि हुने । |
| मधेश प्रदेश | • मधेश प्रदेश भारतको सीमावर्ती क्षेत्रमा भएकाले भारतको ठूलो बजारमा व्यापार र उद्योग विस्तार गर्न सकिने ।<br>• बढी जनघनत्व र बढी जनसंख्या भएको प्रदेश भएकोले सस्तो श्रम आपूर्ति हुने हुँदा मधेश प्रदेशमा उद्योगहरू स्थापना गरी उत्पादन बढाउन सकिने ।<br>• मधेश प्रदेश सांस्कृतिक, धार्मिक र ऐतिहासिक विशेषताले भरिपूर्ण रहेकोले सोसँग सम्बन्धित उद्योगहरु (जस्तैः हस्तकला, होटल) विस्तार गर्न सकिने ।<br>• धान, गहुँ, मकै जस्ता अन्न बालीको प्रशस्त उत्पादन हुनुको साथै सुगम भौगोलिक संरचना रहेकोले यो प्रदेशमा खाद्य प्रशोधन उद्योगहरू स्थापना गर्न सकिने । |
| बागमती प्रदेश | • ब्याजदर घटिरहेको अवस्थामा उद्योग व्यवसायीहरुले बैंक तथा वित्तीय संस्थाबाट थप कर्जा उपयोग गर्ने वातावरण सिर्जना गरेमा औद्योगिक उत्पादन र रोजगारी बढ्न सक्ने ।<br>• पूर्वाधार निर्माणको कामलाई द्रुततर गतिमा अगाडि बढाउन सकेमा फलाम, सिमेन्ट, इँट्टा लगायतका निर्माण सम्बन्धी उद्योगहरुको कारोबार बढ्न सक्ने ।<br>• विदेशबाट फर्किएका नेपालीहरुको सीप अनुसारको व्यवसाय सञ्चालनमा प्रोत्साहित गरी उत्पादन र रोजगारी अभिवृद्धि हुन सक्ने ।<br>• यस प्रदेशमा हिमाली भेगको पानी र जडिबुटी प्रशोधन/ब्राण्डिङ्ग गरी बिक्री वितरण गर्ने निर्यात उद्योगहरुको क्षमता विस्तार तथा थप उद्योग स्थापना गरी निर्यात गर्न सकिने । |

| प्रदेश | औद्योगिक क्षेत्रका सम्भावना |
|---|---|
| | • कागज, प्लाष्टिक, व्याट्रीको लिड, फलाम लगायतका स्क्र्याप सङ्कलन गरी व्यवस्थापन गर्ने तथा त्यस्ता स्क्र्यापलाई कच्चा पदार्थ बनाई उत्पादन गर्ने उद्योगलाई ग्रिन उद्योगको मान्यता दिई स्थापना तथा सञ्चालनमा प्रोत्साहित गर्ने र स्थानीय तहबाट पनि त्यस्ता उद्योगहरुलाई करमार्फत् सहुलियत दिन सकिएमा यस्ता उद्योग स्थापना भई शहरी फोहोर व्यवस्थापन सहज हुने । |
| गण्डकी प्रदेश | • नेपाल सरकारले आ.व. २०८१/८२ को बजेटमा समावेश गरेको गण्डकी आर्थिक त्रिभुज परियोजना, "मेक इन नेपाल र मेड इन नेपाल" अभियान तथा विभिन्न उद्योगहरुको लागि आवश्यक सडक, विद्युत्, प्रसारण लाइन र इन्टरनेट सेवा लगायतका पूर्वाधारको विकासको प्रभावकारी कार्यान्वयन भएमा यस प्रदेशमा औद्योगिक क्षेत्रको विकास गर्न सकिने ।<br>• स्वदेशी उत्पादनको प्रयोगलाई प्राथमिकतामा राख्ने तथा सरकारी एवम् गैरसरकारी निकायमा हुने आवश्यक सामग्रीको प्रयोगमा स्वदेशी उत्पादनलाई बढावा दिन सके स्वदेशी उत्पादनमा थप वृद्धि हुने ।<br>• कृषि क्षेत्र तथा स्थानीय स्रोत, साधन र सीपमा आधारित औद्योगिक उत्पादनमा जोड दिई औद्योगिक उपजको निर्यात प्रवर्द्धन तथा आयात प्रतिस्थापन गर्न सकिने ।<br>• गण्डकी प्रदेश पर्यटकीय राजधानी हुनुका साथै यस प्रदेशमा थुप्रै पर्यटकीय गन्तव्य समेत रहेको हुँदा बढ्दो पर्यटनले माग गर्ने खाद्य सामाग्री र अन्य उत्पादनको मागलाई पूर्ति गर्न कृषि तथा कृषिमा आधारित उद्योगको विकास गर्न सकिने । |
| लुम्बिनी प्रदेश | • पूर्व-पश्चिम राजमार्ग, हुलाकी राजमार्ग र ती मार्गहरुबाट उत्तर दक्षिण जोडने फराकिला सडकलगायत संघीय राजधानी काठमाडौ तथा पहाडी जिल्लाहरू जोड्ने सडक सञ्जाल रहेकोले यहाँ दूध, माछा, मासु, अन्न जस्ता कृषिमा आधारित उद्योगहरू विकास हुने ।<br>• धान, गहुँ, मकै जस्ता अन्न बाली तथा कफी, तोरी, अदुवा जस्ता नगदे बालीको प्रशस्त उत्पादन हुनुको साथै सुगम भौगोलिक संरचना रहेकोले यो प्रदेशमा खाद्य प्रशोधन उद्योगहरूको विकास हुन सक्ने ।<br>• स्वदेशी तथा भारतीय बजारमा समेत अत्यधिक माग हुने रोजिनको मुख्य कच्चा पदार्थ खोटा लुम्बिनी प्रदेशको स्थानीय तथा सामुदायिक वन क्षेत्रमा सल्लाका रुखहरुबाट प्रशस्त प्राप्त हुने भएकाले रोजिन उद्योगहरु विकास हुन सक्ने ।<br>• भारतसँगको खुला सिमाना, यातायात तथा ढुवानीमा सहजता र ठुलो बजार भएका कारण यस प्रदेशमा उत्पादित बस्तुहरुलाई लेबलिङ तथा ब्राण्डिङ गरी निर्यात गर्न सकिने ।<br>• यस प्रदेशका पहाडी र हिमाली जिल्लाहरुमा उत्पादन हुने जडिबुटीहरु प्रशोधन गर्ने उद्योगहरु सञ्चालन गरी रोजगारी वृद्धि तथा विदेशतर्फ निर्यात गर्न सकिने ।<br>• यस प्रदेशमा पाइने चुनढुङ्गाको गुणस्तर राम्रो भएकाले सिमेन्ट तथा क्लिंकर उत्पादन गरी सिमावर्ती भारतीय बजारमा निर्यात गर्ने गरिएकोमा उपयुक्त वातावरण तयार गरी थप निर्यात गर्न सकिने । |
| कर्णाली प्रदेश | • प्रदेशभित्र उत्पादन हुने फलफूल जस्तैः स्याउ, सुन्तला, ओखर त्यसैगरी, कृषि उपज जस्तैः मार्सी चामल, चिनो, कागुनो, जडीबुटी (यार्सागुम्बा, पाँचऔंलें) लाई ब्राण्डिङ गरी स्वदेश तथा विदेशमा विक्री गर्न सकेमा उत्पादनमा |

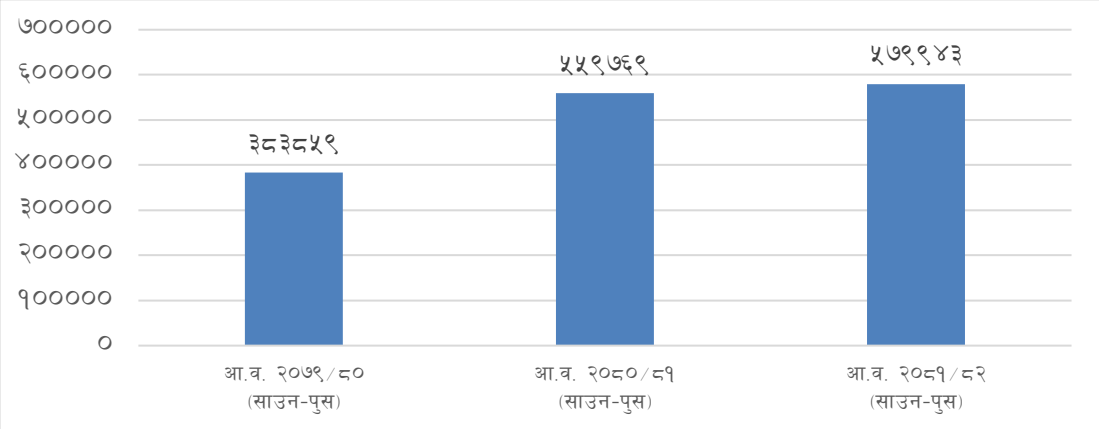
| प्रदेश | औद्योगिक क्षेत्रका सम्भावना |
|---|---|
| | आत्मनिर्भर हुन सकिने साथै रोजगारी सिर्जना गर्न सकिने सम्भावना रहेको छ ।<br>• कृषि, उद्योग र सेवा क्षेत्रको पूर्वाधार विकास भइनसकेको यस प्रदेशमा कृषि र सेवा क्षेत्रसँग सम्बन्धित उद्योगहरु (साना तथा मझौला समेत) सञ्चालन गर्न सकिने सम्भावना रहेको छ ।<br>• आवश्यक भौतिक पूर्वाधार (बाटो, सञ्चार, विजुली) निर्माणको विस्तार भएमा उपलब्ध श्रम तथा औद्योगिक कच्चा पदार्थ (जडीबुटी, अल्लो) पर्याप्त मात्रामा उपलब्ध भएकोले यससँग सम्बन्धित उद्योगहरु स्थापनाको सम्भावना रहेको छ ।<br>• यस प्रदेशमा ऊर्जामूलक, पर्यटन, खानीजन्य, कृषि तथा पशुपन्छीजन्य, जडिबुटीजन्य र वन पैदावारजन्य उद्योगको प्रचुर सम्भावना भएकोले यस्ता उद्योगहरुको स्थापना, विकास र विस्तार गरी उच्च रोजगारी सिर्जना गर्न सकिने सम्भावना रहेको छ ।<br>• पूर्वाधार विकासमा सरकारको लगानी बढदै जानु, प्रदेशमा नै दक्ष जनशक्ति तयार हुनुका साथै युवाहरु उद्योगहरुप्रति आकर्षित हुदै जानु जस्ता सम्भावना रहेका छन् । |
| सुदूरपश्चिम प्रदेश | • सुदूरपश्चिम प्रदेशमा कृषि तथा पशुपन्छीजन्य, जडिबुटीजन्य र वन पैदावारजन्य उद्योगको सम्भावना रहेकोले यससँग सम्बन्धित उद्योगहरुको स्थापना गरी Agri-business Linkage मार्फत प्रदेशको विकास गर्न सकिने ।<br>• प्रदेशमा स्थानीय उत्पादन र स्रोत साधनमा आधारित घरेलु, साना तथा मझौला उद्योगहरु सञ्चालन गर्न सकिने ।<br>• कैलाली र कञ्चनपुर जिल्ला कृषि उत्पादनका लागि उर्वर भएका कारण कृषिमा आधारित उद्योगहरु (विशेषतः धान, गहुँ, दलहन तथा नगदेबाली) को स्थापना गर्न सकिने ।<br>• युवा उद्यमशीलता विकासका लागि तालिममार्फत दक्ष औद्योगिक जनशक्ति उत्पादनका साथै प्रदेशमा रहेका युवाहरुलाई उद्यम व्यवसायतर्फ प्रेरित गर्न सकिने । |

# परिच्छेद ५
# सेवा क्षेत्र

## ५.१ पर्यटन

आर्थिक वर्ष २०८१/८२ को साउनदेखि पुससम्ममा ५ लाख ७९ हजार ९ सय ४३ जना पर्यटकको आगमन भएको छ। गत वर्षको सोही अवधिमा ५ लाख ५९ हजार ७ सय ६९ जना पर्यटकको आगमन भएको थियो।

**चार्ट ५.१: पर्यटक आगमन संख्या**




*स्रोत : नेपाल राष्ट्र बैंक।*
*नोट: अगष्ट देखि जनवरीसम्मको तथ्याङ्कलाई आधार मानिएको।*

२०८१ साउनदेखि पुस मसान्तसम्ममा अध्ययनमा समेटिएका होटलहरुको औसत क्षमता उपयोग (अकुपेन्सी रेट) ४३.९३ प्रतिशत रहेको छ। २०८० साउनदेखि पुस मसान्तसम्ममा यस्तो क्षमता उपयोग औसतमा ४५.३० प्रतिशत रहेको थियो। समीक्षा अवधिमा कोशी प्रदेशको होटलहरुको औसत क्षमता उपयोग सबैभन्दा धेरै ५९.२८ प्रतिशत रहेको छ भने सबैभन्दा कम लुम्बिनी प्रदेशको अकुपेन्सी रेट ३१.९२ प्रतिशत रहेको छ।

**तालिका ५.१: होटलहरुको औसत क्षमता उपयोग**

| प्रदेश | आ.व. २०७९/८० (साउन-पुस) | आ.व. २०८०/८१ (साउन-पुस) | आ.व. २०८१/८२ (साउन-पुस) |
|---|---|---|---|
| कोशी प्रदेश | ५४.४६ | ६७.४९ | ५९.२८ |
| मधेश प्रदेश | ३४.०१ | ३५.३३ | ३३.६६ |
| बागमती प्रदेश | ३१.६२ | ५०.६० | ५१.३८ |
| गण्डकी प्रदेश | ३०.४२ | ३४.०८ | ३३.५८ |
| लुम्बिनी प्रदेश | २६.५१ | २६.८४ | ३१.९२ |
| कर्णाली प्रदेश | ५७.१९ | ५६.८९ | ५८.३८ |
| सुदुरपश्चिम प्रदेश | ३८.२२ | ४५.८६ | ३९.३२ |
| **औसत क्षमता उपयोग** | **३८.९२** | **४५.३०** | **४३.९३** |

*स्रोत: सर्वेक्षणमा समेटिएका होटलहरु (२०८१)।*

**बक्स नं. ३: इन्द्र सरोवर एक आकर्षक पर्यटकीय स्थल**

बागमती प्रदेशको मकवानपुर जिल्लामा अवस्थित सुन्दर इन्द्र सरोवर ताल काठमाडौंबाट करिब ४० किलोमिटर टाढा रहेको मानवनिर्मित ताल हो । नेपालको एकमात्र जलाशययुक्त जलविद्युत आयोजनाको रुपमा परिचित कुलेखानी जलविद्युत आयोजना यसै तालमा आधारित भएर निर्माण गरिएको हो । विद्युतीय उत्पादन गर्ने मुख्य उद्देश्यले निर्मित उक्त ताल पर्यटकीय गन्तव्यको रुपमा विकसित हुदै गएको छ ।



*सौजन्यः रचना पाण्डे*

बाह्रै महिना घुम्न सकिने इन्द्र सरोवर तालमा मुख्यतया चैतदेखि जेठ र असोजदेखि मंसिरसम्मको समयमा आन्तरिक र बाह्य पर्यटकहरुको भिड लाग्ने गरेको छ । काठमाडौंबाट नजिक र सहजरुपमा पुग्न सकिने यो ताल प्रकृतिप्रेमीहरूका लागि उपयुक्त गन्तव्यको रुपमा स्थापित रहेको छ । यस क्षेत्रको विकास तथा विस्तारका लागि निजी तथा स्थानीयस्तरको सहकार्यबाट पर्यटकीय पूर्वाधारको विकास तथा विविध पर्यटकीय गतिविधिहरू (जस्तैः डुङ्गा सयर) सञ्चालनमा रहेका छन् । शान्त वातावरण र प्राकृतिक सौन्दर्यले भरिपूर्ण यो ताल काठमाडौं उपत्यकाको कोलाहल र तनावबाट मुक्त हुन उपयुक्त स्थानको रुपमा परिचित हुन थालेको छ ।

इन्द्र सरोवर तालको वरिपरि रहेका स्थानीय होटल, रेष्टुरेन्ट तथा होमस्टेहरुले स्थानीयस्तरबाट उत्पादित कृषि उपजबाट तयार गरिएका परिकार एवम् ताजा माछाका विभिन्न परिकारहरले समेत पर्यटकहरुलाई आकर्षित गर्ने गरेको पाइन्छ । काठमाडौंबाट फर्पिङ, सिस्नेरी, चित्लाङ हुँदै पुग्न सकिने यो ताल पदयात्रा (चित्लाङ-मार्खु-कुलेखानी-फर्पिङ) को आकर्षक स्थलको रुपमा समेत विकास हुदै गएको छ । यस तालको विकास, प्रवर्द्धन, संवर्द्धन तथा प्रचारप्रसारमार्फत स्थानीयको जिवनयापनमा पनि सकारात्मक परिवर्तन आउने देखिन्छ ।

*स्रोत : स्थलगत सर्वेक्षण ।*

## ५.२ सार्वजनिक निर्माण तथा रियलस्टेट

समीक्षा अवधिमा घरजग्गा रजिष्ट्रेसन संख्या ६.२६ प्रतिशतले घटेर २ लाख २३ हजार १ सय ४६ पुगेको छ भने घरजग्गा रजिष्ट्रेशनबाट प्राप्त हुने राजस्व २.९३ प्रतिशतले बढेर रु.१० अर्ब ३९ करोड ७ लाख पुगेको छ । समीक्षा अवधिमा घर/भवन नक्सा पास संख्या ४.९१ प्रतिशतले घटेर १४ हजार ९ सय ९२ पुगेको छ (अनुसूची तालिका ११ क) ।

**तालिका ५.२: सार्वजनिक निर्माण तथा रियलस्टेट**

| प्रदेश | घरजग्गा रजिष्ट्रेसन संख्या | घर/भवन स्थायी नक्सा पास संख्या | घरजग्गा रजिष्ट्रेसन राजस्व (रु.दश लाखमा) | हिस्सा (प्रतिशत) | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | घरजग्गा रजिष्ट्रेसन | घर/भवन स्थायी नक्सा पास | घरजग्गा रजिष्ट्रेसन राजस्व |
| कोशी प्रदेश | ४५७५१ | २३०५ | १३१६.५६ | २०.५० | १५.३७ | १२.६६ |
| मधेश प्रदेश | ५३८९३ | १८५४ | ४०८.६४ | २४.१५ | १२.३७ | ३.९३ |
| बागमती प्रदेश | ४३०१४ | ५५९६ | ६०१८.६५ | १९.२८ | ३७.३३ | ५७.८८ |
| गण्डकी प्रदेश | १३२६४ | ११६४ | ८२०.१३ | ५.९४ | ७.७६ | ७.८९ |
| लुम्बिनी प्रदेश | ४७६८५ | २३४९ | १२९६.०५ | २१.३७ | १५.६७ | १२.४६ |
| कर्णाली प्रदेश | ८१५१ | १००९ | १४०.८९ | ३.६५ | ६.७३ | १.३५ |
| सुदूरपश्चिम प्रदेश | ११३८८ | ७१५ | ३९७.०३ | ५.१० | ४.७७ | ३.८२ |
| **कुल** | **२२३१४६** | **१४९९२** | **१०३९७.९५** | **१००** | **१००** | **१००** |

*स्रोत : भूमि व्यवस्था तथा अभिलेख विभाग, महानगरपालिका/उप-महानगरपालिका/नगरपालिका कार्यालय ।*

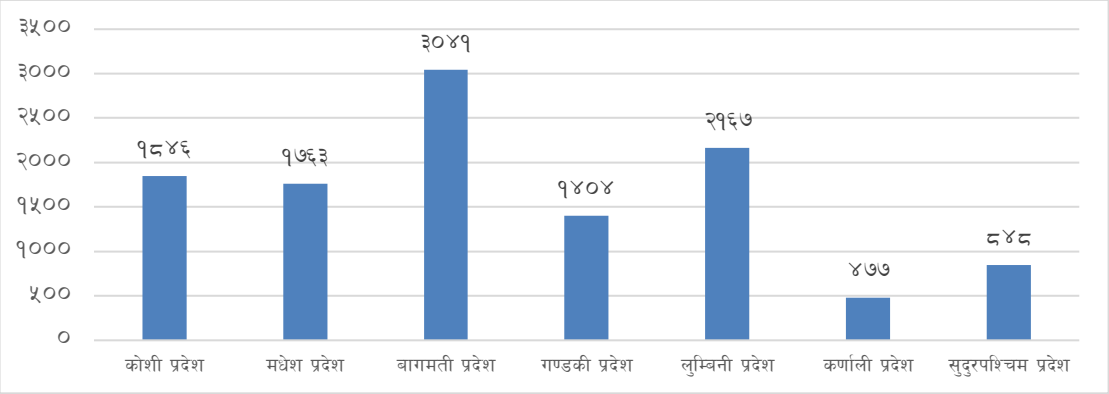
प्रदेशगतरुपमा घरजग्गा रजिष्ट्रेसन संख्या सबैभन्दा बढी मधेश प्रदेशमा २४.१५ प्रतिशत रहेको छ भने सबैभन्दा कम कर्णाली प्रदेशमा ३.६५ प्रतिशत रहेको छ । यसैगरी, घरजग्गा रजिष्ट्रेशन वापतको राजस्व सबैभन्दा धेरै बागमती प्रदेशले ५७.८८ प्रतिशत सङ्कलन गरेका छन् भने सबैभन्दा कम कर्णाली प्रदेशले

जम्मा १.३५ प्रतिशत सङ्कलन गरेका छन् । समीक्षा अवधिमा बागमती प्रदेशमा सबैभन्दा बढी ३७.३३ प्रतिशत घर/भवन स्थायी नक्सा पास भएका छन भने सुदूरपश्चिम प्रदेशमा सबैभन्दा कम ४.७७ प्रतिशत घर/भवन स्थायी नक्सा पास भएका छन् ।

## ५.३ वित्तीय सेवा

२०८१ पुस मसान्तसम्ममा वाणिज्य बैंकका ५,०७८, विकास बैंकका १,१३२, वित्त कम्पनीका २९१, लघुवित्त वित्तीय संस्थाका ५०४४ गरी जम्मा ११,५४५ शाखा सञ्चालनमा रहेका छन् । यसमध्ये बागमती प्रदेशमा सबैभन्दा बढी ३,०४१ शाखाहरु तथा कर्णाली प्रदेशमा सबैभन्दा कम ४७७ शाखाहरु सञ्चालनमा रहेका छन् । वित्तीय सेवासम्बन्धी विस्तृत विवरण अनुसूचीको तालिका १२ मा प्रस्तुत गरिएको छ ।

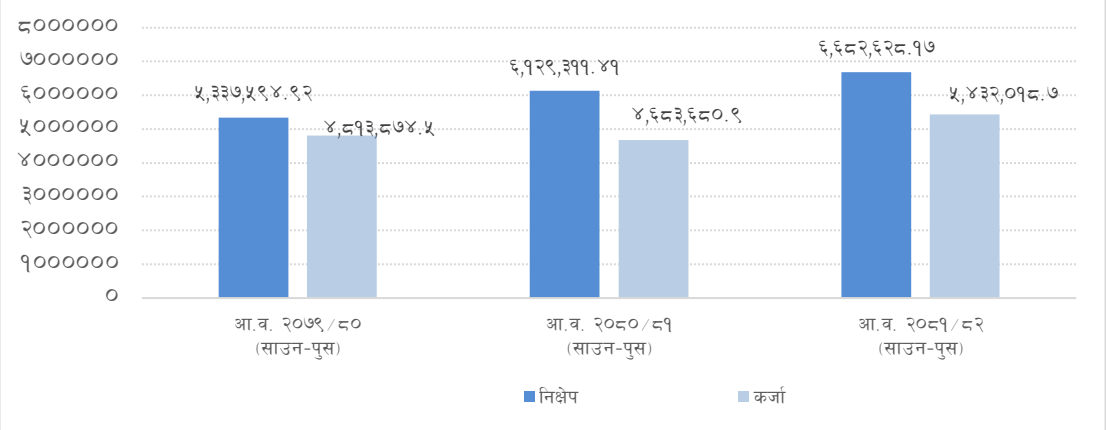
**चार्ट ५.२: बैंक तथा वित्तीय संस्थाका शाखा संख्या**




*स्रोत : बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरु*

२०८१ पुस मसान्तसम्म बैंक तथा वित्तीय संस्थाले सङ्कलन गरेको कुल निक्षेप २०८० पुस मसान्तको तुलनामा ९.०३ प्रतिशतले वृद्धि भई रु.६६ खर्ब ८२ अर्ब ६२ करोड पुगेको छ । गत वर्षको सोही अवधिमा यस्तो निक्षेप १४.८३ प्रतिशतले वृद्धि भई रु.६१ खर्ब २९ अर्ब ३१ करोड पुगेको थियो । २०८० पुस मसान्तको तुलनामा बैंक तथा वित्तीय संस्थाले प्रवाह गरेको कर्जा २०८१ पुस मसान्तमा १५.९८ प्रतिशतले वृद्धि भई रु.५४ खर्ब ३२ अर्ब १ करोड पुगेको छ । अघिल्लो वर्ष यस्तो कर्जामा २.७० प्रतिशतले ह्रास आई रु.४६ खर्ब ८३ अर्ब ६८ करोड पुगेको थियो । २०८१ पुस मसान्तमा कुल कर्जा र कुल निक्षेप अनुपात ८१.२९ प्रतिशत रहेकोमा २०८० पुस मसान्तमा ७६.४१ प्रतिशत रहेको थियो ।

**चार्ट ५.३: निक्षेप तथा कर्जा स्थिति (रु.दश लाखमा)**




*स्रोत : बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरु*

२०८१ पुस मसान्तसम्ममा बैंक तथा वित्तीय संस्थाले परिचालन गरेको कुल निक्षेपमा बागमती प्रदेशबाट परिचालन गरिएको निक्षेपको अंश सबैभन्दा धेरै ६६.९६ प्रतिशत रहेको छ भने सबैभन्दा कम कर्णाली प्रदेशको १.११ प्रतिशत रहेको छ। त्यसैगरी, बैंक तथा वित्तीय संस्थाबाट प्रवाहित कुल कर्जाको सबैभन्दा बढी कर्जा बागमती प्रदेशमा ५९.३० प्रतिशत प्रवाह भएको छ भने सबैभन्दा कम कर्जा कर्णाली प्रदेशमा १.०९ प्रतिशत प्रवाह भएको छ। निक्षेप तथा कर्जासम्बन्धी विस्तृत विवरण अनुसूचीको तालिका १३ मा प्रस्तुत गरिएको छ।

**तालिका ५.३: निक्षेप तथा कर्जा स्थिति**

| प्रदेश | निक्षेप (रु.दश लाखमा) | कर्जा (रु.दश लाखमा) | हिस्सा (प्रतिशत) | |
|---|---|---|---|---|
| | | | निक्षेप | कर्जा |
| कोशी प्रदेश | ४९२,५१५.५१ | ५८५,९९८.१३ | ७.३७ | १०.७९ |
| मधेश प्रदेश | ३५३,४२४.५७ | ४८८,३८६.६१ | ५.२९ | ८.९९ |
| बागमती प्रदेश | ४,४७४,६०४.८० | ३,२२१,३८६.५२ | ६६.९६ | ५९.३० |
| गण्डकी प्रदेश | ५५५,३८७.८१ | ३४९,६३२.८९ | ८.३१ | ६.४४ |
| लुम्बिनी प्रदेश | ५८७,६२७.८१ | ५७४,१२३.४४ | ८.७९ | १०.५७ |
| कर्णाली प्रदेश | ७४,२८०.०६ | ५९,२२४.८६ | १.११ | १.०९ |
| सुदूरपश्चिम प्रदेश | १४४,७८७.६२ | १५३,२६६.२३ | २.१७ | २.८२ |
| **कुल** | **६,६८२,६२८.१७** | **५,४३२,०१८.६९** | **१००** | **१००** |

*स्रोत: बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरु*

## ५.४ सेवा क्षेत्र कर्जा

२०८१ पुस मसान्तसम्म बैंक तथा वित्तीय संस्थाले सेवा क्षेत्रमा प्रवाह गरेको कर्जा २०८० पुस मसान्तको तुलनामा १८.१६ प्रतिशतले बढेर रु.३३ खर्ब ६७ अर्ब ५८ करोड पुगेको छ। गत वर्षको सोही अवधिमा यस्तो कर्जा ५.६६ प्रतिशतले घटेर रु.२८ खर्ब ४९ अर्ब ९६ करोड पुगेको थियो। कुल कर्जामध्ये सेवा क्षेत्रमा प्रवाहित कर्जाको अंश २०८१ पुस मसान्तमा ६१.९९ प्रतिशत रहेको छ। सेवा क्षेत्रमा प्रवाह भएको कर्जामध्ये थोक तथा खुद्रा विक्रेता उपक्षेत्रमा सबैभन्दा बढी (३१.१८ प्रतिशत) कर्जा प्रवाह भएको छ भने सबैभन्दा कम (२.२५ प्रतिशत) शिक्षा उपक्षेत्रमा कर्जा प्रवाह भएको छ।

**तालिका ५.४: सेवा क्षेत्रमा प्रवाहित कर्जाको स्थिति (रु.दश लाखमा)**

| विवरण | आ.व. २०७९/८० (साउन-पुस) | आ.व. २०८०/८१ (साउन-पुस) | आ.व. २०८१/८२ (साउन-पुस) | वृद्धिदर | | हिस्सा (प्रतिशत) | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | गत अवधि | समीक्षा अवधि | गत अवधि | समीक्षा अवधि |
| थोक तथा खुद्रा विक्रेता | ९९०४७०.३७ | ९२४७०५.९९ | १०५०१३३.३० | -६.६४ | १३.५६ | ३२.४५ | ३१.१८ |
| वित्त, बीमा तथा अचल सम्पत्ति | २०३०७१.१४ | १९४५९८.८५ | २३६३९८.८१ | -४.१७ | २१.४८ | ६.८३ | ७.०२ |
| पर्यटन | २०३८८४.५९ | २०३१२०.७३ | २५५६०६.६४ | -०.३७ | २५.८४ | ७.१३ | ७.५९ |
| अन्य सेवा | ६८०१०.३९ | ७४६५८.०५ | २३९५९७.७८ | ९.७७ | २२०.९३ | २.६२ | ७.११ |
| स्वास्थ्य र अन्य सामाजिक कार्य सम्बन्धी | ५९०१८.५२ | ६१६६३.५२ | ८४१४७.८३ | ४.४८ | ३६.४६ | २.१६ | २.५० |
| शिक्षा | ८४२१०.५४ | १००३१८.५१ | ७५८६४.५५ | १९.१३ | -२४.३८ | ३.५२ | २.२५ |
| रियल स्टेट | १६३८३६.५८ | २२२८६९.९६ | १२३४३१.०२ | ३६.०३ | -४४.६२ | ७.८२ | ३.६७ |
| उपभोग्य कर्जा | ८८९४७३.८१ | ८३१३०८.२७ | १०१७०७०.५० | -६.५४ | २२.३५ | २९.१७ | ३०.२० |
| अन्य | ३५८९८४.८० | २३६७१८.१२ | २८५३३४.९८ | -३४.०६ | २०.५४ | ८.३१ | ८.४७ |
| **जम्मा** | **३०२०९६०.७३** | **२८४९९६२.००** | **३३६७५८५.४१** | **-५.६६** | **१८.१६** | **१००.००** | **१००.००** |

*स्रोत: बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरु*

समीक्षा अवधिमा बैंक तथा वित्तीय संस्थाले सेवा क्षेत्रमा प्रवाह गरेको कर्जामध्ये सबैभन्दा बढी ५५.५३ प्रतिशत सेवा क्षेत्र कर्जा बागमती प्रदेशमा प्रवाह भएको छ भने सबैभन्दा कम १.४७ प्रतिशत कर्जा कर्णाली प्रदेशमा प्रवाह भएको छ।

**तालिका ५.५: प्रदेशगत सेवा क्षेत्र कर्जा**

| प्रदेश | रकम (रु दश लाखमा) | हिस्सा (प्रतिशतमा) |
|---|---|---|
| कोशी प्रदेश | ३७५२०९.६९ | ११.१४ |
| मधेश प्रदेश | २९४३५८.११ | ८.७४ |
| बागमती प्रदेश | १८७००२७.४७ | ५५.५३ |
| गण्डकी प्रदेश | २९०६५५.०४ | ८.६३ |
| लुम्बिनी प्रदेश | ३७७९१८.२८ | ११.२२ |
| कर्णाली प्रदेश | ४९५५५.६२ | १.४७ |
| सुदूरपश्चिम प्रदेश | १०९८६१.२१ | ३.२६ |
| **कुल** | **३३६७५८५.४१** | **१००.००** |

*स्रोत: बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरु*

## ५.५ यातायात

२०८० पुस मसान्तको तुलनामा २०८१ पुस मसान्तसम्ममा दर्ता भएका कुल सवारी साधनको संख्या ७.७८ प्रतिशतले वृद्धि भई १२ लाख ८६ हजार ६ सय ७९ पुगेको छ। अघिल्लो वर्ष यस्तो संख्या २.५२ प्रतिशतले वृद्धि भई ११ लाख ९३ हजार ७ सय ८२ पुगेको थियो। समीक्षा अवधिमा सबैभन्दा बढी मोटरसाईकल दर्ता भएका छन्।

## ५.६ विपन्न वर्ग कर्जा

२०८१ पुस मसान्तसम्म बैंक तथा वित्तीय संस्थाबाट प्रवाहित विपन्न वर्ग कर्जामा १.०९ प्रतिशतले ह्रास आई रु.३ खर्ब १८ अर्ब ७५ करोड रहेको छ। गत वर्षको सोही अवधिमा यस्तो कर्जा ०.५ प्रतिशतले बढेर रु.३ खर्ब २२ अर्ब २७ करोड पुगेको थियो।

समीक्षा अवधिमा कुल विपन्न वर्ग कर्जामा बागमती प्रदेशमा प्रवाहित कर्जाको हिस्सा सबैभन्दा धेरै ५४.५३ प्रतिशत रहेको छ भने सबैभन्दा कम १.३८ प्रतिशत हिस्सा कर्णाली प्रदेशको रहेको छ। यसैगरी, बागमती प्रदेशमा विपन्न वर्ग कर्जाको वृद्धिदर सबैभन्दा धेरै १४.०६ प्रतिशत रहेको छ भने सुदुरपश्चिम प्रदेशमा उक्त कर्जाको प्रवाहमा सबैभन्दा धेरै २३.३६ प्रतिशतले ह्रास आएको छ।

**५.६: प्रदेशगत विपन्न वर्ग कर्जाको स्थिति (रु.दश लाखमा)**

| प्रदेश | आ.व. २०७९/८० (साउन-पुस) | आ.व. २०८०/८१ (साउन-पुस) | आ.व. २०८१/८२ (साउन-पुस) | वृद्धिदर | | हिस्सा (प्रतिशत) | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | गत अवधि | समीक्षा अवधि | गत अवधि | समीक्षा अवधि |
| कोशी प्रदेश | ४५१८८.३४ | ४७८९३.०६ | ४२७९७.८९ | ५.९९ | -१०.६४ | १४.८६ | १३.४३ |
| मधेश प्रदेश | २८६६५.१८ | ३३०८२.२१ | २७०९२.६१ | १५.४१ | -१८.११ | १०.२७ | ८.५० |
| बागमती प्रदेश | १५४३०५.३६ | १५२३८४.३० | १७३८०९.३३ | -१.२४ | १४.०६ | ४७.२८ | ५४.५३ |
| गण्डकी प्रदेश | ३५९५८.२४ | ३२५५५.०७ | २९७८८.४९ | -९.४६ | -८.५० | १०.१० | ९.३५ |
| लुम्बिनी प्रदेश | ४०२०६.२९ | ४०९६८.०५ | ३२३७७.१९ | १.८९ | -२०.९७ | १२.७१ | १०.१६ |
| कर्णाली प्रदेश | ४९०३.४९ | ४३०३.९६ | ४३९४.३८ | -१२.२३ | २.१० | १.३४ | १.३८ |
| सुदुरपश्चिम प्रदेश | ११४४१.५६ | ११०८८.३३ | ८४९८.२० | -३.०९ | -२३.३६ | ३.४४ | २.६७ |
| **जम्मा** | **३२०६६८.४७** | **३२२२७४.९८** | **३१८७५८.०९** | **०.५०** | **-१.०९** | **१००.००** | **१००.००** |

*स्रोत : बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरु*

## ५.७ सहकारी क्षेत्र

समीक्षा अवधिमा छनोटमा परेका सहकारी संस्थाहरूको कुल पुँजी ९.७८ प्रतिशतले बढेको छ । अघिल्लो वर्षको सोही अवधिमा यस्तो वृद्धिदर ७.३३ प्रतिशत रहेको थियो । समीक्षा अवधिमा उक्त सहकारीहरुको कुल बचत ९.४३ प्रतिशतले बढेको छ भने कुल कर्जा १०.२७ प्रतिशतले घटेको छ । यसैगरी, उक्त सहकारीहरुको सदस्य संख्या ३.५३ प्रतिशतले बढेको छ भने कर्मचारीको संख्या १.७१ प्रतिशतले घटेको छ ।

**तालिका ५.७: नमुना छनोटमा परेका वचत तथा ऋण सहकारी संस्थाको विवरण (रु.दश लाखमा)**

| विवरण | आ.व. २०७९/८० (साउन-पुस) | आ.व. २०८०/८१ (साउन-पुस) | आ.व. २०८१/८२ (साउन-पुस) | वृद्धिदर | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | | | गत अवधि | समीक्षा अवधि |
| कुल पूँजी | २३९७५.०२ | २५७३१.७८ | २८२४८.०० | ७.३३ | ९.७८ |
| कुल बचत | ६४२६७.२४ | ६८१६४.०० | ७४५९०.८४ | ६.०६ | ९.४३ |
| कुल ऋण | ७४७२७.४१ | ७९७८७.८६ | ७१५९०.९० | ६.७७ | -१०.२७ |
| सदस्य संख्या | ९५७८८३ | १०१४११४ | १०४९९५० | ५.८७ | ३.५३ |
| कर्मचारी संख्या | ३७३५ | ३६७८ | ३६१५ | -१.५३ | -१.७१ |
| संस्था संख्या | ३१ | ३० | ४३ | -३.२३ | ४३.३३ |

*स्रोत: अध्ययनमा समेटिएका सहकारी संस्थाहरु ।*

### बक्स २ : मुन्दुम पदमार्ग

आन्तरिक तथा बाह्य पर्यटनलाई आकर्षित गर्ने उदेश्यले कोशी प्रदेशको भोजपुर जिल्लामा अवस्थित मुन्दुम पदमार्गको निर्माण कार्य नेपाल सरकार, संस्कृति, पर्यटन तथा नागरिक उड्डयन मन्त्रालय, पर्यटन, वन तथा वातावरण मन्त्रालय, कोशी प्रदेश सरकार तथा सम्बन्धित स्थानीय सरकार तथा हेलभिटास स्वीस इन्टरकोपरेशन र सोलिमार इन्टरनेशनलको प्राविधिक सहयोगमा निर्माण भईरहेको छ । यो पदमार्ग नेपाल सरकारले पहिचान गरेको १०० वटा नयाँ पर्यटकीय गन्तव्य मध्येको एक हो ।





स्थानीयको आय र रोजगारी वृद्धि गर्दै संस्कृतिको संरक्षणमा योगदान दिने लक्ष्य लिएको यस मुन्दुम पदमार्गको लम्बाई ८८ किलोमिटर रहेको छ । अनुमानित कुल लागत रु.२३ करोड ७६ लाख रहेको यस आयोजनाको चालु आर्थिक वर्ष २०८१/८२ दोस्रो त्रयमाससम्ममा वित्तीय प्रगति ९.१ प्रतिशत भएको छ भने तेस्रो त्रयमासमा भौतिक प्रगति ५० प्रतिशत (वार्षिक लक्ष्यको) रहेको छ । आयोजनाको कार्यान्वयन निकायको रुपमा भोजपुर जिल्लाका सबै स्थानीय तह र उदयपुरको वेलका नगरपालिका तथा सुनसरीको बराहक्षेत्र नगरपालिका गरी जम्मा ११ वटा स्थानीय तहहरू रहेका छन् । यस आयोजनाको करिब ५० प्रतिशत भु-भाग भोजपुर जिल्लाको टेम्केमैयुङ गाउँपालिकामा पर्दछ । चालु आर्थिक वर्षको अन्त्यसम्ममा ४,००० पर्यटकको आगमन रहने लक्ष्य रहेकोमा पुस मसान्तसम्ममा ३,००० पर्यटकले भ्रमण गरेको देखिन्छ । यस आयोजनाबाट ४० जनाले प्रत्यक्ष रोजगारी प्राप्त गरेका छन् ।

*स्रोत : स्थलगत सर्वेक्षण, तस्बिर : Trail-based Tourism Development Project, TTDP*

## ५.८ सेवा क्षेत्रका चुनौती र सम्भावना

### ५.९.१ चुनौती

तुलनात्मकरुपमा बढी उत्पादनशील र रोजगारी सिर्जना हुने क्षेत्रमा वित्तीय स्रोत प्रवाह गर्नु, न्यून ब्याजदरका बावजुद कर्जा प्रवाह अपेक्षित रुपमा बढ्न नसक्नु, उत्पादन तथा व्यावसायिक गतिविधि अपेक्षित रुपमा विस्तार नहुँदा बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरुबाट प्रवाहित कर्जाको असुलीमा समस्या देखिनु सेवा क्षेत्रका चुनौती रहेका छन् । गुणस्तरीय र भरपर्दो यातायात सेवाको विकास गर्नु, पूर्वाधार, शिक्षा, व्यवस्थापन लगायतका क्षेत्रको गुणस्तरमा सुधार ल्याई सार्वजनिक विद्यालय/क्याम्पसलाई निजी सरह प्रतिस्पर्धात्मक बनाउनु चुनौतीपूर्ण रहेको छ । साथै, आन्तरिक तथा बाह्य पर्यटकको आगमनमा वृद्धि गरी बसाइँ अवधि लम्ब्याउनु, डाक्टर, नर्स, ल्याव प्राविधिक लगायतका दक्ष जनशक्तिहरुको बिदेश पलायन हुनु समेत चुनौतीका रुपमा रहेका छन् ।

**तालिका ५.८: सेवा क्षेत्रका प्रदेशगत चुनौतीहरु**

| प्रदेश | सेवा क्षेत्रका चुनौती |
|---|---|
| कोशी प्रदेश | • पर्यटकीय स्थलहरुको प्रवर्द्धन तथा आन्तरिक र बाह्य पर्यटकलाई आकर्षित गरी पर्यटकहरुको बसाई अवधि लम्ब्याउनु ।<br>• ग्रामीण क्षेत्रमा डिजिटल साक्षरताको कमीका कारण ई-गभर्नेन्स र अनलाइन सेवाहरूको पहुँच सबै क्षेत्रमा समानरुपमा पुऱ्याउनु । |
| मधेश प्रदेश | • सहर केन्द्रित सेवा सुविधाहरु जस्तैः स्वास्थ्य संस्था, विद्यालय, बैंक शाखा तथा प्रशासनिक कार्यालयहरुलाई ग्रामीण क्षेत्रमा सहजरुपमा सेवा सुविधाहरु समानरुपमा पुऱ्याउनु ।<br>• मधेश प्रदेशमा सेवारत बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरूको वित्तीय स्रोत तथा साधनलाई उत्पादनमूलक क्षेत्रमा परिचालन गराउनु ।<br>• अव्यवस्थित र द्रुत शहरीकरणलाई रोकी व्यवस्थित र सुन्दर शहरको विकास गर्नु । |
| बागमती प्रदेश | • अन्तर सम्बन्धित निकायहरूको समन्वय गरी ईन्टरनेट, टि.भी., टेलिफोन लगायतका दुरसञ्चार सेवाका केवल (तार) भूमिगत गर्ने वा एकीकृत रुपमा एउटै तारबाट प्रदान गर्न सकिने व्यवस्था गर्नु ।<br>• सूचना प्रविधिको क्षेत्रलाई नियमन गर्न नियमनकारी संस्थाको स्थापना गरी विकृतिमूलक सन्देश र जानकारी नियन्त्रण गर्ने तथा जिवनोपयोगी र प्रविधि एवम् विज्ञानका तथ्य विवरण तथा जानकारी उपलब्ध हुने व्यवस्था मिलाउनु । |
| गण्डकी प्रदेश | • उच्च हिमाली क्षेत्रमा आकस्मिकरुपमा आउने मौसमको प्रतिकुलताबाट पर्यटकलाई तत्काल उद्धार गर्न तथा पर्यटकीय पूर्वाधारको निर्माण गरी पर्यटन आगमनलाई सु-व्यवस्थित बनाउनु ।<br>• पोखरा अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थलबाट पूर्ण क्षमतामा अन्तर्राष्ट्रिय उडानहरु सञ्चालनमा ल्याई क्षेत्रीय विमानस्थलको रुपमा सञ्चालनमा ल्याउनु । |

| प्रदेश | सेवा क्षेत्रका चुनौती |
|---|---|
| लुम्बिनी प्रदेश | • पूर्व-पश्चिम राजमार्ग अन्तर्गतको बुटवल-नारायणगढ सडकखण्डको स्तरोन्नति तोकिएको समयमानै सम्पन्न गरी पूर्णरुपमा सञ्चालनमा ल्याउनु ।<br>• यस क्षेत्रका राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थल, क्रिकेट स्टेडियम तथा सम्मेलन केन्द्रहरुको निर्माण एवम् सञ्चालन पूर्ण क्षमतामा गर्ने । |
| कर्णाली प्रदेश | • भौगोलिक विकटताले शिक्षा, स्वास्थ्य, यातायात, सञ्चार, सडक, विद्युत् लगायतका पूर्वाधारहरुको तिब्र विकास गर्नु ।<br>• पर्याप्त स्वास्थ्य पूर्वाधारहरुको अभाव र दक्ष स्वास्थ्यकर्मीहरुको न्यून उपलब्धताका बीच गुणस्तरीय स्वास्थ्य सेवा प्रदान गर्नु ।<br>• छरिएका वस्ती एवम् भौगोलिक विकटताले अनुभवी शिक्षकहरुमार्फत शिक्षण संस्थाहरुको सञ्चालन तथा व्यवस्थापन गरी गुणस्तरीय शिक्षा प्रदान गर्नु । |
| सुदूरपश्चिम प्रदेश | • विश्वविद्यालय, क्याम्पस र विद्यालयहरुको शैक्षिक गुणस्तर अभिवृद्धि गर्दै प्रदेशमै गुणस्तरीय शिक्षा प्रदान गरी उच्च शिक्षाको लागत घटाउनु ।<br>• उद्योग तथा व्यापार विकास, सीप विकास कार्यक्रम तथा सामाजिक सुरक्षामार्फत रोजगारीका अवसरहरु सिर्जना गरी विदेश पलायन भएका युवा जनशक्तिलाई प्रदेशमानै टिकाईराख्नु । |

### ५.९.२ सम्भावना

वित्तीय चेतना, साक्षरता र समावेशीकरणको स्तर अभिवृद्धि हुँदै गएको, सर्वसाधारणको बैंकिङ पहुँच विस्तार हुँदै गएको, सूचना प्रविधि क्षेत्रमा युवाहरुको आकर्षण र पहुँच राम्रो रहेकोले Application Development, ई-लर्निङ, ई-कन्सल्टेन्सी, ई-लाइब्रेरी लगायतका प्रविधिमैत्री सेवाको विस्तार हुने सम्भावना रहेको छ । नयाँ पर्यटकीय गन्तव्यहरु पहिचान हुँदै गएको, विद्युत् उत्पादनमा वृद्धि हुँदै गएको, होटल तथा लजहरुमा लगानी बढ्दै गएकाले पर्यटन क्षेत्रले गति लिने सम्भावना रहेको छ । भौगोलिक एवम् जैविक विविधता, सांस्कृतिक एवम् प्राकृतिक क्षेत्रहरु, विश्व सम्पदा सूचीमा सूचीकृत सम्पदाहरु, साहसिक पर्यटकीय स्थलहरुको प्रचारप्रसार गरी पर्यटकहरुको आवागमन तथा बसाई अवधि लम्ब्याई विदेशी मुद्रा आयआर्जनको समेत सम्भावना रहेको छ ।

**तालिका ५.९: सेवा क्षेत्रका प्रदेशगत सम्भावनाहरु**

| प्रदेश | सेवा क्षेत्रका सम्भावना |
|---|---|
| कोशी प्रदेश | • कोशी प्रदेश पर्यटन वर्ष २०८२ ले ८२ वटा प्रमुख पर्यटकीय स्थलहरुको पहिचान गरी कोशी प्रदेशको प्राकृतिक, सांस्कृतिक र धार्मिक सम्पदाहरुको प्रवर्द्धन गर्ने कार्यक्रममार्फत आन्तरिक तथा बाह्य पर्यटकको संख्यामा वृद्धि हुने ।<br>• कोशी लगानी सम्मेलन २०२५ बाट प्राप्त रु.१५२.१६ अर्ब बराबरको लगानी प्रतिवद्धतामार्फत पर्यटन, स्वास्थ्य, सूचना प्रवधि लगायतका क्षेत्रहरुको विकास र विस्तारको साथै थप रोजगारी सिर्जना गर्न सकिने । |
| मधेश प्रदेश | • उच्च जनघनत्व रहेकाले स्वास्थ्य, शिक्षा, बैंकिङ्ग, बीमा, सञ्चार जस्ता सेवा क्षेत्रहरुमा लगानी गर्न सकिने । |

| प्रदेश | सेवा क्षेत्रका सम्भावना |
|---|---|
| | • सिम्रौनगढ, गढीमाई, जनकपुर, जलेश्वर र छिन्नमस्ता जस्ता ऐतिहासिक एवम् धार्मिक महत्वका तीर्थस्थलहरू रहेकाले यस प्रदेशमा धार्मिक तथा सांस्कृतिक पर्यटनको विकास गर्न सकिने । |
| बागमती प्रदेश | • देशगत रुपमा भित्रिने पर्यटकको विविधीकरण गरी सोही अनुसारको पर्यटन प्याकेज विकास गर्न सके पर्यटक आगमन संख्या र बसाइ अवधि बढाउन सकिने ।<br>• प्रदेशले समय समयमा लगानी सम्मेलन आयोजना तथा Red Carpet Hosting गरी स्वदेशी तथा विदेशी लगानी भित्र्याउन सकिने ।<br>• IT क्षेत्रमा द्रुत गतिमा भइरहेको डिजिटल रूपान्तरणको परिप्रेक्ष्यमा IT सेवा निर्यात गरी विदेशी मुद्रा आर्जन गर्न सकिने । |
| गण्डकी प्रदेश | • पोखरा अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थललाई पूर्णरुपमा सञ्चालन, पृथ्वी राजमार्ग अर्न्तगत पोखरा-मुग्लिङ खण्डको सडक स्तरोन्नतिको कार्य तथा कालीगण्डकी करिडोर समयमै सम्पन्न गर्न सकेमा यस क्षेत्रको आन्तरिक एवम् बाह्य पर्यटनको आगमनमा वृद्धि हुने ।<br>• यस प्रदेशको सबै स्थानीय तहमा बैंक तथा वित्तीय संस्थाको पहुँच पुग्नुको साथै वित्तीय साक्षरतालाई समेत प्रभावकारी बनाउँदै लगिएकोले धेरैभन्दा धेरै जनसंख्यालाई वित्तीय पहुँचको दायरामा ल्याउन र विद्युतीय कारोवारमा आवद्ध गराउन सकिने । |
| लुम्बिनी प्रदेश | • बाह्य मुलुकबाट लुम्बिनी क्षेत्र भ्रमणमा आएका पर्यटकलाई अन्य पर्यटकीय क्षेत्रहरु जस्तै रामग्राम, तिलौराकोट, कुदान लगायतका पर्यटकीय स्थानहरुमा पर्यटकीय पूर्वाधारको प्रत्याभूति गर्दै आकर्षित गर्न सकेमा पर्यटकको बसाइ अवधि लम्ब्याउन सकिने ।<br>• यस प्रदेशका पहाडी र समथर भू-भाग दुबैलाई जोड्ने पर्याप्त सडक सञ्जाल निर्माण गर्न सके स्थानीय रुपमा उत्पादित वस्तु तथा सेवालाई बजारीकरण गरी आयआर्जनमा टेवा पुऱ्याउन सकिने ।<br>• भैरहवास्थित गौतमबुद्ध अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थललाई पूर्ण क्षमतामा सञ्चालनमा ल्याउन सके भैरहवा, लुम्बिनी, बुटवल, परासी लगायत आसपासका स्थानहरुमा रहेका होटल व्यवसाय तथा अन्य आर्थिक क्षेत्रहरु समेत चलायमान बनाउन सकिने । |
| कर्णाली प्रदेश | • धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक महत्वका पर्यटकीय स्थलको पहिचान, संरक्षण र सम्वर्द्धनमा तिनै तहका सरकारी निकायहरुको ध्यानाकर्षण हुनुका साथै उक्त विषयलाई उच्च प्राथमिकताका साथ नीति तथा कार्यविधिमा सम्बोधन गरिनुले पर्यटनमार्फत समग्र कर्णालीबासीको जीवनस्तरमा सकारात्मक परिवर्तन गर्न सकिने ।<br>• यस प्रदेशको हिमाली तथा उच्च पहाडी जिल्लाहरुमा इन्टरनेटको न्यून पहुँच भएको अवस्थामा इन्टरनेटको विस्तार गर्न सकिने । |

| प्रदेश | सेवा क्षेत्रका सम्भावना |
|---|---|
| | • सुर्खेत विमानस्थललाई स्तरोन्नति गरी डोल्पा, मुगु, हुम्ला, जुम्ला तथा रुकुम पश्चिममा नियमितरुपमा हवाई सेवा सञ्चालन गर्न सकेमा यस क्षेत्रको आर्थिक गतिविधि थप चलायमान बनाउन सकिने । |
| सुदूरपश्चिम प्रदेश | • जनसंख्याको अनुपातमा कर्जा लगानी थोरै मात्र रहेकाले कर्जा लगानीमा वृद्धि गरी आर्थिक गतिविधि तथा रोजगारीका अवसरहरु बढाउन सकिने ।<br>• सुदूरपश्चिमका सातदेवीहरू डिलासैनी, निङ्लासैनी, मेलौली, शैलेश्वरी, बडिमालिका, उग्रतारा र त्रिपुरासुन्दरी लगायतका धार्मिक क्षेत्रहरुलाई धार्मिक पर्यटन हबको रूपमा प्रवर्द्धन गर्न सकिने ।<br>• धनगढी विमानस्थललाई स्तरोन्नति गरी क्षेत्रीय विमानस्थल तथा अन्य जिल्लाहरुमा रहेका विमानस्थलहरुलाई नियमित रुपमा सञ्चालनमा ल्याउन सकेमा आन्तरिक तथा बाह्य पर्यटकको संख्यामा वृद्धि भई आर्थिक तथा सामाजिक विकासमा टेवा पुग्न सक्ने । |

परिच्छेद ६

# पूर्वाधार क्षेत्र

## ६.१ पूर्वाधार स्थिति

पूर्वाधार क्षेत्रअन्तर्गत प्रमुख पूर्वाधारको अवस्था र यससँग सम्बन्धित आयोजनाहरुको प्रगति स्थितिको बारेमा यस परिच्छेदमा विश्लेषण गरिएको छ ।

### सडक

नेपाल सरकार भौतिक पूर्वाधार तथा यातायात मन्त्रालय, सडक विभागको तथ्याङ्क अनुसार आर्थिक वर्ष २०८०/८१ मा हुम्लाको सिमिकोट सडक सञ्जालमा जोडिएसँगै हाल देशका ७७ वटै जिल्लामा यातायात सञ्जालको पहुँच पुगेको छ भने कुल ८० वटा राष्ट्रिय राजमार्ग कायम रहेका छन् । उक्त राजमार्गहरुको कुल लम्बाई १४ हजार ९ सय १३ कि.मि. रहेको छ, जस अन्तर्गत कालोपत्रे स्तरको सडक ७ हजार ८ सय कि.मि. रहेको छ भने ४/६ लेनका कालोपत्रे सडक करिब ४ सय कि.मि. रहेको छ ।

विगत १० वर्षमा सडक विभाग अन्तर्गत ७ हजार ८ सय ४० कि. मि. सडक कालोपत्र, ७ हजार ३ सय ८२ कि. मि. ग्राभेल र ५ हजार ८ सय ७९ कि. मि. नयाँ ट्रयाक निर्माण सम्पन्न भएको र १ हजार ५ सय ६९ पुलहरुको निर्माण सम्पन्न भएको छ (तालिका ६.१) ।

**तालिका ६.१: आ. व. २०७०/७१ देखि २०८०/८१ सम्मको सडक निर्माण विवरण**

| आ. व. | कालोपत्रे (कि.मि.) | ग्राभेल (कि. मि.) | नयाँ ट्रयाक निर्माण (कि. मि.) | आवधिक मर्मत (कि. मि.) | सम्पन्न पुल संख्या |
|---|---|---|---|---|---|
| २०७०/७१ | ५३८ | ६८५ | ११८० | ४२९ | ६० |
| २०७१/७२ | ६०१ | ४०१ | ६४८ | ३५० | ७२ |
| २०७२/७३ | २६४ | ३४५ | ६३९ | - | ६३ |
| २०७३/७४ | ६३० | ९९२ | ८०९ | १९५ | ७२ |
| २०७४/७५ | ९०४ | १३१३ | ९७१ | ३३२ | ८२ |
| २०७५/७६ | ९८८ | १३६३ | ४४० | २३० | २४३ |
| २०७६/७७ | १०८१ | ७५७ | ३६५ | ३६० | २१० |
| २०७७/७८ | ६४० | २३५ | १३७ | २३७ | ६१ |
| २०७८/७९ | ६१८ | ३३५ | २८० | २५० | २८२ |
| २०७९/८० | ८२० | ६२८ | २४३ | ५३८ | २२२ |
| २०८०/८१ | **७५६** | **३२८** | **१६७** | **६५१** | **२०२** |
| **कुल** | **७८४०** | **७३८२** | **५८७९** | **३५७२** | **१५६९** |

*स्रोत: सडक विभाग, भौतिक पूर्वाधार तथा यातायात मन्त्रालय ।*

तालिका ६.२ मा आर्थिक वर्ष २०८१/८२ मा सडक पूर्वाधारतर्फ राखिएको वार्षिक लक्ष्य र सो लक्ष्यको तुलनामा अर्धवार्षिक रुपमा हासिल भएको उपलब्धि देखाइएको छ ।

**तालिका ६.२: सडकतर्फ आ.व.२०८१/८२ को पुस मसान्तसम्मको विवरण**

| विवरण | आ.व.२०८१/८२ को वार्षिक लक्ष्य | अर्धवार्षिक प्रगति | वार्षिक लक्ष्यको तुलनामा प्रगति प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| कालोपत्रे स्तरको सडक, कि.मि. (नयाँ २ लेन) | ८०० | २४६ | ३०.८ |
| कालोपत्रे स्तरको सडक, कि.मि. (२ लेन भन्दा माथि) | १३० | ४६ | ३५.४ |
| माटे सडक, कि.मि. | १५० | ८४ | ५६.० |
| आवधिक मर्मत, कि.मि. | २५० | १३९ | ५५.६ |
| पुल निर्माण, संख्या | १५० | ४१ | २७.३ |

*स्रोत: सडक विभाग, भौतिक पूर्वाधार तथा यातायात मन्त्रालय ।*

सडक विभागका अनुसार २०८१ पुस मसान्तसम्ममा मध्यपहाडी (पुष्पलाल) राजमार्गको कुल लम्बाई १८ सय ७९ कि.मि. मध्ये २०८१ पुस मसान्तसम्म १४ सय ६३ कि.मि. कालोपत्रे सम्पन्न भएको छ । यसैगरी हुलाकी राजमार्गको कुल लम्बाई १ हजार ८ सय ५७ कि.मि मध्ये १ हजार २ सय ९१ कि.मि. कालोपत्रे सम्पन्न भएको छ । त्यसैगरी, नारायणघाट बुटवल सडकको कुल लम्बाई १ सय १३ कि.मि मध्ये २६.४५ कि.मी. ४ लेन र ३०.२४ कि.मि. २ लेन सडक कालोपत्रे सम्पन्न भएको छ ।

## सिँचाई

सिँचाई पूर्वाधार अन्तर्गत राष्ट्रिय गौरवका आयोजनाको रुपमा परिचित बबई सिँचाई आयोजना र रानी जमरा कुलरीया सिँचाई आयोजना आर्थिक वर्ष २०८२/८३ मा सम्पन्न गर्ने लक्ष्य लिइएको छ । २०८१ पुस मसान्तसम्म बबई सिँचाई आयोजनाको भौतिक प्रगति अन्तर्गत ६३.१ कि.मि. मूल नहर र ३२०.१८ कि.मि. शाखा नहर निर्माण तथा ५०० हेक्टर सिञ्चित क्षेत्र विकास तथा विस्तार भएको छ । त्यसैगरी, रानी जमरा कुलरीया सिँचाई आयोजना अन्तर्गत ३ वटा पुल निर्माण, १४ कि.मि. लम्की निर्माण, Desilting basin र Feeder canal निर्माण कार्य सम्पन्न भएको छ ।

आर्थिक वर्ष २०८९/९० मा सम्पन्न गर्ने लक्ष्य लिएको सिक्टा सिँचाई आयोजनाको २०८१ पुस मसान्तसम्म ९८.२५ कि.मि. मूल नहर निर्माण सम्पन्न भएको छ । लुम्बिनी प्रदेशको बाँके जिल्लामा अवस्थित उक्त सिँचाई आयोजना अगैया स्थित राप्ती नदीमा बाँध निर्माणगरी ४२ हजार ७ सय ६६ हेक्टर भूमिमा भरपर्दो सिँचाईको लागि पानी उपलब्ध गराउन यो आयोजना निर्माण गरिएको हो ।

करीब ३३,५२० हेक्टर भू-भागमा सिँचाई सुविधा उपलब्ध गराउने उद्देश्यले कञ्चनपुर जिल्लामा निर्माणाधीन महाकाली सिँचाई आयोजनाको २०८१ पुस मसान्तसम्मको समग्र भौतिक प्रगति अन्तर्गत २८ कि.मि. मूल नहर र १२ कि.मि. शाखा नहर निर्माण तथा २१ कि.मि. तटबन्ध निर्माण कार्य सम्पन्न भएको छ ।

बाँके र बर्दिया जिल्लाको करिब ५१ हजार हेक्टर भूमिमा बाह्रै महिना सिँचाई सुविधा उपलब्ध गराउने र ४६.८ मेगावाट विद्युत् उत्पादन गर्ने उद्देश्यका साथ भेरी बबई डाईभर्सन बहुउद्देश्यीय आयोजना कार्यान्वयनको चरणमा रहेको छ । आ.व. २०८४/८५ मा सम्पन्न गर्ने संशोधित लक्ष्य रहेको यस आयोजनाको हालसम्मको मुख्य भौतिक प्रगति अन्तर्गत पावरहाउस निर्माणस्थलको permanent slope को Excavation कार्य करिब ९० प्रतिशत सम्पन्न भएको छ ।

मध्य तथा पूर्वी तराई भेगको १ लाख २२ हजार हेक्टर भूमिमा बाह्रै महिना सिँचाई सुविधा पुऱ्याउन र २८ मेगावाट विद्युत् उत्पादन गर्ने उद्देश्यले सुनकोशी मरिन डाइभर्सन बहुउद्देश्यीय आयोजना निर्माणाधीन चरणमा रहेको छ । आर्थिक वर्ष २०८५/८६ मा सम्पन्न गर्ने लक्ष्य रहेको यस आयोजनाको २०८१ पुस

मसान्तसम्मको समग्र भौतिक उपलब्धि अन्तर्गत Tunnel Boring Machine (TBM) बाट १३.३ कि.मि. सुरुङ खन्ने काम सम्पन्न भएको छ ।

*स्रोत: राष्ट्रिय योजना आयोग ।*

## जलविद्युत् तथा प्रसारण लाइन

राष्ट्रिय गौरवका आयोजनाहरु मध्ये जलविद्युत् आयोजना अन्तर्गत बुढीगण्डकी जलविद्युत् आयोजना र पश्चिम सेती जलविद्युत् आयोजना रहेका छन् । गोरखा जिल्लामा १२०० मेगावाट विद्युत् उत्पादन गर्ने उद्देश्यले जलाशययुक्त बुढीगण्डकी जलविद्युत् आयोजना निर्माण गर्न लागिएको छ । हाल उक्त आयोजनासँग सम्बन्धित जग्गाको मुआब्जा वितरण कार्य भइरहेको छ । त्यसैगरी, पश्चिम सेती जलविद्युत् आयोजनाको भने हालसम्म मोडालिटी एकिन भएको छैन ।

नेपाल विद्युत् प्राधिकरणको आर्थिक वर्ष २०८०/८१ को वार्षिक प्रतिवेदन अनुसार १३२ के.भी., २२० के.भी., ४०० के.भी.भोल्टेजका निर्माणाधीन प्रसारण लाइनहरुको समग्र लम्बाई २२८१ सर्किट कि.मि. रहेको छ। नुवाकोट र धादिङ जिल्लामा अवस्थित गल्छी-रातामाटे २२० के.भी. प्रसारण लाइन आयोजनाको मुख्य उद्देश्य बिजुली निकासी क्षमता बढाई एकीकृत नेपाल विद्युत् प्रणाली (INPS) को क्षमता र विश्वसनीयतालाई स्तरोन्नति गर्नु हो । यस परियोजना अन्तर्गत ८.५ किलोमिटर चार सर्किट २२० के.भी. प्रसारण लाइन र २४ किलोमिटर लामो डबल सर्किट २२० के.भी. प्रसारण लाइनको निर्माण भइरहेको छ । २०८१ पुस मसान्तसम्म यस आयोजनाको ४.३ प्रतिशत कार्य सम्पन्न भएको छ जस अन्तर्गत गल्छी-रातामाटे खण्डको ठेक्का सम्झौता सम्पन्न भई Design Review कार्य भइरहेको र निर्माण सुपरिवेक्षण परामर्शदाता छनोट सम्पन्न भएको छ ।

भारतसँग विद्युत् आदानप्रदानलाई सहज बनाउन र विद्युत् आपूर्तिको विश्वसनीयता सुधार गर्न लगभग २००० मेगावाट क्षमताको उच्च भोल्टेज क्रस-बोर्डर ट्रान्समिसन लिंक स्थापना गर्न हेटौंडा-ढल्केबर-इनरुवा ४०० के.भी. प्रसारण लाइन निर्माणाधीन चरणमा रहेको छ । २०८१ पुस मसान्तसम्म यस आयोजनाको लगभग ९९ प्रतिशत कार्य सम्पन्न भइसकेको छ जस अन्तर्गत ढल्केबर सबस्टेशन निर्माणको सम्पूर्ण कार्य सम्पन्न भई DLP समेत सम्पन्न भएको र ४०० के.भी. हेटौंडा तथा इनरुवा सबस्टेशन सञ्चालनमा रहेको छ ।

कोशी कोरिडोर २२० के.भी. प्रसारण लाइन तथा सबस्टेशन निर्माण आयोजनाको हालसम्म ७४.२ प्रतिशत कार्य सम्पन्न भइसकेको छ । यस अन्तर्गत ईनरुवा–वसन्तपुर–बानेश्वर–तुम्लिङटार २२० के.भी. प्रसारण लाइन आयोजनाबाट २२० के.भी. मा चार्ज भईरहेको, तुम्लिङटार-बानेश्वर-वसन्तपुर-इनरुवा २२० के.भी. सबस्टेशन सञ्चालनमा आएको, वसन्तपुर-ताप्लेजुङ (ढुंगेसाँघु) २२० के.भी. प्रसारण लाइन सञ्चालनमा आएको र सबस्टेशन सञ्चालनको तयारी हुँदै गरेको, वसन्तपुर-ताप्लेजुङ (ढुंगेसाँघु) २२० के.भी. प्रसारण लाइनको दोस्रो सर्किट लाइन तान्ने कार्य सम्पन्न भई वसन्तपुर सबस्टेशनमा बे एक्सटेन्सन कार्यको सिभिल निर्माण कार्य भइरहेको छ ।

त्यसैगरी, २०८१ पुस मसान्तसम्म सुर्खेत १३२ के.भी. सबस्टेशन आयोजनाको ७४.३ प्रतिशत, बलेफी बाह्रबिसे १३२ के.भी. प्रसारण लाइन आयोजनाको ७२.८ प्रतिशत, कोहलपुर-सुर्खेत-दैलेख १३२ के.भी. प्रसारण लाइन आयोजनाको ४६.८ प्रतिशत, मलेखु १३२ के.भी. सबस्टेशन विस्तार आयोजनाको ८४.७ प्रतिशत, प्रसौनी वीरगञ्ज १३२ के.भी. भूमिगत विद्युत् प्रसारण लाइन आयोजनाको ५४.५ प्रतिशत, हेटौंडा भरतपुर २२० के.भी. प्रसारण लाइन आयोजनाको ९७.६ प्रतिशत, चिलिमे त्रिशुली २२० के.भी. प्रसारण लाइन आयोजनाको ९७.१ प्रतिशत र रातमाटे-रसुवागढी-केरुङ ४०० के.भी. प्रसारण लाइन आयोजनाको ३२.३ प्रतिशत कार्य सम्पन्न भएको छ ।

*स्रोत: नेपाल विद्युत् प्राधिकरण ।*

### निजगढ अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थल

सुरक्षित र भरपर्दो अन्तर्राष्ट्रिय हवाई सेवाको विकास र विस्तार गर्ने लक्ष्य सहित बाराको निजगढमा ४ एफ स्तरको निजगढ अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थलको निर्माण थालिएको छ । राष्ट्रिय गौरवको आयोजनाको रुपमा अघि बढेको यो आयोजना आर्थिक वर्ष २०७१/७२ बाट शुरु भएको छ । यस आयोजनाको कुल लागत रु.१ खर्ब ६५ अर्ब रहेको छ । पहिलो र दोस्रो चरण गरी आर्थिक वर्ष २०८५/८६ सम्ममा विमानस्थलको निर्माण कार्य सम्पन्न गर्ने लक्ष्य रहेको छ । पहिलो चरणमा एउटा रनवे सहितको पूर्वाधार निर्माण गरी १ करोड ५० लाख यात्रु र दोस्रो चरणमा दुईटा रनवे सहित पूर्ण क्षमताको विमानस्थल निर्माण गरी वार्षिक ६ करोड यात्रुलाई सेवा प्रदान गर्ने उद्देश्य रहेको छ । हालसम्मको मुख्य भौतिक प्रगति अन्तर्गत बकैया खोलामा नदी नियन्त्रण कार्य सम्पन्न भएको छ ।

### जयनगर-जनकपुर-कुर्था रेलवे

नेपाल रेल्वे कम्पनी लिमिटेडको व्यवस्थापनमा सञ्चालन हुने गरी जयनगर-जनकपुर-भंगहा रेल्वेको भौतिक पूर्वाधार निर्माणको काम सम्पन्न भई भंगहासम्म सञ्चालनमा आएको छ । हाल भंगहा-जयनगर दैनिक एक पटक र जनकपुर-जयनगर दैनिक तीन पटक सञ्चालन हुने गरेको छ । भारत सरकारको पूर्ण लगानीमा सम्पन्न भएको भौतिक पूर्वाधार निर्माण अन्तर्गत रेल्वेको लिक बिछ्याउने तथा विभिन्न स्टेशनहरूमा प्लेटफर्म बनाउने र रेलको इन्जिन र बग्गी खरिद समेतको कुल लागत रु.८ अर्ब रहेको छ । रेल्वे कम्पनीका अनुसार रेलको यात्रु क्षमता १ हजार ३ सय रहेको छ, जसमा एसी क्याबिनमा ५६ जना र जनरल क्याबिनमा जम्मा १ हजार २ सय ४४ जना यात्रु अट्ने क्षमता रहेको छ ।

महोत्तरीको भंगहाबाट कुर्था, जनकपुर, परवाहा, वैदेही, महिनाथपुर, खजुरी, इनर्वा हुँदै भारतीय सीमास्थित बजार जयनगरसम्म चल्ने यस रेल्वेको लम्बाई ५१.१४ कि.मी. रहेको छ । जनकपुरको कुर्थादेखि महोत्तरीको भंगहासम्म १७ कि.मि. सन् २०२३ को जुलाई १६ देखि सञ्चालनमा आएको हो ।

*स्रोत: नेपाल राष्ट्र बैंक, जनकपुर कार्यालय ।*

## ६.२ पूर्वाधार क्षेत्रका चुनौती र सम्भावना

### ६.२.१ चुनौती

पूर्वाधार निर्माणमा विस्तृत रुपमा पूर्व सम्भाव्यता अध्ययन गरी आयोजनाको लाभ-लागत मूल्यांकन गरी उपयुक्त आयोजना छनोट गर्नु, आयोजनाका लागि स्रोत सुनिश्चित गरी समयमै आयोजना सम्पन्न गर्नुका साथै आयोजनाको अनुगमन, निरिक्षण लगायत नियमित मर्मत सम्भार गर्नु चुनौतीपूर्ण रहेको छ । साथै, सरोकारवाला निकायहरुबीच समन्वय कायम गरी पूर्वाधार विस्तार गर्नु, प्राकृतिक प्रकोपबाट क्षति पुगेका पूर्वाधारहरुको समयमै पुर्ननिर्माण गर्नुका साथै विद्युत् आयोजनाहरुको निर्माण कार्यमा तीव्रता दिनु आदि कार्यहरु समेत चुनौतीपूर्ण रहेका छन् ।

**तालिका ६.३: पूर्वाधार क्षेत्रका प्रदेशगत चुनौतीहरु**

| प्रदेश | पूर्वाधार क्षेत्रका चुनौती |
|---|---|
| कोशी प्रदेश | • पूर्वाधार आयोजना छनोट गर्नु अघि पूर्व सम्भाव्यता अध्ययन, स्रोतको सुनिश्चितता, विभिन्न धार्मिक आस्था, संस्कार, संस्कृती, पर्यावरणको संरक्षण गर्दै स्थानिय बासिन्दाहरुलाई सहमत गराउनु तथा निर्माणधीन आयोजनाहरु समयमै सम्पन्न गर्नु ।<br>• खानेपानी तथा ढलनिकास, सडक विस्तार, सञ्चार तथा विद्युत् विस्तारको कार्यमा सरोकारवाला निकायबीच समन्वय स्थापित गर्नु । |

| प्रदेश | पूर्वाधार क्षेत्रका चुनौती |
|---|---|
| | • आयोजना सम्पन्न भएपश्चात् सोको निरन्तर अनुगमन, रेखदेख र मर्मत सम्भार गर्ने चुस्त दुरुस्त प्रणालीको विकास गरी आवश्यक वित्तीय स्रोत व्यवस्थापन गर्नु । |
| मधेश प्रदेश | • यस प्रदेशमा निर्माणाधीन हुलाकी राजमार्ग, काठमाडौ–निजगढ द्रुतमार्ग, निजगढ अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थल तथा राष्ट्रपति चुरे तराई मधेस संरक्षण कार्यक्रम जस्ता राष्ट्रिय गौरवका आयोजनाहरू विभिन्न सरोकारवाला निकाय तथा क्षेत्रहरूबीच समन्वय कायम गर्दै निर्धारित लागत र समय तालिकाभित्र सम्पन्न गर्नु ।<br>• गजेन्द्र नारायण सिंह औद्योगिक क्षेत्रमा डेरी र केही खाद्य उद्योगहरूबाहेक अन्य ठूला उद्योगहरू सञ्चालनमा नरहेको सन्दर्भमा उक्त औद्योगिक क्षेत्रको व्यवस्थापनमा सुधार ल्याई भएका उद्योगहरुको क्षमता विस्तार गरी थप नयाँ उद्योगहरू सञ्चालन हुने वातावरण तयार पार्नु ।<br>• जयनगर कुर्थासम्म सञ्चालन भईरहेको रेल सेवा सञ्चालनमा सेक्सन वर्कसप निर्माण नभएकोले मर्मतको लागि भारतको भर पर्नुपर्ने, तालिमप्राप्त स्वदेशी चालक तथा स्टेशन मास्टर जस्ता जनशक्तिहरु नभएकोले महँगो भारतीय जनशक्तिमा भर पर्नुपर्ने, नेपालमा Fueling Centre नभएकोले भारतमा सो सेवा लिँदा चर्को सेवा शुल्क तिर्नु पर्ने, Washingfeed (रेल धुने स्थान) को अभाव जस्ता समस्याहरु समाधान गरी सहजरुपमा रेल सेवा सञ्चालन गर्नु । |
| बागमती प्रदेश | • बाढी पहिरोबाट क्षति पुगेका काठमाडौं भित्रिने मुख्य सडकहरु जस्तै बी.पी. राजमार्ग, काठमाडौं-सिस्नेरी-हेटौंडा सडक खण्ड र कान्ति लोकमार्गको स्थायी रुपमा मर्मतसम्भार तथा स्तरोन्नति गर्नु ।<br>• अवैज्ञानिक तवरले खनिएका सडक तथा खोलिएका ट्रयाकले निम्त्याउने सम्भावित दुर्घटना, वातावरणीय जोखिम र मानवीय जिउधनको क्षति हुनु ।<br>• १५.८ कि.मि. लामो सूर्यबिनायक-धुलिखेल सडकखण्डको स्तरोन्नती कार्य भईरहेकाले यस क्षेत्रमा यातायातको आवागमनमा निकै कठिनाई रहेको र यस कार्यबाट धुलिखेल लगायतका पर्यटकीय नगरहरूले पर्यटकीय लाभ लिन समेत नसकिरहेको हुनाले यस आयोजनालाई यथाशिघ्र सम्पन्न गर्नु ।<br>• पूर्वाधार निर्माण तथा विस्तार कार्यमा फितलो अनुगमन प्रणालीका कारण गुणस्तरीय काम हुन नसक्नु । |
| गण्डकी प्रदेश | • प्राकृतिक प्रकोप (बाढी, पहिरो) तथा भौगोलिक विकटताका कारण पूर्वाधार निर्माण कार्य ढिलाई हुनुका साथै अनुमानित लागतको तुलनामा यथार्थ खर्च उल्लेख्यरुपमा बढ्नु ।<br>• जलविद्युत् उत्पादनको लागि पर्याप्त आर्थिक स्रोत तथा लगानीको अभाव रहनु र जग्गा अधिग्रहण तथा वातावरणीय प्रभावसम्बन्धी अध्ययन कार्य चुनौतीपूर्ण रहनु ।<br>• गुणस्तरीय निर्माण सामग्रीका साथै स्थानीय तहको क्षेत्राधिकारमा रहेको नदीजन्य निर्माण सामग्रीको सहज उपलब्धता हुने कार्य चुनौतीपूर्ण रहनु । |
| लुम्बिनी प्रदेश | • शहरी पूर्वाधारहरुको निर्माण तथा विकासमा नवप्रवर्तनमा आधारित प्रविधिलाई आन्तरिकीकरण गर्नु ।<br>• प्राकृतिक प्रकोप एवम् जलवायु परिवर्तनको अनुकूलतालाई समेत ध्यानमा राखी भौतिक पूर्वाधारका संरचना निर्माण गर्नु ।<br>• पूर्वाधार निर्माण सम्बन्धी जग्गा प्राप्तिमा रहेको कानूनी, प्रक्रियागत र व्यावहारिक जटिलता न्यून गर्नु । |
| कर्णाली प्रदेश | • अध्ययन तथा निर्माणका क्रममा रहेका विद्युत् आयोजनाहरुलाई तीव्रता दिनुका साथै, निजी क्षेत्रलाई विद्युत् आयोजनाहरुमा लगानी गर्न आकर्षित गर्नु ।<br>• कठिन भूगोल र सीमित स्रोत साधनका रुपमा परिचित यस प्रदेशमा सुरक्षित, गुणस्तरीय र भरपर्दो सडक पूर्वाधार विकास गरी उत्पादन र रोजगारी वृद्धि गर्नु । |

| प्रदेश | पूर्वाधार क्षेत्रका चुनौती |
|---|---|
| | • निजी क्षेत्रलाई प्रदेशको हवाई सेवा विस्तारमा आकर्षित गर्नुका साथै, प्रदेशका विमान स्थलहरुलाई पूर्ण क्षमतामा सञ्चालन गरी हवाई यातायातलाई सुलभ र सहज यातायातको साधनको रुपमा विकास गर्नु । |
| सुदूर पश्चिम प्रदेश | • प्रदेश गौरवका आयोजनाहरु, रणनीतिक महत्वका पूर्वाधार आयोजना र राष्ट्रिय गौरवका आयोजनाहरु गुणस्तरीय रुपमा समयमा नै सम्पन्न गर्नु ।<br>• बाढी, पहिरो, भू-क्षय जस्ता प्राकृतिक प्रकोपबाट हुनसक्ने क्षतिलाई न्यूनीकरण गर्दै सोबाट पूर्वाधार निर्माणको कार्यमा ढिलासुस्ती हुन नदिनु ।<br>• पूर्वाधार निर्माण सम्बन्धमा भएका कार्यहरुको अभिलेख व्यवस्थापनलाई आधुनिकीकरण गर्दै समानुपातिक तथा समावेशी रुपमा विकास निर्माणका कार्य अगाडी बढाउनु । |

### ६.२.२ सम्भावना

हुम्लाको सिमिकोट सडक सञ्जालमा जोडिएसँगै हाल देशका ७७ वटै जिल्लामा यातायात सञ्जालको पहुँच पुग्नु, राष्ट्रिय गौरवका आयोजनाहरुको निर्माणले गति लिनु, संघीय सरकार, प्रदेश सरकार, स्थानीय निकायहरुले पूर्वाधार निर्माणलाई प्राथमिकता दिनु, सडक विकासको लागि चाहिने निर्माण सामाग्रीहरुको सहज उपलब्धता हुनुले पूर्वाधार निर्माणको सम्भावना रहेको छ । साथै, बैकल्पिक ऊर्जा परियोजनाहरुको सम्भाव्यता बढ्दै जानु, प्राकृतिक ग्याँस र पेट्रोलियम पदार्थको अन्वेषण, प्रशारण लाइनहरुको निर्माण लगायतका कारण पूर्वाधार क्षेत्रमा समेत प्रचुर सम्भावनाहरु रहेका छन् ।

**तालिका ६.४: पूर्वाधार क्षेत्रका प्रदेशगत सम्भावनाहरु**

| प्रदेश | पूर्वाधार क्षेत्रका सम्भावना |
|---|---|
| कोशी प्रदेश | • कोशी कोरिडोर सडक आयोजनाको निर्माणलाई तीव्रता दिई तिब्बतसँग सडक जोड्न सके चीनसँग हुने व्यापार सहज भई आर्थिक गतिविधि बढ्ने र निर्बाध आपूर्ति व्यवस्थामा योगदान गर्न सक्ने ।<br>• यस प्रदेशमा निर्माणाधीन रहेका पुष्पलाल मध्य पहाडी लोकमार्ग, मदन भण्डारी राजमार्ग, पूर्वपश्चिम राजमार्ग, हुलाकी राजमार्ग, कोशी राजमार्ग जस्ता सडक आयोजनाको निर्माण सम्पन्न भएपश्चात् राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय बजारसँग पहुँच सहज भई ग्रामीण क्षेत्रमा आर्थिक क्रियाकलाप बढ्ने तथा स्थानीय उत्पादनहरूको बजारीकरण सहज हुने ।<br>• विराटनगर विमानस्थल स्तरोन्नति कार्य समयमै सम्पन्न गरी सुरक्षित र भरपर्दो हवाई सेवा सञ्चालन गर्न सके यस प्रदेशमा पर्यटकीय गतिविधि बढाउन सकिने । |
| मधेश प्रदेश | • भारतसँगको खुला सिमाना भएकोले सीमापार व्यापार, यातायात, सवारी साधन र पूर्वाधार विस्तार गर्न सकिने ।<br>• मुलुककै सबैभन्दा ठूलो सप्तकोशी नदी मधेश प्रदेशको पूर्वी सीमा हुँदै बग्ने भएकोले सो नदीको उपयुक्त स्थानमा बाँध बाँधी नहर निर्माण गर्न सके मधेश प्रदेशको कृषियोग्य भूमिमा सिँचाई सुविधा उपलब्ध गराउन सकिने ।<br>• यस प्रदेशको समतल भौगोलिक बनावट रहेकोले पूर्वाधार निर्माणको लागि तुलनात्मक हिसाबले कम लागतमा अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थल जस्ता ठूला पूर्वाधारको निर्माण तथा विकास हुन सक्ने । |
| बागमती प्रदेश | • महानगरपालिका, उपमहानगरपालिका, नगरपालिका तथा गाँउपालिकाहरुको कार्ययोजनामा पूर्वाधार विकासलाई प्राथमिकतामा राखिएको हुनाले भौतिक पूर्वाधार निमार्णले गति लिन सक्ने ।<br>• निजी र सरकारी दुवै क्षेत्रलाई सौर्य परियोजनाहरुमा लगानी गर्न आकर्षित गराई सौर्य ऊर्जाको उत्पादन बढाउन सकेमा Run of River (RoR) प्रकारका जलविद्युत् परियोजनाहरुमा नेपालको निर्भरता कम गर्न सकिने । |

| प्रदेश | पूर्वाधार क्षेत्रका सम्भावना |
|---|---|
| | • पूर्वाधार क्षेत्रमा लगानीको स्रोत सुनिश्चित गरी विनियोजित बजेटलाई तोकिएको समयावधि भित्रै परियोजना सम्पन्न गर्न सके उचित प्रतिफल लिन सकिने ।<br>• आयोजना स्थलको छनौट, स्रोत साधनको आवश्यकता, जग्गा अधिग्रहण र मुआव्जा वितरण कार्य गर्ने विषय विज्ञ, सम्बन्धित मन्त्रालयका प्राविधिक पदाधिकारी, स्थानीय जनप्रतिनिधि र आयोजना प्रभावित समेतको सहभागिता रहने गरी संयन्त्र |
| | • खडा गर्न सकिने र स्थानीय स्तरबाट हुने अवरोधलाई सहभागितामूलक बनाई पूर्वाधार निर्माण कार्यलाई तिव्र गति दिन सकिने । |
| गण्डकी प्रदेश | • मुस्ताङ जिल्लामा सौर्य तथा वायु ऊर्जाको प्रचुर सम्भावना भएकोले सोको विस्तृत अध्ययन गरी सौर्य तथा वायु ऊर्जा उत्पादन गर्न सकिने ।<br>• पृथ्वी राजमार्गको मुग्लिङ्ग-पोखरा खण्डलाई ४ लेनमा स्तरोन्नति गर्न एशियाली विकास बैंकसँग ऋण सम्झौता भई निर्माण कार्य प्रारम्भ भइसकेको सन्दर्भमा उक्त कार्य सम्पन्न भएपछि यस क्षेत्रको समग्र विकासमा थप सहयोग पुग्ने ।<br>• यस प्रदेशमा हाल १२०० मेगावाट बुढीगण्डकी जलविद्युत् आयोजनासहित ३००० मेगावाट भन्दा धेरै क्षमताका आयोजना निर्माणाधीन अवस्थामा रहेको परिप्रेक्ष्यमा अन्तरदेशीय प्रसारण लाइनको निर्माण हुनु तथा नेपाल सरकार र भारत सरकार तथा बंगलादेश सरकारबीच नेपालबाट विद्युत् निर्यात गर्ने समझदारी हुनुले जलविद्युत् क्षेत्रको विस्तारमा थप सहयोग पुग्ने । |
| लुम्बिनी प्रदेश | • लुम्बिनीमा पर्यटन प्रवर्द्धन गर्न रेल सेवा विकासका लागि नेपाल सरकार तथा लगानी बोर्डसँग समन्वय गरेर विदेशी लगानीकर्तामार्फत रेल सेवा विकास गर्न सकिने ।<br>• यस प्रदेशमा प्रशस्त मात्रामा रहेका नदीनालाहरुबाट सडक विकासको लागि चाहिने निर्माण सामाग्रीहरुको सहज उपलब्धता कारण गुणस्तरीय सडक सञ्जालको विकास तथा विस्तार गर्न सकिने ।<br>• स्थानीय पूर्वाधार विकासमा स्थानीय तहको अगुवाई बढेकाले योजनाबद्ध रुपमा पूर्वाधार विकास गर्न सकिने । |
| कर्णाली प्रदेश | • दैलेख जिल्लामा प्राकृतिक ग्याँस र पेट्रोलियम पदार्थको अन्वेषण कार्यपश्चात् मिथेन ग्याँसको भण्डारण रहेको पुष्टी भएको परिप्रेक्ष्यमा सो ग्याँसको व्यवस्थित रुपमा उत्खनन तथा व्यावसायिक उत्पादन गरी इन्धन उत्पादनमा आत्मनिर्भर भई आयात प्रतिस्थापन गर्न सकिने ।<br>• भेरी करिडोर, कर्णाली करिडोर र कर्णाली राजमार्गको गुणस्तरीय निर्माण तथा स्तरोन्नति कार्य समयमै सम्पन्न गर्न सकेमा शे-फोक्सुण्डो ताल र रारा ताल घुम्न जाने पर्यटक तथा लिमी हुँदै कैलाश मानसरोवर दर्शनका लागि जाने पर्यटकहरुलाई आकर्षित गर्न सकिने ।<br>• सुर्खेत विमानस्थलबाट कर्णाली प्रदेशका हवाई उडान हुने सबै जिल्लामा हवाई सेवालाई नियमित, सुलभ, सहज र भरपर्दो बनाउन सकेमा पर्यटन क्षेत्र थप विकास तथा विस्तार हुने । |
| सुदूरपश्चिम प्रदेश | • राष्ट्रिय गौरव तथा प्रदेश गौरवका आयोजनाहरु तोकिएको समय सीमा भित्र सम्पन्न गर्न सके पूर्वाधार र यातायातको सुविधामा सहज पहुँच हुनुका साथै, स्थानीय उत्पादनलाई बजारीकरण गर्न समेत सहज भई आर्थिक क्षेत्र थप चलायमान बनाउन सकिने ।<br>• प्रदेश सरकारले प्रत्येक जिल्लामा एउटा महत्वपूर्ण सडक योजनालाई प्रदेश गौरवका आयोजनाका रुपमा छनोटगरी निर्माण कार्य अगाडि बढाइएकाले ग्रामीण तथा पहाडी भेगमा सडक पूर्वाधार तयार भई रोजगारी एवम् व्यापार वृद्धिमा समेत सकारात्मक प्रभाव पर्न जाने । |

# परिच्छेद ७

# बाह्य क्षेत्र र रोजगारी

## ७.१ वैदेशिक व्यापार

आर्थिक वर्ष २०८१/८२ को पुस मसान्तसम्ममा कुल वस्तु निर्यात ३१.८० प्रतिशतले वृद्धि भई रु.९८ अर्ब ७९ करोड पुगेको छ। अघिल्लो वर्षको सोही अवधिमा यस्तो निर्यातमा ७.२० प्रतिशतले कमी आएको थियो। गन्तव्यका आधारमा भारत तर्फ हुने निर्यातमा ४६.१० प्रतिशतले वृद्धि भएको छ भने चीन तथा अन्य मुलुक तर्फको निर्यातमा क्रमशः १९.७० प्रतिशत र १.०० प्रतिशतले वृद्धि भएको छ।

आर्थिक वर्ष २०८१/८२ को पुस मसान्तसम्ममा कुल वस्तु आयात ७.१० प्रतिशतले वृद्धि भई रु. ८२२ अर्ब ३७ करोड पुगेको छ (तालिका ७.१)। अघिल्लो वर्षको सोही अवधिमा यस्तो आयातमा ३.१० प्रतिशतले कमी आएको थियो। वस्तु आयात गरिने आधारमा भारत, चीन र अन्य मुलकबाट भएको आयात क्रमशः ५.९० प्रतिशत, ८.९० प्रतिशत र ९.०० प्रतिशतले वृद्धि भएको छ।

**तालिका ७.१: आर्थिक वर्ष २०८१/८२ को प्रथम छ महिनाको नेपालको आयात निर्यात स्थिति**

| निर्यात | | | आयात | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **देश** | **रु. अर्बमा** | **प्रतिशत** | **देश** | **रु. अर्बमा** | **प्रतिशत** |
| भारत | ७३.७१ | ७४.६१ | भारत | ५०२.८५ | ६१.१५ |
| अमेरिका | ८.६४ | ८.७४ | चीन | १६०.५४ | १९.५२ |
| जर्मनी | २.१९ | २.२१ | अर्जेन्टिना | २२.६३ | २.७५ |
| बेलायत | १.६६ | १.६८ | युक्रेन | १३.०३ | १.५८ |
| चीन | १.९२ | १.९५ | अमेरिका | १२.२४ | १.४९ |
| युएई | १.०३ | १.०४ | युएई | १०.६६ | १.३० |
| फ्रान्स | ०.९६ | ०.९७ | अस्ट्रेलिया | ९.४५ | १.१५ |
| जापान | ०.९५ | ०.९६ | थाइल्याण्ड | ७.६३ | ०.९३ |
| अस्ट्रेलिया | ०.८५ | ०.८६ | इन्डोनेसिया | ७.५४ | ०.९२ |
| अन्य | ६.८९ | ६.९७ | अन्य | ७५.८१ | ९.२२ |
| **कुल** | **९८.७९** | **१००.००** | **कुल** | **८२२.३७** | **१००.००** |

*स्रोतः भन्सार विभाग, २०८१।*

आर्थिक वर्ष २०८१/८२ को प्रथम छ महिनासम्म कुल वस्तु व्यापार घाटा ४.४० प्रतिशतले बढेर रु.७ खर्ब २३ अर्ब ५८ करोड कायम भएको छ। अघिल्लो वर्षको सोही अवधिमा यस्तो घाटा २.६० प्रतिशतले घटेको थियो। समीक्षा अवधिमा निर्यात-आयात अनुपात १२.०१ प्रतिशत पुगेको छ। अघिल्लो वर्षको सोही अवधिमा यस्तो अनुपात ९.७६ प्रतिशत रहेको थियो।

भन्सार बिन्दुको आधारमा विश्लेषण गर्दा आर्थिक वर्ष २०८१/८२ को प्रथम छ महिनासम्म मधेश प्रदेशमा रहेका भन्सार कार्यालयबाट सबैभन्दा बढी वस्तु आयात भएको छ भने गण्डकी प्रदेशमा रहेका भन्सार कार्यालयबाट सबैभन्दा कम वस्तु आयात भएको छ। यसैगरी, कोशी प्रदेशमा रहेका भन्सार कार्यालयबाट सबैभन्दा बढी निर्यात भएको छ भने सुदूरपश्चिम प्रदेशमा रहेका भन्सार कार्यालयबाट सबैभन्दा कम निर्यात भएको छ। गण्डकी र कर्णाली प्रदेशस्थित भन्सार बिन्दुबाट नगन्य मात्रामा वैदेशिक व्यापार भएको छ (तालिका ७.२)।

**तालिका ७.२: आर्थिक वर्ष २०८१/८२ को प्रथम छ महिनाको भन्सार विन्दुको आधारमा वैदेशिक व्यापारको प्रदेशगत स्थिति**

| प्रदेश | प्रमुख भन्सार विन्दुहरु | आयात (रु. अर्बमा) | निर्यात (रु. अर्बमा) |
|---|---|---|---|
| कोशी प्रदेश | भद्रपुर, विराटनगर, मेची, सुनसरी, पशुपतिनगर | ११३.६२ | ३६.३५ |
| मधेश प्रदेश | वीरगञ्ज, सुखा बन्दरगाह, गौर, जलेश्वर, जनकपुर, राजविराज, सर्लाही, सिराहा, ठाँडी | ३८८.७८ | ३२.९८ |
| बागमती प्रदेश | रसुवा, तातोपानी, त्रिभुवन विमानस्थल, चोभार | १३५.११ | १९.०३ |
| गण्डकी प्रदेश | पोखरा, त्रिवेणी | ०.०००४ | - |
| लुम्बिनी प्रदेश | भैरहवा, कृष्णनगर, नेपालगञ्ज, महेशपुर, सुठौली, गौतमबुद्ध अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थल | १७२.६० | ९.९८ |
| सुदूर पश्चिम प्रदेश | कैलाली, कञ्चनपुर, सत्ती | १२.२६ | ०.४५ |
| **जम्मा** | | ८२२.३७ | ९८.७९ |

*स्रोत : भन्सार विभाग, २०८१*

आर्थिक वर्ष २०८१/८२ को पहिलो छ महिनासम्ममा आयात गरिएका मुख्य वस्तुहरुमा पेट्रोलियम पदार्थ, सवारी साधन तथा पाटपुर्जा, मेसिनरी उपकरण तथा पाटपुर्जा, स्पन्ज आइरन, भटमासको कच्चा तेल, औषधी, तयारी पोशाक, सञ्चार उपकरण, धान/चामल, फलामका पाता, विद्युतीय उपकरण, कपडा, रासायनिक मल, खाने तेल, कोइला, विद्युतीय सामान, केमिकल, तरकारी, सुन आदि रहेका छन् । समीक्षा अवधिमा निर्यात गरिएका मुख्य वस्तुहरुमा भटमासको तेल, पोलिस्टर धागो, ऊनी गलैँचा, अलैँची, जस्ता पाता, पार्टिकल बोर्ड, जुस, जुटका सामान, चिया, तयारी पोशाक, पिना, पश्मिना, कपडा, पाम तेल, आयुर्वेदिक औषधी, चाउचाउ, रोजिन, जुत्ता/चप्पल, जडीबुटी आदि रहेका छन् (तालिका ७.३) ।

समग्र देशको निर्यातमा चिया, अलैँची, अदुवा, जडीबुटी, पश्मिना, धागो, तयारी पोशाक, छाला, जुत्ता, गलैँचा, जुस, दाल, सुन-चाँदीका गहना, चाउचाउ, तयारी पोशाक, मह, कफी तथा जलविद्युत् जस्ता तुलनात्मक तथा प्रतिस्पर्धात्मक लाभका वस्तुहरु रहेका छन् । पछिल्लो समयमा पर्यटन क्षेत्र र सूचना प्रविधि क्षेत्रका दक्ष तथा अर्धदक्ष जनशक्तिहरु पनि प्रतिस्पर्धात्मक लाभका क्षेत्र रहेका छन् । प्रदेशगत आधारमा निर्यात सम्भावना भएका वस्तुहरुलाई तालिका ७.३ मा प्रस्तुत गरिएको छ ।

**तालिका ७.३: प्रदेशगत आधारमा निर्यात सम्भावना भएका वस्तुहरु**

| प्रदेश | वस्तु |
|---|---|
| कोशी प्रदेश | अलैंची, चिया, अदुवा, रुद्राक्ष, धागो । |
| मधेश प्रदेश | माछा, आँप, छाला । |
| बागमती प्रदेश | ऊनी गलैंचा, पश्मिना शल, तयारी पोशाक, जुत्ता, हस्तकला । |
| गण्डकी प्रदेश | मकै, गहुँ, चामल, कोदो, फापर, जौ, अदुवा, कफी, अलैंची, सुन्तला, स्याउ, जडीबुटी, जलविद्युत्, ऊन । |
| लुम्बिनी प्रदेश | रोजिन र रोजिन एसिड, पोलिष्टर यार्न, कफी, अदुवा । |
| कर्णाली प्रदेश | मकै, गहुँ, आलु, स्याउ, ऊन, अदुवा, जडिबुटी । |
| सुदूर पश्चिम प्रदेश | तरकारी, जैतुनको तेल, जडीबुटी, टर्पेन्टाइन तेल, रोजिन र रोजिन तेल, फलफुल, दुग्धजन्य पदार्थ, जलविद्युत् । |

*स्रोत : व्यापार तथा निकासी प्रवर्द्धन केन्द्र, २०७५*

## ७.२ रोजगारी

### प्रधानमन्त्री रोजगार कार्यक्रम

प्रधानमन्त्री रोजगार कार्यक्रम अन्तर्गत आर्थिक वर्ष २०८१/८२ को पुस मसान्तसम्ममा ७ लाख ९७ हजार ७ सय २५ जना रोजगारको लागि सूचीकृत भएका छन् । यसमध्ये ३ लाख ४८ हजार ३ सय २७ जना पुरुष, ४ लाख ४९ हजार ३ सय ८७ जना महिला र ११ जना अन्य रहेका छन् । सूचीकृत बेरोजगार मध्ये १ हजार १ सय २० जनाले मात्र रोजगारी पाएका छन् (तालिका ७.५) ।

**तालिका ७.४: २०८१ पुस मसान्तसम्मको प्रधानमन्त्री रोजगार कार्यक्रमसम्बन्धी विवरण**

| प्रदेश | सूचीकृत बेरोजगार | | | | रोजगारीमा खटिएका संख्या | जम्मा रोजगारी दिन | आयोजना संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | पुरुष | महिला | अन्य | जम्मा | | | |
| कोशी प्रदेश | ५७,५९३ | ४९,०२० | २ | १,०६,६१५ | ३०५ | २०३५३ | ४८८ |
| मधेश प्रदेश | ४३,६०५ | ६२,४३० | ३ | १,०६,०३८ | १२२ | ७९७२ | ११९ |
| बागमती प्रदेश | ४२,९१८ | ४८,९३१ | ० | ९१,८४९ | २२८ | १४४२५ | ४७२ |
| गण्डकी प्रदेश | ३२,२६५ | २९,५४९ | ० | ६१,८१४ | १८७ | ८८९९ | ४६५ |
| लुम्बिनी प्रदेश | २७,२३५ | ५५,८८५ | ० | ८३,१२० | १०० | ४५७६ | ४४६ |
| कर्णाली प्रदेश | ९३,६२९ | १,१४,७२१ | ३ | २,०८,३५३ | १४१ | १३२३६ | ४०९ |
| सुदूरपश्चिम प्रदेश | ५१,०८२ | ८८,८५१ | ३ | १,३९,९३६ | ३७ | ३७०० | ४७१ |
| **जम्मा** | **३,४८,३२७** | **४,४९,३८७** | **११** | **७,९७,७२५** | **११२०** | **७३१६१** | **२८७०** |

*स्रोत : प्रधानमन्त्री रोजगार कार्यक्रम, २०८१ ।*

प्रदेशगत रुपमा तुलना गर्दा कर्णाली प्रदेशबाट सबैभन्दा बढी २ लाख ८ हजार ३ सय ५३ जना बेरोजगार व्यक्तिहरु सूचीकृत भएको देखिन्छ भने गण्डकी प्रदेशबाट सबैभन्दा कम ६१ हजार ८ सय १४ जना बेरोजगार व्यक्तिहरु रोजगारीको लागि आवेदन दिई सूचीकृत भएको देखिन्छ । सूचीकृत बेरोजगारमध्ये १ हजार १ सय २० जनाले रोजगारी पाएका छन् ।

### वैदेशिक रोजगारी

वैदेशिक रोजगार विभागबाट आर्थिक वर्ष २०८०/८१ को प्रथम छ महिनामा नयाँ एवम् पुनःश्रम स्वीकृति गरी जारी गरिएको कुल ३ लाख ९३ हजार ६७ श्रम स्वीकृतिमध्ये मधेश प्रदेशको सबैभन्दा बढी ८८ हजार ६ सय ८९ (२२.५६ प्रतिशत) र कर्णाली प्रदेशको सबैभन्दा कम १२ हजार १ सय ९ (३.१ प्रतिशत) रहेका छन् । जिल्लागत रुपमा धनुषा जिल्लामा सबैभन्दा बढी १६ हजार ७ सय ८८ श्रम स्वीकृति जारी गरिएको छ । संस्थागत श्रम स्वीकृति (Recruiting Agency), व्यक्तिगत-नयाँ (Individual-New), व्यक्तिगत-पुनःश्रम स्वीकृति (Individual-ReEntry), जी टु जी G2G, कुल (पुनः श्रम स्वीकृति समेत) (Total with ReEntry) र कुल (पुनः श्रम स्वीकृति बाहेक) (Total without ReEntry) सहितको विवरण तालिका ७.६ मा दिएको छ ।

**तालिका ७.५: आर्थिक वर्ष २०८१/८२ पुस मसान्तसम्ममा जारी श्रम स्वीकृतिको प्रदेशगत विवरण**

| प्रदेश | संस्थागत श्रम स्वीकृति | व्यक्तिगत-नयाँ | व्यक्तिगत-पुनःश्रम स्वीकृति | जी टु जी | कुल (पुनः श्रम स्वीकृति समेत) | कुल (पुनः श्रम स्वीकृति बाहेक) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कोशी | ३४९३५ | १२,३२४ | ३४,९८४ | १,५५१ | ८३,९४८ | ४८,९६४ |
| मधेश | ४२,२३४ | ८०,५९ | ३८,२८९ | १०७ | ८८,६८९ | ५०,४०० |
| बागमती | २५,७६४ | १४,४५८ | २४,४३८ | ९५७ | ६५,६१७ | ४१,१७९ |
| गण्डकी | १६,४७१ | ११,७९७ | २६,४३९ | ७०२ | ५५,४०९ | २८,९७० |
| लुम्बिनी | २६,५७४ | १२,१९९ | ३०,६२९ | ८१० | ७०,२१२ | ३९,५८३ |
| कर्णाली | ६,१०६ | २,१८६ | ३,५६८ | २४९ | १२,१०९ | ८,५४१ |
| सुदूरपश्चिम | ९,०८२ | ३,२८२ | ४,२८१ | ४३८ | १७,०८३ | १२,८०२ |
| **कुल** | **१६१,१६६** | **५२,२४६** | **१६२,६२८** | **४,८१४** | **३९३,०६७** | **२३०,४३९** |

*स्रोत: वैदेशिक रोजगार विभाग, २०८१*

वैदेशिक रोजगार विभागबाट प्राप्त तथ्याङ्कका आधारमा विश्लेषण गर्दा आर्थिक वर्ष २०८१ पुस मसान्तमा प्रमुख गन्तव्यको रुपमा यु.ए.ई (३१.२ प्रतिशत) रहेको छ भने दोस्रो, तेस्रो, चौंथौं र पाँचौ प्रमुख गन्तव्यहरु क्रमश: साउदी अरब (२०.० प्रतिशत), कतार (१८.१ प्रतिशत), कुवेत (७.७ प्रतिशत), र मलेसिया (३.७) प्रतिशत रहेका छन् (तालिका ७.७) ।

**तालिका ७.६: वैदेशिक रोजगारीको लागि प्रमुख गन्तव्यको विवरण**

| देश | २०८० पुस | २०८० पुससम्मको देशगत हिस्सा (प्रतिशतमा) | २०८१ पुस | २०८१ पुससम्मको देशगत हिस्सा (प्रतिशतमा) |
|---|---|---|---|---|
| यु.ए.ई. | ८४,१७६ | २४.७३ | १२२,८२९ | ३१.२५ |
| मलेसिया | ४८,४६४ | १४.२४ | १४,५७२ | ३.७१ |
| साउदी अरब | ६५,५२९ | १९.२५ | ७८,४६८ | १९.९६ |
| कतार | ६६,८०३ | १९.६३ | ७१,१७६ | १८.११ |
| कुवेत | १९,७६१ | ५.८१ | ३०,३४३ | ७.७२ |
| दक्षिण कोरिया* | ७,२२० | २.१२ | ५,९६६ | १.५२ |
| जापान | ६,३७९ | १.८७ | १०,५०३ | २.६७ |
| माल्टा | ३,९३२ | १.१६ | १,८७७ | ०.४८ |
| रोमानिया | ४,३६३ | १.२८ | १३,७९५ | ३.५१ |
| माल्दिभ्स | ३,८३४ | १.१३ | ५,२३६ | १.३३ |
| साइप्रस | २,६७६ | ०.७९ | ३,५९१ | ०.९१ |
| बहराइन | ४,००९ | १.१८ | ५,८०५ | १.४८ |
| ओमन | २,६८८ | ०.७९ | ३,८३० | ०.९७ |
| पोल्याण्ड | १,२३३ | ०.३६ | ४५१ | ०.११ |
| अन्य | १९,२६३ | ५.६६ | २४,६२५ | ६.२६ |
| **कुल** | **३४०,३३०** | **१००.००** | **३९३,०६७** | **१००.००** |

*स्रोत: वैदेशिक रोजगार विभाग, २०८१*
**G2G समेत*

## ७.३ बाह्य क्षेत्र र रोजगारीका सम्बन्धमा रहेका चुनौती र सम्भावना

### ७.३.१ चुनौती

१. आन्तरिक उत्पादन वृद्धि गरी आयात प्रतिस्थापन गर्दै वर्षेनी बढ्दै गइरहेको व्यापार घाटा न्यूनीकरण गर्नु चुनौतीपूर्ण रहेको छ ।

२. पिउने पानी, आयुर्वेदिक औषधी, हस्तकलाका सामग्री, अर्गानिक तरकारी तथा खानीजन्य वस्तुहरूको निर्यात अभिवृद्धि गर्न आवश्यक संरचनागत एवम् पूर्वाधार विकासमा जोड दिनु चुनौतीपूर्ण रहेको छ ।

३. कृषिजन्य वस्तुहरुको निकासी प्रवर्द्धन गर्न प्रयोगशाला, क्वारेन्टाईन, गुणस्तर प्रमाणपत्र, अर्गानिक प्रमाणीकरण जस्ता पूर्वाधारको विकास गर्नुका साथै आयातीत तरकारी, फलफुल, मासु तथा दुग्धजन्य वस्तुको गुणस्तर मापन गरेर मात्र स्वदेशी बजार प्रवेश गराउनु चुनौतीपूर्ण छ ।

४. वैदेशिक रोजगारीमा रहेका नेपालीहरुको हकहित संरक्षण तथा सम्वर्द्धन गर्दै वैदेशिक रोजगारीलाई व्यवस्थित तथा मर्यादित बनाउन विदेशस्थित कुटनीतिक नियोगलाई थप क्रियाशील बनाउनु चुनौतीपूर्ण छ ।

५. म्यानपावर कम्पनीको काम कारवाहीलाई नियमित रुपमा अनुगमन गरी वैदेशिक रोजगारीमा हुने ठगी नियन्त्रण गर्नु, वैदेशिक रोजगारीमा जाने नेपालीहरुको सीप, ज्ञान तथा दक्षता अभिवृद्धि गर्नु चुनौतीपूर्ण छ ।

६. उद्योग सञ्चालनका लागि स्वदेशी श्रमिकको दक्षता अभिवृद्धि गर्दै भारतीय श्रमिकमा परनिर्भरता घटाउन चुनौतीपूर्ण छ ।

७. निजी संघ-संस्थामा कार्यरत श्रमिकहरूको न्यूनतम तलबमान कम्तिमा श्रम ऐनमा उल्लेख भएबमोजिम प्रदान गरी समयानुकूल अद्यावधिक गर्नु चुनौतीपूर्ण छ ।

८. प्रधानमन्त्री रोजगार कार्यक्रम लगायत सरकारद्वारा सञ्चालित अन्य रोजगार कार्यक्रमको प्रभावकारी कार्यान्वयन गर्नु चुनौतीपूर्ण छ ।

९. न्यून तलबका कारण डाक्टर, नर्स, ल्याब प्राविधिक लगायतका जनशक्ति पलायन हुने दर तीव्र रहेकोले समयानुकूल तलबभत्ता निर्धारण गरी जनशक्तिलाई टिकाई राख्नु चुनौतीपूर्ण छ ।

१०. पर्यटन क्षेत्र प्रवर्द्धनमार्फत विदेशी पर्यटक आर्कषित गरी विदेशी मुद्रा आर्जन गर्नु, विप्रेषण आप्रवाह प्रणालीलाई सबल एवं सहज बनाई औपचारिक प्रणालीमार्फत् विप्रेषण भित्र्याउनु, विप्रेषणको उल्लेख्य अंश उत्पादनमूलक क्षेत्रमा परिचालन गरी थप रोजगारी सिर्जना गर्नु चुनौतीपूर्ण रहेको छ ।

११. वैदेशिक व्यापार सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रिय मञ्चमा जनाइएका प्रतिवद्धता अनुरुप स्वीकृत मापदण्ड अनुसारको कानुन तथा कार्यविधिको व्यवस्था गर्नु, भारतसँगको खुला सीमालाई व्यवस्थित गरी औपचारिक व्यापारलाई प्रवर्द्धन गर्नु चुनौतीपूर्ण रहेको छ ।

### ७.३.२ सम्भावना

१. भन्सारमा स्वचालित प्रणाली लागु भएका कार्यालयहरुमा विद्युत्तीय भुक्तानीको सुरुवात गरिएको, भन्सार जाँचपासमा एकद्वार प्रणालीको विकास हुँदै गएको, प्राथमिकता प्राप्त उद्योगहरुलाई निर्यात प्रोत्साहन गर्न नगद अनुदानको व्यवस्था गरिएकोले अन्तर्राष्ट्रिय व्यापार विस्तार हुने सम्भावना रहेको छ ।

२. भारत र बंगलादेशतर्फ विद्युत् निर्यात गर्न सुरु भएको, प्रशारण लाइन तथा जलविद्युत् परियोजनाहरुको निर्माण कार्य तीव्र रुपमा अगाडि बढेको, वैदेशिक लगानीलाई सहज बनाउन एकद्वार प्रणाली लागु गरिएकोले वैदेशिक लगानी थप सुदृढ हुने सम्भावना रहेको छ ।

३. वैदेशिक रोजगारीबाट आएको विप्रेषण आप्रवाहमा औपचारिक माध्यमको प्रयोग बढ्दै गएको, विप्रेषण खातामा थप ब्याजको व्यवस्था गरिएको, गैरआवासीय नेपालीलाई स्वदेशी बैंकमा सहजरुपमा खाता खोल्न सकिने व्यवस्था गरिएको, लगायतका कारणले विप्रेषण आप्रवाहमा वृद्धि हुने देखिन्छ ।

४. निर्माणाधीन जलाशययुक्त जलविद्युत् परियोजनाहरु तोकिएको समयमै सम्पन्न गर्न सके हिँउदको समयमा भारतबाट हुने विद्युत् आयातलाई प्रतिस्थापन गरी विद्युत् निर्यात गर्न सकिने सम्भावना रहेको छ ।

५. उद्योग क्षेत्रमा लगानीयोग्य वातावरण सिर्जना गर्ने, Startup को लागि उद्यम प्रस्ताव धितोमा प्रदान गर्ने सहुलियत कर्जाको प्रभावकारी कार्यान्वयन गर्ने, कृषि तथा पशुपालन क्षेत्रमा आधुनिकीकरण गर्ने, उचित अनुदानको व्यवस्था गर्ने लगायतका कार्य गर्न सकेमा आन्तरिक तथा बाह्य व्यापार विस्तार हुने सम्भावना रहेको छ ।

६. बीमा दावीलाई प्रभावकारी बनाउने र उत्पादित कृषि उपजको लागि उचित बजारको व्यवस्था सुनिश्चित गर्न प्रदेश तथा स्थानीय सरकारले पहल गर्न सके वैदेशिक रोजगारबाट फर्किएका तथा स्वदेशमै उपस्थित बेरोजगार युवा जनशक्तिलाई उत्पादनशील क्षेत्रमा लगाउन सकिने सम्भावना रहेको छ ।

७. वैदेशिक रोजगारबाट फर्केका नेपालीलाई स्वदेशमा लगानी गर्न सहुलियतपूर्ण कर्जाको व्यवस्था र प्रधानमन्त्री रोजगार कार्यक्रमको पुनर्संरचना जस्ता व्यवस्थाको प्रभावकारी कार्यान्वयनले थप रोजगारी सिर्जना हुने सम्भावना रहेको छ ।

८. विकास निर्माणका कार्यहरुमा यथा समयमै तोकिएको पुँजीगत खर्च गर्न सकेमा पुर्वाधारको क्षेत्रमा पनि रोजगार सिर्जना गर्न सकिने सम्भावना रहेको छ ।

९. लगानीयोग्य वातावरण सुधार गर्ने तथा लगानीकर्ताको विश्वास बढाउने उद्देश्यले संघीय र प्रादेशिक सरकारद्वारा सम्पन्न भएका लगानी सम्मेलनका कारण आन्तरिक तथा विदेशी लगानी वृद्धि भई रोजगारी सिर्जना हुने सम्भावना रहेको छ ।

परिच्छेद ८

# संघीय एवम् प्रादेशिक कार्यक्रम तथा योजना

## ८.१ कार्यक्रम तथा परियोजनाको कार्यान्वयन

आर्थिक वर्ष २०८१/८२ मा संघीय सरकारले कुल रु.१८ खर्ब ६० अर्ब बजेट विनियोजन गरेकोमा २०८१ पुस मसान्तसम्ममा रु.६ खर्ब ६७ अर्ब खर्च भएको छ। उक्त रकम कुल विनियोजन रकमको ३५.८९ प्रतिशत हो।

**तालिका ८.१: आर्थिक वर्ष २०८१/८२ को संघीय बजेटको अर्ध-वार्षिक प्रगति विवरण**

| शिर्षक | २०८१/८२ को बजेट रकम (रु.अर्बमा) | पुससम्मको यथार्थ खर्च (रु.अर्बमा) | विनियोजनको तुलनामा खर्च (प्रतिशत) |
|---|---|---|---|
| चालु खर्च | ११४०.६६ | ४५२.०० | ३९.६३ |
| पुँजीगत खर्च | ३५२.३५ | ५६.९३ | १६.१६ |
| वित्तीय व्यवस्था | ३६७.२८ | १५८.६६ | ४३.२० |
| **कुल** | **१८६०.२९** | **६६७.५९** | ३५.८९ |

*स्रोत : अर्थ मन्त्रालय।*

आर्थिक वर्ष २०८१/८२ को पुस मसान्तसम्म संघीय सरकारले कुल रु.६ खर्ब ७२ अर्ब राजस्व सङ्कलन गर्ने लक्ष्य लिएकोमा २०८१ पुस मसान्तसम्ममा रु.५ खर्ब ६७ अर्ब राजस्व सङ्कलन भएको छ। उक्त रकम अनुमानित प्राप्ति रकमको ८४.३३ प्रतिशत हो।

**तालिका ८.२: आर्थिक वर्ष २०८१/८२ को राजस्व सङ्कलनको अर्ध-वार्षिक प्रगति विवरण (रु.अर्बमा)**

| शिर्षक | २०८१/८२ को पुससम्मको प्राप्तिको अनुमान | २०८१/८२ को पुससम्मको सङ्कलन | पुससम्मको यथार्थ राजस्व (प्रतिशत) |
|---|---|---|---|
| कर | ६०२.७० | ४८९.३९ | ८१.२० |
| अन्य राजस्व | ७०.१० | ७०.२० | १००.१४ |
| विविध प्राप्ति | - | ७.७९ | - |
| **कुल** | **६७२.८** | **५६७.४** | **८४.३३** |

*स्रोत : अर्थ मन्त्रालय।*

आर्थिक बर्ष २०८१/८२ कुल प्रादेशिक बजेट रु.२ खर्ब ७८ अर्ब विनियोजन भएकोमा समीक्षा अवधिमा १६.१८ प्रतिशत अर्थात् रु.४५ अर्ब ९ करोड खर्च भएको छ। जसमध्ये चालु खर्च ९.८३ प्रतिशत र पुँजीगत खर्च ६.३५ प्रतिशत भएको छ।

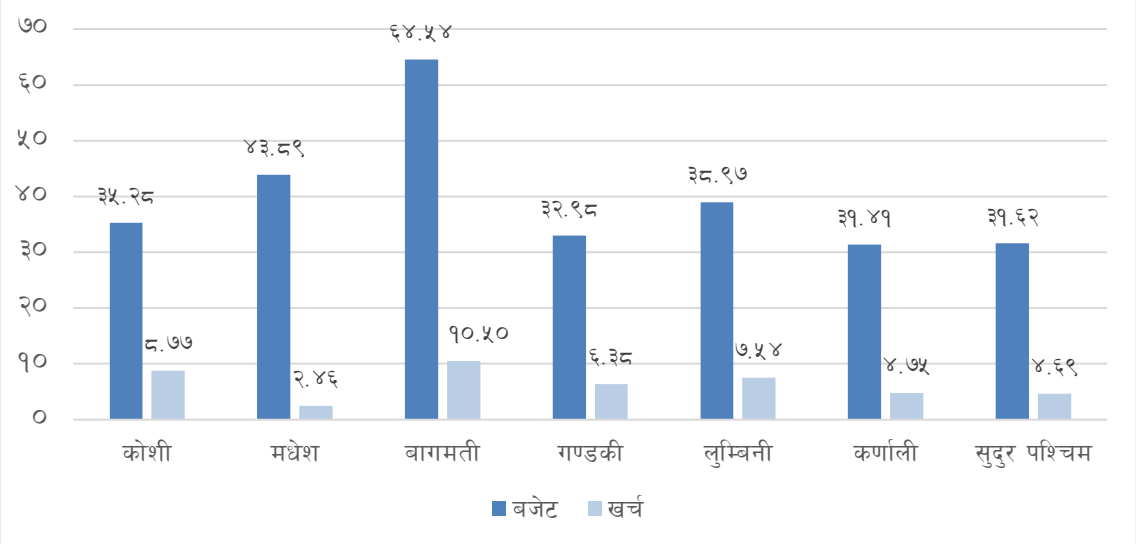
तालिका ८.३: आर्थिक वर्ष २०८१/८२ को प्रदेशगत बजेटको अर्ध-वार्षिक प्रगति विवरण

| प्रदेश | बजेट रकम (रु.अर्बमा) | | | | खर्च रकम (रु.अर्बमा) | | | खर्च (प्रतिशत) | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | कुल | चालु | पुँजीगत | वित्तिय | कुल | चालु | पुँजीगत | कुल | चालु | पुँजीगत |
| कोशी | ३५.२८ | १६.३५ | १६.२० | ०.०२ | ८.७७ | ६.२१ | २.५६ | २४.८५ | १७.६० | ७.२५ |
| मधेश | ४३.८९ | १८.५४ | २७.८९ | ०.०० | २.४६ | २.०९ | ०.३७ | ५.६१ | ५.९३ | ०.८४ |
| बागमती | ६४.५४ | २६.४५ | ३६.९४ | १.५० | १०.५० | ६.६७ | ३.८३ | १६.२७ | १८.९२ | ५.९३ |
| गण्डकी | ३२.९८ | १२.७४ | १९.५२ | ०.३० | ६.३८ | ३.०६ | ३.३२ | १९.३६ | ८.६८ | १०.०७ |
| लुम्बिनी | ३८.९७ | १७२.०९ | २४.५९ | ०.०० | ७.५४ | ३.४४ | ४.०९ | १९.३४ | ९.७६ | १०.५० |
| कर्णाली | ३१.४१ | १३.८० | १८.७५ | ०.२५ | ४.७५ | ३.०९ | १.६७ | १५.१४ | ८.७५ | ५.३१ |
| सुदुर पश्चिम | ३१.६२ | ११.९४ | १८.७६ | ०.०१ | ४.६९ | २.८२ | १.८७ | १४.८२ | ७.९८ | ५.९२ |
| **जम्मा/समग्र** | **२७८.६९** | **२७१.९२** | **१६२.६५** | **२.०८** | **४५.०९** | **२७.३९** | **१७.७१** | **१६.१८** | **९.८३** | **६.३५** |

*स्रोत : महालेखा नियन्त्रक कार्यालय*

आर्थिक वर्ष २०८१/८२ मा सबैभन्दा बढी बागमती प्रदेशमा रु.६४ अर्ब ५४ करोड बजेट विनियोजन भएको थियो भने कर्णाली प्रदेशमा सबैभन्दा कम रु.३१ अर्ब ४१ करोड बजेट विनियोजन भएको थियो । कुल खर्चतर्फ कोशी प्रदेशमा सबैभन्दा बढी कुल विनियोजनको २४.८५ प्रतिशत र मधेश प्रदेशमा सबैभन्दा कम कुल विनियोजनको ५.६१ प्रतिशत खर्च भएको छ ।

चार्ट ८.१ : आर्थिक वर्ष २०८१/८२ को प्रदेशगत बजेटको अर्ध-वार्षिक प्रगति




*स्रोत : महालेखा नियन्त्रक कार्यालय*

## ८.२ प्रदेशगत रुपमा कार्यान्वयन भएका कार्यक्रमहरु

आर्थिक वर्ष २०८१/८२ का लागि प्रदेश सरकारहरुले प्रादेशिक बजेटमा प्रस्ताव गरेका मुख्य-मुख्य नीति तथा कार्यक्रमहरुको विवरण तपसिल बमोजिम रहेका छन् ।

### ८.२.१. कोशी प्रदेश

१. गुणस्तरीय बीउको प्रयोगबाट मात्र खाद्यान्न बालीको उत्पादन र उत्पादकत्व वृद्धि सम्भव भएकोले प्रदेशमा नै गुणस्तरीय बीउ उत्पादन, आपूर्ति र नियमनको कार्यलाई प्रभावकारी रुपमा सञ्चालन गर्दै कोशी प्रदेशलाई धानको बीउको स्रोत केन्द्रको रुपमा विकास गरिने ।

२. प्रदेशको भौगोलिक विविधता अनुरुप विभिन्न रैथाने सीप, प्रविधि तथा कच्चा पदार्थमा आधारित स्थानीय पहिचान भएका अल्लो, ढाका जस्ता वस्तुहरुको प्रवर्द्धन गरिने ।

३. प्रादेशिक सडक सन्जाल गुरुयोजना कार्यान्वयनमा ल्याई गुरुयोजनामा निर्दिष्ट प्रादेशिक लोकमार्ग, प्रादेशिक मार्ग एवम् प्रदेशभित्रका पालिका केन्द्र, धार्मिक सांस्कृतिक तथा पर्यटकीय गन्तव्य स्थल, औद्योगिक क्षेत्र र व्यापारिक केन्द्र जोड्ने सडकलाई विशेष प्राथमिकतामा राख्ने ।

४. स्थानीय तहको फोहोर व्यवस्थापनको लागि दुई वा दुई भन्दा बढी स्थानीय तहको सहकार्यमा रणनैतिक साझेदारी तयार गरी पूर्वाधार निर्माण गर्ने ।

५. तमोर-चिसाङ्ग बहुउद्देश्यीय आयोजना, केचना-सगरमाथा द्रुतमार्ग, चतरा-सगरमाथा करीडोर, विराटनगर एयरपोर्टलाई अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थलमा स्तरोन्नति, चतरा-दूधकोशी जलमार्ग लगायतका रणनीतिक महत्वका आयोजनाहरुको सम्भाव्यता अध्ययनका लागि नेपाल सरकारसँग आवश्यक समन्वय गरिने ।

६. खानेपानी, सिँचाई तथा नदी नियन्त्रण तर्फका निर्माण कार्यहरुको गुणस्तर परीक्षणको प्रयोगशालाको स्थापना तथा सञ्चालन गर्ने ।

७. साना किसान लक्षित "**सुख्खा राहत स्यालो ट्यूबवेल सिँचाई विशेष कार्यक्रम**" मोरङ, सुनसरी, उदयपुर, झापा र इलाम जिल्लामा नमूना योजनाको रुपमा सञ्चालन गरिने ।

८. मेची प्रादेशिक अस्पताललाई उत्कृष्ट सेवा केन्द्र (Center of Excellence) को रुपमा विकास गर्नुका साथै प्रदेश मातहतका पाँचथर, धनकुटा, उदयपुर, संखुवासभा, खोटाङ्ग जिल्ला अस्पतालबाट गुणस्तरीय ICU/NICU सहितको सेवा प्रवाह गर्ने ।

९. **कोशी प्रदेशको विकासको आधार, सवल पर्यटकीय पूर्वाधार** भन्ने मूल मर्मलाई आत्मसात गर्दै संघ, स्थानीय तह र निजी क्षेत्रसँगको सहकार्यमा सञ्चालन गर्ने गरी प्रदेशभित्रका सम्भाव्य पदमार्गहरु (चियाबारी, फाल्गुनन्द, लाली गुराँस र मुन्धुम) निर्माण गरी पदमार्गमा आधारित पर्यटन विकास आयोजना सञ्चालन गरिने ।

१०. **समृद्धिका लागि वन व्यवस्थापन** भन्ने मूल ध्येयका साथ प्रदेशको अधिकार क्षेत्र भित्रका सबै प्रकारका वनको संरक्षण र दिगो व्यवस्थापनमार्फत वन पैदावारको उत्पादन अभिवृद्धि गरी प्रदेशमा काठको आपूर्ति सहज गराउँदै काठको आयातलाई न्यूनिकरण गरिने ।

११. हिमाली तथा उच्च पहाडी क्षेत्रमा बहुमुल्य जडीबुटीको उत्पादन, सङ्कलन तथा प्रशोधन गरी मुल्य अभिवृद्धि गर्ने उद्यमको प्रवर्द्धनमार्फत ग्रामीण क्षेत्रमा रोजगारी सिर्जना र आयआर्जन अभिवृद्धि गर्ने कार्यक्रमलाई निरन्तरता दिने ।

१२. **"व्यवस्थित जलाधार, समृद्धिको आधार"** को मर्मलाई आत्मसात गरी समुदायमा आधारित एकीकृत भू तथा जलाधार संरक्षण कार्यक्रम लगायत बहुउपयोगी भूमिगत जल पुनर्भरण पोखरी निर्माण अभियानलाई निरन्तरता दिने ।

### ८.२.२. मधेश प्रदेश

१. **"कृषिको मुख्य आधार, माटोको स्वास्थ्य सुधार"** भन्ने अभियान सञ्चालन गरी किसानहरुलाई प्राङ्गारिक खेति तर्फ आकर्षित गर्न माटो स्वास्थ्य सुधार र प्राङ्गारिक मल उत्पादन तथा वितरण कार्यक्रम सञ्चालन गरिने ।

२. कृषि विद्युतीकरणलाई प्रदेश गौरवको परियोजनाको रुपमा विकास गर्दै कृषि विद्युतीकरणलाई विस्तार, निःशुल्क कृषि मिटर, सिँचाई प्रयोजनका हरेक निर्वाचन क्षेत्रमा कृषि विद्युतीकरण कार्यक्रम सञ्चालन गरिने ।

३. कृषि प्रसार सेवाको पहुँच बढाउन किसानको वारी स्वयंसेवकको छहारीको सोचलाई सार्थक तुल्याउन प्रदेशभर ५०० महिला कृषि स्वयमसेविका परिचालन गरिने ।

४. कृषि, पशुपन्छी र मत्स्य क्षेत्रहरुको प्रवर्द्धनका लागि एक पालिका एक कृषि उत्कृष्टता केन्द्र (Excellency center) को स्थापना गरी सञ्चालन गरिने ।

५. पशुहरुमा लाग्ने खोरेत रोगको कारणवाट वर्षेनी पशुधनमा क्षति पुग्ने गरेको तथा दूध मासुको गुणस्तरमा समेत प्रत्यक्ष असर पुऱ्याएको हुनाले निश्चित स्थानलाई Zoning र Compartmentalization निर्धारण गरी प्रभावकारी रुपमा कार्यक्रम सञ्चालन गर्दै प्रदेशलाई खोरेत रोग मुक्त क्षेत्र कार्यक्रम सञ्चालन गरिने ।

६. **"चुरे क्षेत्रको संरक्षण तथा व्यवस्थापन र चुरे जोगाउ मधेश बचाउ"** भन्ने नारालाई मूर्तरुप दिन भु तथा जलाधार संरक्षण ऐन तर्जुमा गर्न आवश्यक पहल गर्नुका साथै पानीको उत्पादकत्व अभिवृद्धि गर्न चुरे संरक्षण संवाद कार्यक्रम र शहरी जलाधार व्यवस्थापन कार्यक्रम सञ्चालन गरिने ।

७. श्रम बजार सर्वेक्षणबाट प्राप्त सूचनाको आधारमा प्रदेश भित्र रहेका रोजगारीका अवसरहरु पहिचान गरी रोजगारयोग्य सीपहरुको सूचीकरण गरिने ।

८. प्रदेश भित्र र वाहिर सीपमा आधारित रोजगार प्रवर्द्धनका लागि **"मुख्यमन्त्री रोजगार कार्यक्रम"** प्रभावकारी रुपमा सञ्चालन गरिने ।

९. लघु, घरेलु, साना, मझौला उद्यम व्यवसायमार्फत आन्तरिक स्वरोजगार प्रवर्द्धन गर्नका लागि प्रदेश सरकारले **"मधेश स्टार्टप र नवप्रवर्तन केन्द्र"** का लागि कार्यक्रम सञ्चालन गर्ने ।

१०. विक्रम सम्बत् २०८२ लाई **"घुमौं मधेश बुझौं मधेश"** भन्ने मूल नाराका साथ मनाईने ।

११. सौर्य ऊर्जाबाट सञ्चालन हुने भूमिगत सिँचाई कार्यक्रमलाई नगदेवालीको प्रवर्द्धन गर्नको लागि कार्यक्रम सञ्चालन गरिने ।

१२. विरगंज महानगरपालिका वडा नं १५ अन्तर्गत नारायणी क्रिकेट रंगशालामा अर्न्तराष्ट्रियस्तरको क्रिकेट प्रशिक्षण केन्द्रको स्थापनाको लागि विस्तृत अध्ययन प्रतिवेदन तयार गर्ने ।

१३. मधेश प्रदेश भित्र बसोबास गरेका भुमिहिन, विपन्न, सिमान्तकृत वर्गहरुलाई **"मुख्यमन्त्री आवास सुरक्षा योजना"** मार्फत प्राकृतिक रुपमा हुने विपद जोखिम विरुद्धको कार्यक्रम सञ्चालन गरिने ।

१४. एक निर्वाचन क्षेत्र एक सडक कार्यक्रम अन्तर्गत प्रत्येक निर्वाचन क्षेत्रमा ५-५ किलोमिटरका दरले सडक कालोपत्रे गरी सडक विकासलाई सन्तुलित एवम् योजनावद्ध रुपले निर्माण गरिने ।

१५. मधेश शहिद लोकमार्गलाई स्तरोन्नति गर्न विश्व बैंक, एडिबि लगायतका वैदेशिक साझेदारहरुसँग आवश्यक समन्वय गर्ने ।

१६. संविधान प्रदत्त आधारभुत स्वास्थ्य सेवा प्राप्त गर्ने नागरिकको मौलिक हकको प्रत्याभुत गराउन स्वास्थ्य सेवालाई थप विस्तार गर्न **"मेरो स्वास्थ्य मेरो जिम्मेवारी"** भन्ने नाराका साथ पालिकाहरुको समन्यवयमा मधेश प्रदेशका प्रत्येक जिल्लामा नागरिक आरोग्य सेवा केन्द्र स्थापना तथा सञ्चालनको लागि यथेष्ट रकम व्यवस्था गरिने ।

### ८.२.३. बागमती प्रदेश

१. कृषिमा आधुनिकीकरण, व्यावसायीकरण र कृषि उपजको बजारीकरण गरी समग्र कृषि क्षेत्रको रुपान्तरणको लागि संघीय सरकारको २० वर्षे कृषि विकास रणनीति सापेक्ष प्रदेश कृषि विकास रणनीति तर्जुमा गरी कार्यान्वयन गर्ने ।

२. **"बागमती प्रदेशको अभियानः वडा वडामा उत्पादन"** भन्ने नारा सहित खाद्यान्न, फलफूल, तरकारी तथा पशुपालनमा संलग्न साना किसानहरुलाई व्यावसायिक उत्पादन तर्फ प्रोत्साहित गर्न स्थानीय

तहसँग सहकार्य गरी सहभागितामा आधारित एक वडा एक कृषि उत्पादन कार्यक्रम सञ्चालन गरिने ।

३. नवीन सोच भएका युवा उद्यमीहरुको कृषि तर्फको आकर्षण बढाई नवप्रवर्तनमार्फत कृषि उत्पादन लागत घटाउन र प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता बढाउन ए.आई. जडित कृषि उपक्रमः प्रविधिमैत्री स्मार्ट फर्मको अवधारणा अनुरुप स्मार्ट एग्रिकल्चर कार्यक्रम सुरु गरिने ।

४. **"बागमती प्रदेश सरकारको बाचा, दूध उत्पादन र माछा"** भन्ने नारालाई आत्मसात् गर्दै दूग्ध व्यवसायमा संलग्न किसानहरुलाई उपलब्ध गराउँदै आएको उत्पादनमा आधारित प्रोत्साहन कार्यक्रमलाई सम्बन्धित स्थानीय तहवाट कार्यान्वयन हुने ।

५. रासायनिक मलको अत्याधिक निर्भरतालाई घटाउँदै वैकल्पिक मलको प्रयोगलाई प्रोत्साहन गर्न शुरु गरिएको एक प्रदेश सभा सदस्य निर्वाचन क्षेत्र, एक प्राङ्गारिक मल उत्पादन कारखाना स्थापना कार्यक्रमलाई स्थानीय तह र निजी क्षेत्रको साझेदारीमा थप विस्तार गरी कार्यान्वयन गरिने ।

६. तरकारी, फलफूल तथा माछामासु जस्ता उपजहरुमा किसानले पाउने मूल्य र उपभोक्ताले तिर्ने मूल्यको बीचमा भएको अस्वभाविक अन्तरलाई घटाउन नवप्रवर्तनमा आधारित खाद्य प्रशोधन तथा बजारीकरण स्टार्टअपको प्रवर्द्धन गरी वैकल्पिक आपूर्ति श्रृङ्खला विकास गरिने ।

७. **"पर्यटन र संस्कृतिः राष्ट्रको समुन्नति"** भन्ने मान्यता अनुरुप बागमती प्रदेशलाई आकर्षक पर्यटक गन्तव्यको रुपमा विकास गरी पर्यटकको बसाइ अवधि लम्ब्याउन र प्रति पर्यटक खर्च वृद्धि गर्न पर्यटन पूर्वाधार निर्माण तथा सुधार गर्ने ।

८. अन्तर प्रदेश समन्वयमा जनकपुर, लुम्बिनी, देवघाट र मुक्तिनाथ जोड्ने सांस्कृतिक सम्पदा परिपथ विकास गर्ने । चितवनका सौराह, मेघौली, माडी र सिराइचुली जोडेर पर्यापर्यटन परिपथ, पाटन दरवार क्षेत्र, वसन्तपुर, कीर्तिपुर, भक्तपुर र चाँगुनारायण क्षेत्र जोडेर सम्पदा परिपथ र काठमाडौंको पशुपतिनाथ, डोलेश्वर, दत्तात्रय, सुवर्णेश्वर, अनन्त लिङ्गेश्वर, सन्तानेश्वर, महादेव पोखरी जोडेर शिव परिपथ विकास गर्ने ।

९. **"स्वदेशमै कमाऔं, स्वदेशमै रमाऔं"** भन्ने नारालाई आत्मसात् गरी स्वरोजगारका पर्याप्त अवसरहरु सिर्जना गर्न प्रदेशका सबै निर्वाचन क्षेत्रमा सीप, प्रविधि हस्तान्तरण तथा परामर्श सेवासहितको उद्यमशीलता प्रवर्धन कार्यक्रम सञ्चालन गर्ने ।

१०. विदेशी काठको आयातलाई प्रतिस्थापन गर्न र काठको गुणस्तर तथा आयु वृद्धि गर्न सार्वजनिक-निजी-सामुदायिक साझेदारीमा काठ सिजनिङ्ग तथा ट्रिटमेन्ट प्लान्ट स्थापना गर्ने ।

११. निजी क्षेत्रसँगको सहकार्यमा एकीकृत अटोवर्कशप (अटोल्याण्ड) निर्माण र सवारी साधनको मर्मतका लागि आवश्यक औजारहरु रहने टुल बैंक स्थापना गर्ने कार्यलाई अघि बढाउने ।

१२. क्यान्सर, मुटुरोग, मधुमेह, दीर्घ श्वासप्रश्वास रोग, अब्स्टेट्रिक फिष्टुला लगायतका नसर्ने रोगहरुको पहिचान, परीक्षण, निदान र उपचार गर्न मुख्यमन्त्री जनता स्वास्थ्य कार्यक्रमलाई निरन्तरता दिने ।

१३. **"स्वास्थ्य जीवन तथा स्वअनुशासनका लागि खेलकुद"** भन्ने मान्यतालाई आत्मसात् गर्दै खेलाडीहरुको लागि प्रशिक्षणको उचित व्यवस्था गरी प्रतिभावान् र व्यावसायिक खेलाडीहरुको उत्पादन तथा प्रोत्साहन गर्न आवश्यक रकम विनियोजन गर्ने ।

१४. प्रदेश लोकमार्ग तथा प्रदेश मार्गको निर्माण तथा स्तरोन्नति गर्ने र सडकहरुको सीमा तोक्ने कार्यलाई प्रदेश सडक यातायात गुरुयोजना अन्तर्गत कार्यान्वयन हुने गरी विशेष प्राथमिकता दिने ।

१५. आयोजना बैंक व्यवस्थापन सूचना प्रणालीलाई कार्यान्वयनमा ल्याई प्रदेश सरकारबाट सञ्चालन हुने आयोजना छनोटप्रणालीलाई पारदर्शी र व्यवस्थित बनाउने ।

### ८.२.४. गण्डकी प्रदेश

१. माटो परीक्षण तथा मलको गुणस्तर नियमन सम्बन्धी कार्यक्रमलाई थप सघनता तुल्याउन आगामी आर्थिक वर्षदेखि मोबाइल माटो अस्पताल सञ्चालन गर्ने ।

२. प्रदेशमा दूध, अण्डा तथा माछा उत्पादन वृद्धि गर्दै निर्यात प्रवर्द्धन का लागि **"बृहत्तर पशु विकास प्रवर्द्धन कार्यक्रम र मत्स्य विकास आयोजना"** सञ्चालन गर्ने ।

३. पशुजन्य महामारी रोग नियन्त्रणका लागि **"पशुमा पूर्ण खोप कार्यक्रम"** सञ्चालन गर्न र खोपको प्रभावकारिता विश्लेषण (सेरो-मनिटरिङ्ग) का लागि एलाइजा रिडर (ELISA READER) लगायतका उपकरण खरिदका लागि आवश्यक बजेटको व्यवस्था गर्ने ।

४. पर्यटकीय राजधानी पोखरा र आसपासका स्थानीय तहसँगको सहकार्य तथा सहयोगमा ११ वटा पर्यटकीय स्याटलाइट गन्तव्य Tourism satellite Destination विकासका लागि बजेट व्यवस्था गर्ने ।

५. **"पदमार्गको संरक्षण-पर्यटनको प्रवर्द्धन"** भन्ने अभियानका साथ अन्नपूर्ण, मनास्लु, धौलागिरी, माछापुच्छे, मर्दी लगायतका पदमार्गहरुको संरक्षण, विकास र स्तरोन्नतिको लागि आवश्यक बजेट विनियोजन गर्ने ।

६. **"होमस्टे जाउँ स्थानीय कला संस्कृतिमा रमाऔं"** भन्ने नाराका साथ ग्रामीण पर्यटनलाई उत्पादन र रोजगारीसँग जोडन घरवास (होमस्टे) मा पूर्वाधार निर्माण तथा क्षमता विकास कार्यक्रमका लागि आवश्यक बजेट विनियोजन गर्ने ।

७. **"प्रदेशको उत्पादनः प्रदेशको पहिचान"** अन्तर्गत प्रदेशभित्र उत्पादित वस्तुहरुको प्रदर्शनी र बजारीकरणका लागि कोशेली घरको स्थापना र सञ्चालन गर्न आवश्यक बजेटको व्यवस्था गर्ने ।

८. **"डिजिटल गण्डकी बढाउनु छ रोजगारी र समुन्नति"** नारालाई मूर्त रुप दिनेगरी युवा तथा विद्यार्थीलाई प्रविधिमैत्री र दक्ष बनाउनका लागि प्रविधिमैत्री सिकाई कार्यक्रम र **"फ्राइडे फर फ्यूचर"** कार्यक्रमलाई निरन्तरता दिने ।

९. **"उत्पादनसँग युवा अभियान"** कार्यक्रम सञ्चालन गरी युवालाई उद्यमशीलतातर्फ प्रोत्साहन गर्न सुरुवाती व्यवसाय गर्न चाहाने युवाका लागि सहुलियत पूर्ण व्याजदरमा बीउ पुँजी (Seed money) उपलब्ध गराउने ।

१०. प्रदेश गौरव, प्रदेश लोकमार्ग तथा रणनीतिक महत्वका सडक निर्माण, स्तरोन्नति तथा मर्मतसम्भार कार्यलाई तीव्रता दिने ।

११. **"सदाचारयुक्त गण्डकी प्रदेश"** अभियानलाई सार्थकता दिन भ्रष्टाचारप्रति शुन्य सहनशिलताको नीतिलाई कडाईका साथ लागू गरिने ।

१२. कृषि, पर्यटन र उर्जाका सम्भाव्य क्षेत्रहरुमा आन्तरिक तथा बाह्य लगानी प्रबर्द्धनका लागि इन्भेष्ट गण्डकी कार्यक्रम सञ्चालन गरिने ।

१३. गण्डकी प्रदेश सरकारको वित्तीय प्रणालीका सम्बन्धमा आगामी आर्थिक वर्षमा वित्तीय संघीयतामा गण्डकी प्रदेश सम्मेलन आयोजना गरिने ।

### ८.२.५. लुम्बिनी प्रदेश

१. **"किसानको हातः प्रदेशको साथ"** को नारालाई आत्मसात गर्दै प्रदेश भित्रका सबै जिल्लाहरुमा बाली एवम् वस्तु विशेष सघन व्यावसायिक उत्पादन क्षेत्र विकास कार्यक्रमका लागि बाली र पशुपन्छीतर्फ आवश्यक बजेट व्यवस्था गरिने ।

२. कृषिको प्रमुख आधारको रुपमा रहेको सिँचाईलाई प्राथमिकता दिई साना सिँचाई आयोजनामार्फत थप २५० हेक्टर सिञ्चित क्षेत्र विस्तार गर्दै विभिन्न जिल्लामा निर्माण भएका सिँचाई आयोजनाको कमाण्ड क्षेत्रमा थप १५०० हेक्टरमा वाली सघनता वृद्धि गर्ने कार्यक्रम सञ्चालन गरिने ।

३. **"स्वस्थ जीवनको आधारः माटोमा सुधार"** नाराका साथ माटोमा प्राङ्गारिक पदार्थ वृद्धि गरी दिगो उर्वराशक्ति कायम राख्न माटो व्यवस्थापन कार्यक्रमलाई थप प्रभावकारी बनाउन दीर्घकालीन कार्ययोजना कार्यान्वयनमा ल्याइने ।

४. नसर्ने रोगको बढ्दो प्रकोपलाई कम गर्न **"मेरो स्वास्थ्यः मेरो जिम्मेवारी"** अभियानका साथ स्वस्थकर जीवनशैली प्रवर्द्धन तथा भान्सा सुधार कार्यक्रम समेत सञ्चालन गर्दै नागरिक आरोग्य कार्यक्रमलाई प्रभावकारी रुपमा कार्यान्वयन गर्नका साथै ४० वर्ष माथिका नागरिकको निःशुल्क मधुमेह, रक्तचाप र मृगौलाको परीक्षण, किशोर तथा किशोरीको रक्तअल्पता पहिचान कार्यक्रम सञ्चालन गरिने ।

५. प्रदेश राजधानीमा सुविधा सम्पन्न अस्पतालको पूर्ण संरचना नबन्दासम्म लालमाटिया स्वास्थ्य चौकीको परिसरभित्र भालुवाङ अस्पताल आकस्मिक स्वास्थ्य सेवासहितको बिशेषज्ञ सेवा सञ्चालन गर्न आवश्यक बजेटको व्यवस्था गरिने ।

६. **"शैक्षिक पूर्वाधारमा सुधारः गुणस्तरीय शिक्षाको आधार"** को मान्यता बमोजिम सामुदायिक विद्यालय तथा क्याम्पसको भौतिक तथा प्राविधिक पूर्वाधार विकासलाई प्राथमिकता दिईने ।

७. लक्षित वर्गका विद्यार्थीका लागि दिँदै आएको उच्च शिक्षामा छात्रवृत्ति र छात्राको विज्ञान शिक्षाका लागि दिँदै आएको विज्ञान शिक्षा छात्रवृत्तिलाई निरन्तरता दिने ।

८. **"विज्ञानमा लगानीः समुन्नतिको थालनी"** भन्ने सपनालाई साकार पार्न विशेष अनुदान तर्फ प्रदेशका १२ ठूला विद्यालयहरुमा विज्ञान शिक्षा विकासका लागि पूर्वाधार विकास कार्यक्रमका लागि आवश्यक बजेट व्यवस्था गर्ने ।

९. उद्योग तथा वाणिज्य फर्म दर्ता, नविकरण, खारेजी लगायतका विषयलाई विद्युत्तीय माध्यमबाट सम्पादन गर्न आवश्यक पर्ने विद्युत्तीय प्रणालीको विकास गरिने ।

१०. **"उद्योग तथा वाणिज्य फर्म दर्ता तथा नविकरण बर्ष"** अभियानलाई सफल बनाउन वार्षिक नवीकरण हुन नसकेका त्यस्ता फर्महरुले नविकरण शुल्क र जरिवानाको पाँच प्रतिशत रकम बुझाएमा एक पटकका लागि नविकरण हुनसक्ने र नयाँ उद्योग तथा व्यवसायिक फर्महरु दर्तामा लाग्दै आएको शुल्कमा ५० प्रतिशत छुट हुने ।

११. रोल्पाको रुण्टिगढी (होलेरी), पाल्पाको ख्याहा, दाङ्ग देउखुरीको देवीकोट, अर्घाखाँचीको नरपानी र नवलपरासी (ब.सु.प.) को महलपोखरी क्षेत्रलाई प्रवर्द्धन गर्न हिल स्टेशनको रुपमा विकास गर्ने ।

१२. पर्या-पर्यटन प्रवर्द्धनका लागि **"पर्यटनसँग वन कार्यक्रम"** सञ्चालन गर्ने ।

१३. "लुम्बिनी-ढोरपाटन-दुनै-जुम्लाखलङ्गा-रारा-काँक्रेविहार-कोहलपुर-लुम्बिनी" जोड्ने गरी पर्यटकीय मार्ग बुद्ध परिपथ र त्रिवेणी-देवघाट-रुरुधाम-मुक्तिनाथ-दामोदरकुण्ड समेटिएको धार्मिक मार्गको लागि अन्तरप्रदेश समन्वय गरी सम्भाव्यता अध्ययनको कार्य अघि बढाइने ।

### ८.२.६. कर्णाली प्रदेश

१. **"नवप्रवर्तनकारी प्रेरणा, उद्यमशीलताको जगेर्ना"** भन्ने मूल नारासहित नवप्रवर्तनकारी उद्यमीलाई व्यवसाय प्रारम्भ र सबलीकरणका लागि प्रविधिक सहयोग र क्षमता अभिवृद्धिका लागि उद्यमशीलता एवम् सिप विकास तालिम कार्यक्रम सञ्चालन गरिने ।

२. सिपसँग सहयोग कार्यक्रम सञ्चालन गरी उद्यमशीलता विकास, रोजगारमूलक तालिम र प्रविधि हस्तान्तरणमार्फत उद्यमीहरूलाई उत्प्रेरित एवम् क्षमतावान बनाउन आवश्यक रकम विनियोजन गरिने ।

३. **"स्वच्छ, सफा र हरियाली सहरः कर्णालीको मानक वीरेन्द्रनगर"** भन्ने सोचका साथ संघीय सरकार, स्थानीय तह, निजी क्षेत्र, नागरिक समाज र आमनागरिक समेतको सहयोग र सहभागितामा वीरेन्द्रनगर नगरपालिकाको मुख्य सहरी क्षेत्र तथा नदी किनारामा सहरी हरियाली प्रवर्द्धन गर्न प्रदेश राजधानी हरियाली कार्यक्रम सञ्चालन गर्न आवश्यक बजेटको व्यवस्था गरिने ।

४. **"दिगो वन, समृद्ध जीवन"** भन्ने सोचको कार्यान्वयन गर्न वन पैदावारको सहज र सरल आपूर्ति तथा राजस्व सङ्कलनमा अभिवृद्धि गर्न दिगो वन विकास तथा व्यवस्थापन कार्यक्रम सञ्चालन गरिने ।

५. **"कर्णाली प्रदेशको इच्छाः गरिखाने शिक्षा"** सामुदायिक विद्यालयको पठन-पाठनलाई सहज बनाई गुणस्तरीय शिक्षा सुनिश्चितताका लागि विद्यालयको भौतिक पूर्वाधार विकास तथा शैक्षिकस्तर सुधार गर्ने कार्यलाई प्राथमिकतामा राखिने ।

६. **"कर्णालीको साझा सन्देशः बालविवाह, छाउपडी र छुवाछुतमुक्त प्रदेश"** भन्ने मूल मान्यताका साथ यस्ता विकृतीपूर्ण सामाजिक तथा सांस्कृतिक मान्यताको अन्त्य गर्न प्रदेश प्रमुख सामाजिक सशक्तीकरण कार्यक्रमलाई अभियानको रुपमा सञ्चालन गर्ने व्यवस्था गरिने ।

७. विपद् व्यवस्थापनलाई प्रभावकारी बनाउन एक जिल्ला एक वायर हाउस निर्माण कार्यको लागि आवश्यक व्यवस्था मिलाउने । विपद् प्रतिकार्य, खोज र उद्धार कार्यको लागि विपसँग सम्बन्धित अत्यावश्यक सामग्रीको अभाव नहुने प्रबन्ध गरिने ।

८. **"नदी माथिका गरा, बनाउँछौ हराभरा"** भन्ने मूल ध्येयका साथ कर्णाली, भेरी वेसीन, शारदा लगायतका विभिन्न नदी किनारमा रहेका टारहरूमा लिफ्टिङ्ग प्रणालीको माध्यमबाट सिँचाई सुविधा विस्तार गर्ने ।

९. संघीय सरकारबाट प्रदेशभित्र सञ्चालन हुने ठूला जलविद्युत् आयोजना निर्माणका लागि लगानीकर्ताको पहिचान गरी कार्यान्वयनका लागि संघ सरकारसँग विशेष पहल गरिने ।

१०. सरकारी लगानीबाट सञ्चालन भएका जलविद्युत् आयोजनाहरूमा प्रदेश सरकारबाट पनि शेयर लगानी गरिने ।

११. **"कर्णालीको पानी, कर्णालीवासीको लगानी"** भन्ने सोचका साथ जलविद्युत् आयोजनाहरूमा प्रभावित स्थानीय र प्रदेशवासी जनतालाई शेयर लगानीका लागि पहल र प्रोत्साहन गरिने ।

### ८.२.७. सुदुरपश्चिम प्रदेश

१. बैतडीको दशरथचन्द नगरपालिका, दार्चुलाको महाकाली नगरपालिका, डोटीको दिपायल सिलगढी नगरपालिका र कैलालीको भजनी नगरपालिकामा कोल्ड स्टोर निर्माण सम्पन्न गरी हस्तान्तरण गरिने ।

२. सडकमा छोडिएका पशुको कारण सडक दुर्घटना र शहरी सौन्दर्यमा परेको असर कम गर्न तथा पशु कल्याण प्रवर्द्धनका लागि स्थानीय तहको लागत साझेदारीमा गौशाला निर्माण गरिने ।

३. कैलाली र कञ्चनपुर जिल्लामा सामुदायिक वेवारिसे पशुहरूको आहारा व्यवस्थापनका लागि घाँसमा आधारित पशुपालन गर्न एकवर्षे, बहुवर्षे घाँसको नर्सरी र घाँसेवाली स्रोत केन्द्र स्थापना गर्ने ।

४. कोल्ड स्टोर, दुग्ध तथा माछा मासु चिस्यान केन्द्रहरूको विद्युत् महशुलमा सहुलियत प्रदान गरिने ।

५. प्रदेशका प्रत्येक जिल्लाको औद्योगिक सम्भावनाका आधारमा एक जिल्ला एक उद्योग प्रवर्द्धन कार्यक्रम सञ्चालन गर्ने ।

६. डडेल्धुरा जिल्लामा अल्लो प्रशोधन उद्योग स्थापना गर्ने ।

७. घरेलु तथा साना उद्योगबाट उत्पादित सामाग्री विक्री केन्द्र निर्माण तथा सञ्चालनका लागि आवश्यक बजेट विनियोजन गरिएको ।

८. सुदूरपश्चिम प्रदेशमा रहेका प्रमुख पर्यटकीय क्षेत्रहरू बडिमालिका, खप्तड, रामारोशन, मालिकार्जुन, गोदावारी धाम, शुक्लाफाँटा, शैलेश्वरी मन्दिर, अपि, सैपाल, बेहडाबाबा, अजयमेरूकोट, महाभारत लेक, बडिकेदार, बैद्यनाथ धाम, भम्केनी धाम, घोडाघोडी ताल, उग्रतारा मन्दिर, शुर्मादेवी, टीकापुर पार्क, मेलौली भगवती, त्रिपुरा सुन्दरी, गर्भा दरबार, सिगास धाम, बतासे झरना लगायतका लागि बजेट विनियोजन गरिएको ।

९. प्रदेशको समग्र विकासको लागि मेरूदण्डको रूपमा रहेका रणनीतिक महत्वका खप्तड-मार्तडी, सतबाज-श्रीभावर-हाट, चिसापानी-ऋषिदह-बडिमालिका, दैजी-पोखरा-ढुङ्गाड-बझाङ्ग, खलङ्गा-खार-देथला-पारीबगर- खण्डेश्वरी, दिपायल-साइपाल, सहजपुर-बोकटान-दिपायल, बेलौरी-कलुवापुर-नाइल-बुडर, भजनी-छोटीभन्सार-खेमडी-ठुलीगाड, जयगढ-माष्टाना-रामारोसन र पाटन-पञ्चेश्वर सडक आयोजना निर्माण गर्ने ।

१०. कृषि उत्पादकत्व बढाउन सिँचाई सुविधा नपुगेका कैलाली र कञ्चनपुर जिल्लाका आवश्यक स्थानमा डिप ट्युबेल सिँचाई प्रणालीको विकास गर्न भूमिगत सिँचाई गरिने ।

११. सवारी साधन र चालक अनुमतिपत्र सम्बन्धी अभिलेखको डिजिटाइजेसन र अर्काइभिङ्ग गरिने । यातायात व्यवस्थालाई सूचना प्रविधिमैत्री बनाई चालक अनुमतिपत्र, सवारी साधन दर्ता, नवीकरण र राजस्व भुक्तानी लगायतका सेवाहरू अनलाइन प्रणालीबाट सञ्चालन गरिने ।

१२. आगामी संवत् २०८१ देखि २०९० सम्मको समयलाई दलित अधिकार दशक घोषणा गरी दलितहरूको राजनीतिक, आर्थिक र सामाजिक क्षेत्रको अध्ययन गरी गुरुयोजना तयार गरिने । दलित विकास समिति गठन गरी दलित समुदायको परम्परागत सीप तथा व्यवसायलाई आधुनिकीकरण गर्न टिकाराम पार्की दलित सशक्तीकरण सीप विकास कार्यक्रम सञ्चालन गर्ने ।

# परिच्छेद ९
# आर्थिक परिदृश्य

## ९.१ आर्थिक वृद्धि

आर्थिक वर्ष २०८१/८२ मा आर्थिक वृद्धि ४.६ प्रतिशत हुने राष्ट्रिय तथ्याङ्क कार्यालयको प्रारम्भिक अनुमान रहेको छ । अघिल्लो आर्थिक वर्ष यस्तो वृद्धिदर ३.७ प्रतिशत रहेको थियो । उक्त कार्यालयले यो आर्थिक वर्षको तेस्रो त्रयमासको सार्वजनिक गरेको विवरण अनुसार आर्थिक क्रियाकलाप क्रमशः लयमा फर्कन थालेको देखिएको छ । अघिल्लो वर्ष संकुचनमा रहेका अर्थतन्त्रका सबै क्षेत्रहरु समेत सकारात्मक रहेकोले आगामी अवधिमा अपेक्षा बमोजिम आर्थिक वृद्धि हुने अनुमान रहेको छ ।

## ९.२ मूल्य स्थिति

आर्थिक वर्ष २०८१/८२ को प्रथम छ महिना अवधिमा मुद्रास्फीति न्यून रहेको छ । विश्वव्यापी रुपमा मुद्रास्फीति सुधारोन्मुख रहेको, भारतमा मुद्रास्फीति नियन्त्रणमा रहेको, कच्चा तेलको उत्पादन तथा आपूर्तिमा वृद्धि भए तापनि मागमा आउने ह्रासका कारण कच्चा तेलको मूल्य घट्ने देखिएको लगायतका कारणले आगामी अवधिमा समेत मुद्रास्फीतिमा दवाब नपर्ने अनुमान छ । तथापि, पछिल्लो समय विश्वका ठूला अर्थतन्त्रहरुले लिएका व्यापार नीति, भू-राजनीतिक तनाव तथा व्यापार अवरोधका कारण आपूर्ति पक्षबाट मूल्यमा चाप पर्न सक्ने सम्भावना समेत रहेको छ ।

## ९.३ कृषि उत्पादन

अध्ययन क्षेत्रका कृषि ज्ञान केन्द्रहरू र कृषि मन्त्रालयबाट प्राप्त प्रारम्भिक तथ्याङ्कका आधारमा आर्थिक वर्ष २०८१/८२ मा कृषि उत्पादनमा सामान्य वृद्धि हुने अनुमान गरिएको छ । यो वृद्धि सिञ्चित क्षेत्रफलको वृद्धि, रासायनिक मल, उन्नत जातका बीउ तथा आधुनिक प्रविधिको सहज उपलब्धता र मौसमको अनुकूलताले सम्भव हुने अनुमान रहेको छ । त्यसैगरी, अध्ययन क्षेत्रका भेटेरिनेरी अस्पताल तथा पशु सेवा कार्यालयहरूका अनुसार दूध र मासुको मागमा वृद्धि भएको देखिएको छ । यसका साथै हालका दिनहरुमा युवापुस्ता समेत पशुपालनमा आकर्षित भएको देखिएकोले दूध र मासुको उत्पादन बढ्ने अपेक्षा गरिएको छ । यसले समग्र कृषि तथा पशुपालन क्षेत्रको विकासमा सकारात्मक प्रभाव पार्ने अपेक्षा गरिएको छ ।

## ९.४ औद्योगिक उत्पादन

आर्थिक वर्ष २०८१/८२ मा अघिल्लो वर्ष संकुचन भएका क्षेत्रहरु समेत विस्तार भई औद्योगिक उत्पादन र व्यापार क्षेत्र विस्तार हुने अनुमान छ । विप्रेषण आप्रवाहमा भएको वृद्धि, बैंकिङ प्रणालीमा रहेको पर्याप्त तरलता एवम् न्यून व्याजदर लगायतका कारण निजी क्षेत्रतर्फ हुने कर्जा विस्तार, घरजग्गा कारोवारमा भएको सुधार, पूर्वाधार निर्माणमा भएको विस्तार, निर्माण सामग्रीहरुको मूल्यमा आएको गिरावट आदिका कारणले निर्माण क्षेत्र चलायमान हुने देखिन्छ । साथै, विद्युत् उत्पादनमा भएको वृद्धि तथा आपूर्तिमा आएको सुधार र सरकार तथा यस बैंकको नीतिगत सहजताका कारण उद्योगको क्षमता उपयोगमा वृद्धि भई औद्योगिक उत्पादन थप सकारात्मक हुने अनुमान रहेको छ ।

## ९.५ सेवा क्षेत्र

बैंक तथा वित्तीय संस्थाद्वारा सेवा क्षेत्रमा प्रवाहित कर्जामा भएको बढोत्तरी, न्यून ब्याजदर, विदेशी पर्यटक आगमनमा भएको वृद्धि, आन्तरिक पर्यटन गतिविधिमा भएको वृद्धि, आयातमा भएको वृद्धि तथा घट्दो मुद्रास्फीतिले सेवा क्षेत्र थप विस्तार हुने अनुमान छ । साथै, बढ्दो निक्षेप, न्यून ब्याजदर र कर्जा प्रवाहले सेवा क्षेत्रका उप क्षेत्रहरु जस्तैः पर्यटन, घरजग्गा, उपभोग्य तथा यातायात, भण्डारण र संचार क्षेत्र थप विस्तार हुने अनुमान छ ।

## ९.६ पूर्वाधार क्षेत्र

सरकारले लक्ष्य अनुसारको पुँजीगत खर्च गर्न र राजस्व सङ्कलन गर्न नसकेको कारण राजस्व र खर्चबीच फराकिलो अन्तर भएतापनि विपद्पश्चात्को पुनर्निर्माणले गति लिएको, सुरुङमार्ग निर्माण, सडक विस्तार तथा स्तरोन्नतिको कार्य भईरहेको, राष्ट्रिय तथा प्रदेश गौरवका आयोजनाहरु निर्माण भईरहेको, रन अफ रिभर सँगसँगै जलाशययुक्त जलविद्युत् आयोजनाहरु निर्माणको क्रममा रहेको, विद्युत् प्रशारण लाइन विस्तार हुँदै गएकोले पूर्वाधार क्षेत्र थप विस्तार हुने देखिन्छ ।

## ९.७ बाह्य क्षेत्र

आर्थिक वर्ष २०८१/८२ को पहिलो ६ महिनामा बढ्दो निर्यात र विप्रेषण आप्रवाहको कारण शोधनान्तर वचत उल्लेख्य वृद्धि भई विदेशी विनिमय सञ्चिति सुविधाजनक स्तरमा रहेको छ । यही प्रवृत्तिको निरन्तरताले चालु आर्थिक वर्षको अन्त्यमा समेत विदेशी विनिमय सञ्चिति उल्लेख्य बढने देखिएको छ ।

***